

**尼茨茨美族主义**经英克森族人名英格兰 

मम् ६ क्लाफी खनां है।

ल्यन (महिनी अह।

श्रीमिट्ययंत मान

কৰ্ত্ত্ৰ

গৌড়িয় সাধুভাষায় বিরচিত इहेश।

मुविकालन द्वाराय मन्द्रभाधन

**इ**ह्या ।

मन>२७७ मीन रिक ।

শ্রীরামচন্দ্র মিত্রের জ্ঞানোদয় যত্ত্তে মৃত্যান্ধিত হইল। ৰালাখানার ফ্রিট ১৩নং বাটী।

পৃত্তক যাহার প্রয়োজন হইবে দিনিলার কাঁসারি পাড়ার পূর্বের বড় হাস্তার

পশ্চিমাংশে ৪১ ন॰ বাটীতে পাইরেন।

मृता ( ४०. १

**聚苯羟基苯基苯基基基基基基基** 

# ज्ञिका।

নাট্যরস তত্ত্ত নায়ক নায়িকাভাবত বিজ জন গণের মনোমোহনার্থে এক মনোহর নায়ক নায়িকা নদ্ধাৰ সম্চিত সন্ধাত সহযোগে বিবিধ ছন্দে পণ্যা वनी क्षरास्त्र क्षठनिक माधुकायात्र अहे कृतन लाहिनी नागक भूछरक अवे छि इहेब्रारह हैश পাঠ করিশে সুরসিকের হৃদয়াকাশে এক অভিনয काराहम क्षाराम कहा हिल्लामा कहिरक अहै অভিপ্রায়ে ষীয় সহকারিদিগের **আখাস অ**ব লম্বন করিয়া মুক্রাক্ষিত হইল। হে সাধুজুন মহা শায়ের৷ আমার এই নিবেদন যেমন ক্রীরগ্রাহি ধ্পদেরা সলিলাক্ত দুধ্বের সারভাগ গ্রহণ করে ডজপ অনুগ্ৰহ প্ৰকাশ পূৰ্বক এই গ্ৰন্থের বারি মুক্ত দোষ পানবর্জন করিয়া সারাশশ গ্রহণ कविरयन हेजि।

शिनिष्मभव मान्।

•		
निर्घके	भ ज	以称:
गापण उन्तरा		5
গুৰুত্ব <b>ীবন্দ</b> ন্	K Mark A	<b>,                                    </b>
ভগৰতী বন্দ্ৰ	STATE	0
·		9
এড়ারমু		<b>5</b>
- বনের জন্ম তৃত্তি		22
্ হিনীর জন্ম	T 077761	>8
হরিভাটের রাজ সভাব		-
ভুৰন নিকটে হরিভাট	(म्याङ्भाव गः वः व ए	(M 3/3
্ট্হেনীর কপ ভাট্যু	থে শুনিয়া ভুবনের	
বিলাপ		75
্ৰনের প্রতি পাত্র প্	ুত্রের উত্তর	२२
भोतुः स्थ्य स्टव		39
্যন্তাসীর নিকটে ভুব	নের বর প্রাপ্ত	\$\$
ভূবনের পামনণীর ব		હઝ
श्रीमनीत नगत वामिन	ते फिशरक मण्याप	(म् अन
এব শ্লার বাসিনী	ব বণক নিকটে নি	ञ निज
অভিশ্রায় গণ		8.
ারজ কন্যাকে দেখিব		
,	illy dead of the time	89
উদ্যোগ	res surai	.0.
ভুবনের মোহিনী দশ	। <b>(</b> न वाजा	 دی
ভূবন মোহিনী উভ	द्यु मुगम्	
বসায়ত আগমন		39

নিৰ্ঘ ঐ	পত্র ২কঃ
মে <b>হিনা বসন্তে ত</b> ্সিতা ইইয়া মুদ্	্নের
প্রতি ভর্ণ দন	Ça
গে হিনীর নলিন ৰূপ দেখিয়া স্থাগ	ণ্ <b>ৰ</b>
ভি:জানা	95
স্থীদের প্রতি যোহিনীর উত্তর	90
माहिनीव श्रांक का जिनीव श्रादाध है।	ক্তি ৭৯
कासिनो श्रवि स्थाहिनीय छेखर	<b>b</b> >
द्रांगीव जिक्टी मर्थी एन व गरंग	ं के
ब्याहिनौर मिर्दमन शत जुवत्मन श्री है	\$ \$\$
<u> <!--</td--><td>25</td></u>	25
्याहिनीय बाल (मणिया डाकाएमय मण	न गरन
ভ ভিশ্বায়	24
চোর বিপ্রের ইতিহাস	2.8
चुवरनत विकिश् ३ होरा के लिकात	खव ১०५
রাজার প্রতি কালিকার হপু	<b>&gt;&gt;</b> >
ভূবনের অভঃপুরে প্রবেশ	250
(म) हिनीत मञ्जा	222
जङ्गायुक्त क्रम वर्गमा	25;
বাসর সজ্জা	১২৩
जुरान बर्गाम श्रम छेम्राश धवः	(बान ३२३
डेना पिनीत मिरु जुरानत विलन	> 50
नाय अंदर्श	:83
G ( 1013	

#### भारताम राम्स्या ।

जिलमी इनम् । क्षाभामि निरुच्द, त्व (प्रव लाखापद, বিশের ঠাকুর বিশ্বনয়। कर शिमा श्रीन थन, तम्म श्रे भागनन दिप्रकारी विश्व कर करे।। শ্যু পৰে পথ শোভে অলিকুল মধুলোতে, एक विशा नना करत शान। স্নৰ চপ্পক কলি, জিনি ভায় প্ৰাঞ্জী, क्ति है हे हैं दर्श भाषा छान ॥ ন্যান্তক জিনি উৰু, নিজন্ব তাহে সুচাক, ্নাভি পথ অতি সুগভাঁই। কিব, তায় শোভা পায়, প্রভাতে অব্লবাদয়, বর্ণ হেরি নাহি হয় স্থির।। শানিত শোণিতাম্ল আজানূলয়িত ভুজ, गङावीत में अंश नगति। कडे नामि हमक्कार माश हक भाग आह.

পথ শোভে পথ চারি করে।।
শিরে শোভে করিশুও, করিতে ভ্রুত দংগ,
একদন্ত তাহে উপাড়িল।
ভূগু নিজ্ ভূকু জানি, তোনা তুমি ভবরানা,
শেইনস্ত বিপর্যাত কৈলা।।

বে তব স্মরণ করে, যদেতে ভাষার করে, শ্যনের নাহি পরিত্রাণ । যজ্ঞপাটা যেই শোভা, তুলনা আছয়ে কিবা, শাহি জানি ভাহার নিদান।। জয় প্রভুধন্যধন্য দেব অগ্রে অগ্রগণ্য ত্ৰক্পা আগমে বাথান ৷ ৰথ বাজী উন্ট্রকরী সকলেতে ভাজ্যকরি। কর প্রভু মূষিক বাহন ॥ কে জানে তব নহিমা, প্রাণে নাফিক সীমা, बनिश्य नाहि शोश धारन । শিক্ষেশ্বর কহেসার: কিন্তুণ বর্ণি<mark>ব আ</mark>রে कर शब्द असीन भिषान ॥ নিজ ভণে গণপতি: এনবাধনের প্রতিঃ यनि कत क्षांवरलांकन। ভবে হয় বিপ নাশঃ পুরয়ে ননের আশ্

#### मत्रभञी वन्स्ना ।

कतिलाग हत्। वन्त्म ॥

দীর্ঘ ত্রিপদী ছন্দ।
বন্দমাতা বাকবাণী, সাবদা বরদায়িনী,
শ্বেতরূপা ত্রিভঙ্গ ভঙ্গিণী।
শ্বেত শত দলাসনা, শ্বেত বৃদ্ধ পরিধানা,
রেদ্যাতা বুকাগু পালিনী।।

যন্ত্ৰী মন্ত্ৰ অধ্বনা, তাল মান বাশ্য নান। मार्व ७४ हेब्स मार्वाक । সাত্ৰুর তিন প্রাম, ্রাগরাফিণীর ধান্য ম্বেত বীণা তব শ্বেত ভূজে 🔢 লারি বেদ **আদি বিদ্যা, সকলের ভু**ঞ্জি আদ্যাঞ তোনাতে নাহিক কিছু আন ৷ नृ कि वाशिवात आरमः कीर शुक्ष कर्छ दर्दमः তগো মা তোমার তারিসান।। সুখদাত্রী দুঃখ হর:, অক্তান তিমির হয়। বিশ্বমাতা ভূমি বিশ্বেম্ব : ত্তৰ দহা থাকে যাবে: তাবে বিশ্বে পূজ্যককে ওশ তব মহিম। অপার।। যে জানে তোমার তত্ত্ব। সেই জন সভ্যাস সত্য সত্য জনন তাহাব ! विनाहीन (यह जन, ভाहाय वृथा जीवन, নাম তার মূর্থ দুরালার ।। তোমায় পূজে মুনিগণ, করে বেদ অধ্যয়নঃ (महे बिना विविधा विखात। वर्गम बान्धीक जामि, তव शम निवर्वाधे, পূজা করি বিখ্যাত দৎসার।। ত্র চিন্তা কলে যেইং নর মধ্যে গণ্য নেই, রাজার সভাষ পার মান ! তার দ্বোষ নাছি ধরে, সবে গুণ ব্যাপ্তা করেন दिशरम मि शास शक्रिकां ।।

कांचियुन तिम्। मर ठाव कत्रकः, व्या याजा य जता रियुश । मार करते जात (१४) किये। पाम कि दिसमा, কোথাৰ নাহিক তার সুখ !! ৰক্ষজণশে মহাবীর, অতি দুর্জায় শর্মার, विष्कृत जिल गृह राल। नुक। यदा मिला बद्रा, थाकि ভाর करशास्त्रः নিডাবর তুমি মাগি নিলে।। **ম্ব্র কোপানলে** ইর, রতিপত্তি ভূমুন্তু, कारण वर्ष्ट विद्याल कविशे। শ্রহীর ত সিতে স্কা, উপায় বলিলে ওচে, क्षिय छ, शभाग भाकिया ॥ কালিবলে মুখ ক্ষতিঃ কুপাক্রি তার প্রতি, कविदेन मा गरा निष्ठा वाग। কেছালে তব মহিনা- বিধি মাধ্য দিতে স্বীমান योज सूर्ण हदन छक्रोत्रः, ११ আমানি থাতি বুচ মতি, অজ্ঞান মূণ অক্তি छत छन कि वर्गिटन आमि। क्षाक्ति असिसीरमा दोष ह्या है। ह्या है। ভবে চব মহিম। বাখানি !। ুৰ্বি ক্যিয়া শেন, যদি দেহ জ্ঞান লেক, ज्राद शुद्ध गरगद **द**।भन**ा** हाना गरकः वीवानाति। कतिहासः (क्षुप्रः (व) **कुनम्म कश्चिम् बमानः** ।

यश जनगरीय वसना ।

भग ता। तक माठा मावाज्ञभी छात्रह छ। विमी ! াড়াপাখারিনী ডারা বিশুন ধারিনী ।। ा । शहा देश्यवदी दश्यादि गनिनी। न कुछ अधिमी भीती गर्भव क्रमनी ॥ ्या है। दिश्व कर अधिराज्य सन्दर्भ ं भारताचा नामारवाचा (महाद्राक्ताका ভদপত্তি কি : কান্তি কার শতাবা ৷ াশের কিলেন্ হয় ছবংখ উচ্চুল। কলেউছাল যোগৰ্গ ঋপাকর ৷ ें इस्तान लाटिस फाट जनार्ड पेश्वत ध भावितः किनाने जिला ता गांदा सविद्धः। रा किया कति वृक्ष नस विलो आसा ॥ च्य हिन्तु, कवि स्थित स्थापित काणी। াইয়া ভোগাম নান ফলেল স্ম্যানী ॥ বংগ্রেমা পরিধান বিভূতি ভূষণ ১ रूपासुरा जनभन कार्यम थादग्।। ত্তব মাহা মহানার। মহীতে **প্রকা**শ**ঃ** संख्या अगुरतस्य कविदन विनाम। इबि माछ (योहिनी तन धारन कति। छ इ निख्य इद्र विध युगलि अवदि ॥ হইয়া কাজিক। মৃত্তি ই পির কৈলেপান। रमकत्य राज्योत्वत्र विधिय भूगो। १३

**पर्शकारत** गरू देश्य शांभ कर्म मुद्रा यम्बद्धती देशरा जात मर्भा देकरण हुत ॥ মহামত মহিযাসুর ব 🚁 ত্রিসলসারে। দশভূজা কপে বন্ধ কবিলে তাছারে॥ कांद्रिया न्त्र रहा एक महागृथ । **তো**बादा ना क्लार कर शास नान मृहस ११ ष्मभार बहिया ७व विष्डाव भूवारः। **७व ७३ क** अर्थान करन किया जारन।। সিদ্ধেশ্বর কর্মাকার বলে অবশেষেঃ निर्दाल करियाल। वस्त्र, विस्वरिया 'काश्रालार चीवा अने भीनकीरन । व्यक्तिकारम कुला कहि दरचाला हत्रात ॥ ভজন সাগতের অ.ি.ন.চিজানি তত্ত্ব সংসার বিষয় আংশে সদা আছি মন্ত্রা তত্রাপি যদ্যপি যাগো কবিব সাধন। किंसानल मध्य भूमा ध्यासम सन्।। সে চিন্তা অসাৰ চিন্তা চিন্তায় চিন্তার ৷ কালের বশে কলেগত কালাগত হয়।। কি হইবে ওমা দুর্গে উপায় আমার। ভবে ভবানি কেবল ভরসা তোমার॥ ,ত্রিগুণ ধারিণী নাম জানিয়া এবার। ুভাই ভাকিলো দুগে তে'নায় বারস্থার।

असम्बा म्याला

#### गुरावध्।

मीय जिल्ली। উজ্জুল নগরে খাম- বিক্রম আদিত: নাম, বভগুণাহিত মহারাগ। गनवर् गर्भामम, मसंविष्ता विश्वातम, কালিদাস প্রভৃতি স্থাগ।। ষ্ঠিজে ভব্তি ধর্মোইছ, নিত্য দান অবিরত, क्रमावान भारत स्थान। নীতি মত ব্যবহারে, লাসং করে সুবিচারে, श्रक्षां भृत्य स्टार काल ॥ नाय निक्र बस्पातः । इस्तय निष्शामसः डेशिविके बाफ्न ब्राजन। ইতি মধ্যে উপজিতঃ সুধার্মিক বেদ্বিৎ, তেজঃপা বিপ্র এক জন। করি কর উত্তোলন, রাজপ্রতি গে ব্রেণ, धनावीर कदान कनानि। রাজা অতি সমাদরে পাদ্য অর্ঘ্য ব্যবহারে; द्रवृ दिया हाथिल मचान।। মহামূল্য রতু পেনে- বিপ্র অতি হর্ষ হয়ে, রাজ অগ্রে বলেন তথন। চেষ্টা ব্যতিরেকে হয়, কোন কার্য্যে কলেপয়,

हैश कि का कर्या मर्गन।।

এতেক দ্বিজের বাণীঃ সভাসদ গণ শুনি প্রত্যুত্তর কেহ করে তায়। " ভাগাণ **ক্লতি সর্বা**ত্র গ ভাগে, যদি থাকে ফল অনায়াসে পায় ॥ এমত উত্তর শুনি, কহে দ্বিজ মহাজ্ঞানী-সকলেরে করি সম্বোধন। ্চেন্টাধীনৎ ভবেৎকার্য, ৭,, শান্তের লিখন। দৈবের ঘটনা যাহা, অবশ্য ফলিবে তাহা, ইহা সায় ভাবি যেই জন। কান চেন্টা নাহি করে: আলসেতে কাল হয়ে: মাত্র কাপুরুমের লম্ব।। দৈবে করেন ঘটনা, তাহে আর উপাদনা, कर्ल्ड इर এक, र अस्ट व <u> বৈবরূপ ভূমিষ্ত্রে, চেন্টারূপ রসাসিক্তে</u>. क्या वृद्ध श्रीभाष्ट्रन धरत।। रेम्रदेव निर्कक्षधन, कठ कर्छि উপार्ज्जन, তাহার উপমা ইতিহাস। কহি তবে মহাপতি, যদি পাই অনুমতি তৰ কাছে করিয়া প্রকাশ 11 দ্বিজের বচন শুনি, তুই হয়ে নৃপমণি, करक् वर् कतिय। विनय । যদি কৃপা বিভরণে, অভিনৰ উপাধ্যানে, সভোষ কৰেন মুহাশায়া।

রাজার আদেশ পেয়ে কতে দ্বিজ হ্য হয়ে।
বিস্তারিয়া সজা বিদ্যুম,ন।
শুসাহ প্রশ্বাস, ভ্রন মোহিনী লাম,
ইতিহাস সুধার স্মান ।।

#### ज्यानत बना ग्लोफ ।

भग्नाव ।। এकनिन सङ्गिदा सङ्द्रिव अटक । ধরাধরে ক্রীড়া করে অতি মনোরঞ্চে ।। ইতিমধ্যে এক দৈতা উদয় তথায়। মহাকাল নাম তার কালাতক প্রায় ॥ েথিয়া দেহোর রঙ্গ হাসিল তথন। তাঙা দেখি হৈলা দুৰ্গা সম হতাশন । দৈত্যেরে বলেন ক্রোধে ছাড়িয়া নিশ্বাস ৷ এত অহণকার মোরে কর উপহাস 11 এই হেন্ত অভিশাপ করিলাম তোকে ৷ नव रुख जन्म नरु भिया यर्डा लाएक ॥ ভবানীৰ বাণী শুনি আফ্ল হইল ! কান্দিয়া সে মহাকাল পৰ্যতে পড়িল !! ঘ্ডিয়া যুগল কর বহু করে স্তৃতি। ক্পাকরি রাখ গোমা আমি দীন অতি।। আমি যে অধম দৈত্য তোমারে নাজানি। লাজেনে করেছি লোষ ক্ষম গো সর্বাণি।। আমি অতি ৰূদমতি ভীত অকিঞ্স। ন জানি মাতব তল্বামি অভাজন ॥

্ভরেতে অকুল মাতা দেহ গো অভর ৷ कर्नु शक्त छक्न मध छै हिन्छ न। इम् ।। এই রূপে মহাকাল বহুকরে নতি। কাতর দেখিয়া দ্যা করেন পার্বভী :৷ চাহিয়। দৈত্যের প্রতি কহেন তথন। দিয়াছি বে শাপ তোবে ন। হবে খণ্ডন।। কিছুদিন ভোগকর গিয়া কৌণী লোকে। পুনর্কার পাবে স্থান ত্রিপিউপ লোকে ॥ অতএব জন্ম লয় আমার বাক্যেতে। হরিহর রাস গৃহে নগর রাজ্যেতে।। তথন বলিল বৈত, খুড়ি দুই কর। विभए भगर। देश्ड बहे (पर वर ॥ তথাস্ত বলিয়া মাতা করিলাগ্যন। (निथिएंडर रेम्छ) इहेन भटन ।! इतिहत सहादोका दफ् भुगावीन। তার জায়। কশবতী পদার সমান।। সতী ভাগ্য বতী সে অপর্ণা তুল্যা হয়। জয়াবতা নাম নিজে বাক বাণী প্রায়।। কাশ্যপাতে মান্য সেই মগৰ ঈশ্বর। নর দেহ ধরি হইল তাহাব কুমাবা। পুণ দেখি মহাবাল। হরিব অভরে। অব্ৰোধ বাসি ভাগে আনন্দ সাগৃদে।। উৰ্বা ভূমি বজাদি অমূল্য রতন। কাণ গঞ্জ জান্ধ দুঃখি দিজে বিভরণ ॥ य गांक। वाक्षा करत शृहाय मर् । वर्ष ।

13 करण मांग करत महासव नाय।।

गरन वार्ड । महें होजाई नमन ।

गरन शृह्ण कर कला हत्मृत यमन ।।

हम हम्म गर्था (भरत मूनिन मूमन ।

गहा आफ्षरत कराइन अधानन ।।

ग्रिलार वार्ड (महें ड्रेन म्याइन ।)

ग्रिलार वार्ड (महें ड्रेन म्याइन ।।

ग्रिलार मर्म अधानक्त स्थान वर्षा ।

ग्रिलार मर्म अधानक्त स्थानकर्ता ।

ग्रिलार मर्म अधानकर्ता निश्वा भिष्ठिता।

ग्रिलार क्रा कथा इहेन मर्मायन ।

गर्व स्थाहिनीव स्थानक्त्र विवान।।

### (म।हिनीत जना।

শয়ার ৷ এক দিন্দেবরাজ সভায় বসিয়া ৷

ভত্তি কি দেবগণ বসেছে বেডিয়া ৷৷

নানদাদি মহাতপা দেব ঋষিগণ ৷

টৌদিকে বসেছে সব করিয়া বেইন ৷৷

কেনকালে আনন্দিত হয়ে সুরপতি ৷

নাচিবারে আজ্ঞা দিলা অপ্ররীর প্রতি ৷৷

মেনকা উর্বাণী নিচে ঘৃতাচী অপ্ররী ৷

মহানদে নৃত্য করে মত বিদ্যাধরী ৷৷

ইতি মধ্যে পিঙ্গল নামেতে মহাঋষি ৷ ইন্দের সভায় উপনীত বইল আসি ৷৷ কান ভাবে মন্ত। হয় ঘৃতাটা অপ্সরী। তাল ভঙ্গ হটল তার দুনিবরে হেরি ॥ দেখিয়া তাহার রীতি সে ঋষি পিঙ্গল। ক্রোধেতে হইল যেন জ্বস্ত জ্বনল ॥ अ**ठ जरू** भकार स्थारित के के के ति एथे। এম্বান ছাড়িয়া জন্ম লছ ছিরা লেকে !! स्थितिय। युनिद कथा जलाती उथन । काछरक कानिया देवल ठाउन दरमन ।। একে আনি জ্ঞান শূন্য তাফে হীন নারী। তব তত্ত্ব আনি প্রভু কি ক্থিতে পারি।। শয়। করি নম শাগ ঘুচাও দ্বরিত। मधु পাপে अङ्ग १ ७ न। २३ উচিত।। এই রূপে বহু হুতি অপারী করিল। কাতরা দেখিয়া মুনির দয়া উপজিল।। यम योका जनायां ना इटव कराइन। किছू निन जार मार्ग्य इट्टा याघन ॥ মহামায়। শাপ দিয়াছেন দৈত্য প্রতি। क्रमम लएएएए (मद्दे मश्रथ दम्खि ॥ चेंडरम् भिन्न उर इहेर्न रथन । কিছু <mark>কাল</mark> ভেগে করি আসিবে তথন।। ভূমি লোকে জগ লহ কাফন থভেতে। कानभित्रभूनं हुरन जानिता स्राग्ट ।

अध्योष मनित वाका ना इत न० धन । ব্যঞ্জন গভের ঘরে জনিলা তথন ॥ লাগ্য বতী সভী রাণী পরমা সুক্রী ! १ ई शूर्व व्यमवित उँखरा क्योरी ॥ হাহার রূপেতে হৈল সাবাদ উচ্চুদ। नगर विश्वनी (मिश व्यानसम विश्वन ।। **নপু শশী নিয়মিত শাস্ত্র ব্যবহারে !** ग्ला वरण जाराभन कराध कन्याद्र ॥ রুপ দেখি মহারাজ হয় চইল তাতি। থোহিনী ভাহার নাম রাখিল ভূপতি।। भागम करदम मृत्यं कमा। नास दानी । नित्न पित्न वार्षे क्रथ चूवन क्यांकिनी ॥ অসিত পক্ষের শেষ হইলে যেনন। नित्न नित्न वृक्षि इस हत्नुत कित्र ।। বনপ্রিয় ধুনি জিনি মোহিনীব ভাষ। ভঠাতি সুন্দর তায় মধুনয় হাস ॥ দেখিয়া কন্যার রূপ কাঞ্চন খণ্ডপতি। সুখার্ণবে মগ্ন হয়ে প্রকুরিত মতি।। মৌহিনী দেখিয়া রাজা বলেন ভাবিয়া। যদি যোগ্য পাত্র বিধি দেন মিলাইয়া ॥ যনে মনে মহারাজ করিলেন স্থিব। बुराधवा इत्व कन्। व्यान मुधीव ॥

# হরিতাটের রাজসভার পুরেশ। পথার।

देमरवर निर्द्धक योज दक ए**एन कर**व । খন। উপলক্ষে বিধি যোগা যোগ করে। বসিয়া আছেন বাজা সভা সজাকরি ! কেন কংল কাইল ভট্ট নামভার হরি।। हाजश्रु विद्या जा है श्रमादिश कर । (नदलाव क्रांटन क्रांक्ष) कति निवस्त्र ॥ খনত থে গ্রাজ। কর হৌক নিরাপদ। চিত্রজা বিধন লাজা আবে সভাসর।। মূণে নবৰ বুলি ছউক তোমাব। রাজধানী বাজ ভোগ বাড়্**ক অপা**র ॥ শানা বাজ্যে নুপতির বাড়ীয় সন্মান। পুরস্কার পেরে ভাট করিল পয়ান।। অতঃপর মোহিনীরে প্রাসাদ উপরে। দীড়াইয়া পথ হৈতে নিরীকণ করে।। ভাবিলেন এই কন্য হবেন রাজার 1 আহা মরি একি ত্রপ হেরি চমৎকার ।। আশর্য দেখিয়া ভাট যায় তথা হৈতে ভারপর মনে মনে লাগিল ভাবিতে ॥ এই যে কন্যর রূপ অতি শোভা পায় 1 ইহার উচিত পাত্র না দেখি কোথা্য় ॥ শুনেছি মগধ রাজ্য বড় চমৎকার 🎙 বভুরপবান আছে রাজার কুমার।।

তাহার নিকটে দিব এই সমাচার। বিবাহ যদ্যপি হয় পাব প্রকার 11 ইহা স্থির করিলেন চিন্তিয়া মনেতে। ঢলিলেন ছরিভাট মগধ রাজ্যেতে ॥ কত পথ কত গ্রাম যায় হাড়াইয়া। তার পর উত্তরিল মগধে আসিয়া। मच्च ८थ पिथिन अक मुन्दर उपान । निकटि जामिया छोत्र बह्ब नकान ॥ वाशान सक्षा इ अक मीर्घ भरवा वत । চারিধারে শিবালয় অতি শোভা কর।। তাহার পশ্চাতে এক মনোহর ঘর ৷ বিরাজ করিছে রায় তাহার ভিতর।। দিব) সনোপরি বসি আছে রস রায়। বীরে থীরে আলি ভাট অন্তরে দাঁড়ায়।। রাজপুঞ যুবরাজ ভূবন নাম ধরে। क्रभ नावना जारव ज्वन मरनाइरव ॥ অতি গুণাকর সেই রসিক সূজন 1 किए। एक इत्र कर्त क्विनीत मन ॥ সে রূপ দেখিয়া ভাট মননে ভাবিছে ! এই বর দেখি বিধি কন্যা স্বিয়াছে॥ ভুবনের দৃট্টে ভাট নোয়াইল শির। কে তৃমি কি প্রয়োজন জিজ্ঞানে সুধীন। भारिनीव वार्ज नास आनमिल मेरन। ব্লিছে ভুবনে হবি বিসয়া গোপনে।।

## जुवन् निकारे एविजारे शाहिनीव मन्दाम सन्।

मीर्ग जिल्मी।

শুন রাজ্যর নন্দন, করি এক নিবেদন, আনি ভট্ট বিখ্যাত সংসার। নাম নম হরিভট্ট, নিবস্তি গোর হট্ট। ভট্ট গ্রেষ্ঠ জাতিতে আমার।

চরাচত বস্থতী। সর্বার আসার গতি।

ন। জানি নাহিক ক্নে স্থান। যে খানে গমন করি। সকলেতে কুপা করি।

डाउँ मरधा शास्य भाव सात सात ।।

দেখিলান কপ যেই বড়ই আশ্চর্যা সেই

্ডেমনার না হেরি কোথায়।

নগরে নগরে কিরি, মনে মনে চিন্ত। করি, এই কপ কর আরি কায়।।

শুনিয়া তোমার নাম, আইলাম এই ধাৎ,

লইয়া যে তাহার বারতা।

ঞ্জ হৰ নহাশয়, সে সৰ বলি ভোনায়,

**অপ**রণ রূপ দৃষ্টি যথ। ।।

কাঞ্চন থণ্ডের পতি: অতি সুশীলতামতি,

দানে কণ্ডেড় সন্ধৃতি। দয়াময় সে বাজন, ধৰ্ম প্ৰতি দৃঢ় হন,

ভার গুণ কাহিনি যে গাঁথ।।।

कृत्व अकनक मनीः भरनरङ कृत्व छ। विः गारन मूर्या। यरनव मगीन १ বলে অতি বলবান, তেজেতে তপন জ্ঞান, বৃদ্ধে বৃহস্পতি পরিমাণ ।! সণ্প্রামে ভৎপর অভি, গালন প্রজার স্ততি, সন্তান ঘেমন আপনার ৷ লিট প্রতি পিত্ সম্ দু**টে** জ্বান করে ধয<sup>়</sup> : পণ্ডিত যেগন ক্ষরধার।। তরামে অভয় দান, বিদিদতে পরিত্রাণ, भृत्यि (नत्यं मृत्यिक व्यवस् म्नरप्राठ र्कि इया, बार्का नमा क्य नशा, পুণেঃ ৰাজা যেন রত্বাকর ॥ ভার কন্যা রূপণতীঃ সুন্ব যৌবনা অভি, তারে দেখে লুকায় পশিনী। লানু ক্ষ্যেতিঃ প্রকাশিত, দেখি পায় আনন্দিত, সে জ্যোতি প্রকাশে অভিগানী॥ एमरथ जान कि एमम, कनी अनि करन इच्छा, আপন বদনে আপনায় ৷ उत्त मूथ ननी (नर्थ) ननी थारक कार्धामूर्य, मृशक्क वहेशा वृष्णाय ॥ अभ ছলে क्रीड़ा करत्र थनी क्रभ महतानहत्र, वृक्षि ठक्कवाक ठक्कवाकी। मन वर्शाचे भन्नीटन, वक्त कतिवान छ्टल् वक्ष निष्म व्यवस्थ (नशि।

মনে জনুমান করি, গমন দেখিয়া করী,
উরু দেশে রেখেছে হকর।
নামে সে ধনী, নাহিত করয়ে মুনি,
দেব আদি গল্পর্ক কিয়র ॥
প্রশাপনিতে সেইনারী, এক মুখে আমিনারি,
সহজাক দেখে যদি রূপ।
নৈই যে আশ্চর্য্য ময়, কিঞ্চিৎ বিস্তার হয়,
তবে যদি বলে নাগ ভূপ।।
ভূবন নিকটে হরি, ইহা নিবেদন করি,
পাইয়া অধিক পুরস্কার।
হয়ে হ্যযিত মতি: বিদায় হইয়া তথি,
গমন হস্তানে পুন্ধার।।

**\*\*\*** 

নোহিনীর ৰূপ ভাট মুখে শুনিয়া ভূবনের বিলাপ। গীত। রাগিণী ভৈরবী তাল আড়াঠেকা।

এতেক যতন কেন অনিভঃ পেন কারণে। তিলার্জনাহয় মন পিয় জনে বিসমরণে।। মিলন হই বারাশে, পড়িয়া দাকণ ফাঁশে, ভয়না করে মানসে, পুরে পুণ विज्ञात । (म श्रुन विष्ट्रमहाल, मना कृष्य मृथ्यानाल, (म क्वाला युष्टात वाल, वामना इम्र महावा।

#### প্রার !

গোনেতে অভঃপর রাজার কুমার। ां एथ अनि भाश्मित जगानात ॥ भवशे खनिया बांस कहेगा त्याहिक। व विश्व भवकारन खस्य वाशिक ॥ व व त्याहिनी धनी किकाश शहर। া অদৰ্শনে আনি প্ৰাণ ত্যজিব।। ाद गाहि महरू श्राप्त विश्व निकात। ंतर्भ तम्रस्य ध्यम मूक्ष्ट्रथव व्यानाव ॥ शिक्तितात्र कुष्ट्रश्चित कलाउ व्यनम । ित माहि इस मन सम्छ ठथाला ॥ ने कर नर्सक । विश्व अनन । গীবন জীবন স্পর্শে হতেছে দহন।। ্তা বিকশিতে যেন দ্বাদশ ভাস্কর। ्यत अञ्चल (यन म्यलंब भिन्न ॥ ोতে যে कांमिनुस कति श्रशति। <sup>্দ্</sup>র মাঝারে সদা অলে হতাশুরু ।। कालाक इंदेल मधु जान काल थान। ্ৰাসম ভোজনেতি হয় বিষ জ্ঞান ॥ क्षा कहिए चाहिनी अस मूर्थ।

নয়নে নাহেরি রূপ সদা এসে চক্ষে।। কিকথা শুনামে হরি গেলেন ভুবনে। अवन वामना करत (भवन अवर्ग ॥ শর্ন করিলে হয় শযারি যাতনা। म्म वारक) ज्ञान करत वर ज्ञ वाक्षना ॥ गयन गुमिला (मत्थ स्मन्द धोतनी। त्रियात्व पर्य यन निक्षे भागिनी ॥ দ্ফি মাত্র রসরাজ চেত্র হারারে। अन्वत्रश्रविद्या उटि मिक्नि विनिधा। এই কপে ঘ্ৰনাস হট্যা আক্ল। <u> अवित्रक् 'उत्राक्ष (कपास श्रोव कृत ॥</u> আ, হামবি দেখ একি ভাৰ চমৎকার। না হতে পিরিভি ভার বিকেদ অপার ৷৷ रमिपन इंडेंग घंड ७ क्या कविश्व।। পরেতে ভাবিছে রায বিরলে বসিয়া। कारतना करिव छाद्य रकमरन शाईव। কিক্স প্রাস ছলে তথায় যাইব।। তাহাৰ উপায় চিন্তা কৰিয়া সুনীৰ । व्यवस्थात मत्नागरभः कतिरामन स्थित ॥ পাত্র স্তম্ম প্রিয় স্থা যে সর্ব্ধা। ভাষারে কহিব আজুজ এসব ব্যৱভাগ कान क्रांस (महे रमे हाम कर्नश्राह । <u>बार्ड्य भागव यात्य घनिकार श्रांव ॥</u> ইহা ভাবি বদিজেন ছইয়া দুঃখিত।

रम्मकारम शांत्रशृध व्हेन छेशनीत ॥ পেথিয়। মথার ভার ভাবে ননেমন। কুঠিত হইয়া অতি গিজ্ঞানে তখন।। कह गया এकिङ । इंट्रेन उपम्र । (मिथ कम्मािश्च मन इंडेल इन्छ।) किक के উত্ত পে উथनिन मुध्य मिस्र 1 প্রকাশিয়া মন কাছে বল প্রাণ বঞ্ এতেক শুনিয়া কছে রাজার নন্দন। किवनिव छए। यिख मृश्यंत रहन ॥ (यह जामानाल जम राजार परना যেকরে শীতল সেই হয় বন্ধলন 🔢 क्षकानिया विन यनि मनुशाय देय । **नखवा वलाटि किए नाहि कटलान्य॥** পাত্রপুল বলে মথা যথা মম সাধ্য ৷ অবশ্য করিব কার্য। আমি তন বাধ্য ।। बाष्ट्राञ्चल बरण खरर रखन विवतन्। य क्षात्र मृश्यानाम पित्रक मन ॥ ভাটের সংবাদ বার্ত্ত। সং গুণাকর। পাত্রপুত্রে পালটিয়া কহেন তৎপর।। গত নিশিযোগে এক দেখেছি মুপন। সেপর্যত হইয়াছে অন্তির জীবন ॥ কাঞ্চন খণ্ডের দেশে যেই অধিকারী: নোহিনী নামেতে এক তাহাৰ কুৰাবা ॥ বিক্ৰ তাহাৰ ক্ৰণ বিশ্বে অন্তল্না ৷

স্নৰ যৌবসা অতি তডিৎ বরণা ।। প্রত্যক্ষ নয়নে ন। হি করি সন্দর্শন। নিজিতায় দেখি কত করিব বর্ণনা (ग्रानी आंत्रिया के इं भग प्रक्षिश्वीट । नाना दमानाभ टेकल महामा वमरन ॥ পবে निम्। ५८६ ७३ (क्षेत्र जानाभन। (यथर्ग उ इहेगार्फ दिव भरह यम ॥ चर्त्रा (मथ) मिया गग ह्ति कवि गन। किथा कि विवा भनी श्रानम्ह भगन ॥ সুদ্রিত লোচনে ভারে করেছি কর্মন। উত্থীলিভ নেত্ৰ যুগে হেৰি কডকণ ॥ म अपूर्वाय सम श्रीत स्टाइ वानाचा কহিলাম সারোজার দৃংখের বৃত্তাও ॥ প্রাণ তথা যেতেটাই দেহত্যাগ করি। बाबिसाहि पिसा भाज व्याधाम अहित ॥ এতেক উত্তর যদি করিল অবণ। হাদ্য আসে। পাত্রাঙ্গজ করে নিবেদন।।

-1010

ভ্বনের পৃতি পাত্রপুপ্রের উত্তর।
ত্রিপদী ছন্দ।
এবে বড় অসম্ভব; ভাব ইইল উদ্ভব;
ত্রেমার মুনেতে আচ্থিত।

यक्रांस साम्रम कृषिः अति सर्व सर्व विकाधिकीः গণ্ড দেশে ইইল চুম্বিত ॥ अन्द कोमन जानः उद मन उपिकनः আ'র কিবা হয় অতঃপরে। হৈলে নৰ অনুবাগ, দিনে দিনে বাড়ে বাথ্য সে রাগ বুঝিতে কেবা পারে।। यलान या प्रथा यायः প্রত্যক্ষ হইলে তারः তবেসে ভাগ্যের সীমা নাই। গত্ব রজ স্তমত্য়ে শরীর চালন হুয়, যাহা ভাবে মণ্যে দেখে তাই।। হৃপে স্বৰ্গ লাভ হয়, তাহা ঘদি সত্য হয়, তবে কেন ধর্ম উপাসনা। **অনিতঃ ঘটনা হেত্, অকূল সাগ**রে সেভু, विश्वितादम कबिष्ट वीमना ॥ শুনিয়া কহে ভুকন, লাহি শুনিও বচন, यपि नाहि स्मामनी (मला। ভোমার সাক্ষাতে মিত্র, এপ্রাণ ত্যজিব অত্র, বিষাহারে কিয়া পশি এলে॥ শুনি কহে মত্তি সূত, এতোমান কি অদুত, বাসন। হইল উপস্থিত । কি ছার নারীর জন্য, হইলে হে জ্ঞান শূন্য, এযে, ভাব দেখি বিপরীত।। यपि एक अकाल मान, भागीत अध्यवान, যাইবার উপক্রম হয়।

करर स्थ्र में बे डिकिं दिन हरत कर यूकिः চঞ্চল মনের কর্ম নয় ।। নুখিনের গুণ যতঃ তাহা হও অবগত, কিঞ্চিত কহি হে প্রকাশিয়।। সুস্থির হইলে বিধি, তদুপরি প্রতি বাদী, **किश् नरह रहण विठाबिया। ।।** यपि ख्रिप्र करिः यन, कदरप्र देखे जाधनः অনায়াসে ভবে মুক্ত হয়। ক্ষিৰ যদি গায় হাগ্য বাড়ে তাহে অনুৱারাগ্য পশু পক্ষী আদি তক বয় ॥ नर्क मारावाय वायर अधन कठिन निर्देश: লিফ জলে সেহ সরল হয়। অতএৰ শুন ভাইঃ তোমাৰে বলি যে ভাইঃ खिद इंहेटन कार्या मिकि इस्।। এতেক উত্তর শুনি, মন্ত্রিপুত্রে গুণুমণি, राज भथा कति निर्दर्गन । যে কথা বলিলে ভূমি, তাহা বুঝিলাম আমি, तुर्व देक व्यमा अग्रेग मन ॥ ধৈর্য্য সেত্র ভেলে কেলে, অধৈর্য্য **প্রলয় দলে**, ভ্ৰাইল জান মহারত। প্রবোধ মৃত্তিকা তায়, দিয়া নাহি বান্ধা যায়, कविनाय अधिकात गर् ॥ बुकिनांच व्य अकरण, त्म यसी मिश्रमी वित्न, এবারি নিবারি কেই নাই ।

ইয়াছি নিরুপায়, বল দখা এরুপার, किएम अमझाठे जोन भः है ॥ ভুবনের ভাব দেখিঃ পাত্রাঙ্গজহয়ে দুঃশীঃ হৈল অতি চিন্ত নিত মন। ভাবিতে ভাবিতে পরে; আইলেন নিজ খরে, ৰাজপুত্ৰ ভাবয়ে তথ্ন ॥ वक्तू नाहि मिल जाय, निहल हैर्स्थ महाय, আর ততে কার মুখ চাই। थ। करतम ভাগোকালী, घूচाँछ मरनद कालिः चाविनाम जयोकारत याहै।। ইহা ভাবি সর্ব্ব ত্যাগীঃ মোহিনীর অনুরাগীঃ रुए। बाग्र कतिल शयम । भाषा देवन का प्राप्तः कि कहित मिर्दिश्यः मूक्याखात करत भर्याछेन ॥ দৈৰ কৃত যেই হয়- কভু থণ্ডাৰার নয়-कहि छन स्मेह दिवन् ॥ যাইতে যাইতে শেষ্য জান্তে কৰিলু, প্ৰেশ্য অতি ঘোৰ দুৱন্ত কানন।। পথ অনে কুলি কাম, ৰণিল জন তলায়, छार्ट मन्द्र विश्वह शदन । আলস্যে আবৃত কায়, শয়ন কৈল ভূশহ্যায় পরে, निজ। इहेल णांकर्यन ॥ অচেন্ডন হয়ে অতি, নিদ্রিত হইল তথি পথ আন্তে হইয়া কাত্র ৷

পগুণে বাসর পতি, অপ্তাচলে কৈলা গভি, निनि इहेन ७४ छ्वछत ॥ সিশ্ছ ব্যাঘু পালে পাল, শূকর আদি দশ্যক ভলুক গাণ্ডার শ্লিপণ। रम महा दन भौबोद्धः जक्त अरब्रयण (क्द्धः घन घन कड़ाए शब्दान ॥ **एग्रह**द भक् स्थितः इहेग्रा वराकुन क्यांनीः নিত। ভালি উঠিল ছবিত। **অতি মনো ব্যগ্রতীয়**় করে হায় হায় হায় একি শর হল বিপরীত।। হেবিভর অস্কার; বন হটন মহাসার: নাশ্ক জন্ত ফেরে পালে প্লে! कार्ड बानी धना गानिः ना खान मथाव रानीः এসে এখন উপস্থিত কাল।। আগনে আগনি বলে, বন্ধ ভাসে চকু জলে-काल निर्मा इन जागर्यं। य करना वाहिन (इशा) त्र धनी वहिल काश विभारक जाङ् श्वाई की वन ॥ মনেতে পাইল দীকা, কেকরিতে পারে রকাঃ উপক্তিত হয় কাল যদি। কি হবে জনিত্য ভেবে, যাহাতে নিস্তার হরুব, जात कार्य मन निवर्धि ॥

क्रिक्रमध्य गुना गील। ब्रागिनी (वहांग जान गांडा लेका! কিছ্য বুঝিতে নারি। কেম্ন ভোগার जान अरम् स्वादि ॥ निहा नाम सहायन, मन्मा (त्र करह স্থাপন, দিয়াছ তায় আছাদ্ন. भन्भव बाह्रो ॥ सहामायः कुर्रकाड, ना रम्य সজাগ হতে, হ্রে কাল সে নি দাতে, জীবন ধরি। সদা রভ পরি বারে, অহুণ সর্থ অহুণ কারে, তব নাম সন্নিবারে, বিভোল ভারি॥

বিপদী হনা।

(ই জয় যদ্ নন্দন, যন্নাজ্ঞান ভঞ্জন,
যোগী জন নানস রঞ্জন।
জ্যোতিকার যোগাতাত, জগং জনাজিছি,
যোগাতাত, জগং জনাজিছি,
যোগার্জন ধন ।।
পদ সর্বাজ দল, স্মাণে অন্তে নঙ্গল,
জীবে, নক ফল প্রদারক।
তব কীতি অভান্ত, সর্বাভূতে আবিভূত,
আক্রতে বিশ্ব প্রতি পালক।।

বিশ্ব রূপ বিশ্বকারি। ভূজার কল্যহারি। দিবোক্য বৃহ্ণ দানবারি। र**म जानस का**हिन्द्रकः एवं क्रीयन कक्षतः कांत्रण चारण श्राप्तकी ॥ अय शासीम नमन जय वासिका समन জয় গোপিকার ন্মেংগরি । **জয় বিশিন বিচারি** । ভায় বন মাণাধারি ष्ट्रम का निष्य का नाउकारी ।। काराहरू सन्धार, देनुयान देनवा हरू जारह जाते हार आश्वल । वाहिराइ प्रथ खाँ ३, जाउन निया मोक्साँ इ. कत समा (शास्त्र ४ ३स ॥ श्चनम् आकार करिः देवियास अभियादिः मृनम धामार वीति लिला। व्यवमाना करमधिः जूनि लाविकान अहि। एल बामि ११९ वी प्राहेला ॥ स्थासभा ५ भरतभारतः भटन देवरम कीवाभागः আশ্ভ বক্ষ জীনপ্র স্থন ! क्षिट् जिल्ल बीका भीखद भागद मणान . <u>जोश्मीय लाजा निवासमा</u>। **ख्यां ज्ञक छन निकाः ज्यानीय मीर्याद द**सः कुलानिक बनाय भुन्द्रान । कत नाम फेक्सिन्टिनः होशह भिक्ति एन यहन भागन समात क्याना ।

তংপদ উদ্ভব বারি: পরশিলে ভববারি:
পাপারা তরাম অবাহালে।
নামের সহিমা মাহা: আমি কি কহিব তাহা।
মুব জান্ত যে অন্ত নামেনে ।
শুব জান্ত যে অন্ত নামেনে ।
শুব জন এই বাবী: স্বাচিত কিলাম্বি।
ভব চিতা দূব গানী হবে।
নালান্তে নিয়াদকাল, পাতিয়াহে গেই জালা
স্থনাসে সে ছেব করি হাবে।

一番

## नधाभीव निकाउँ जुनानुद दव शुःख ।

প্রার চন্দ।

নি কশে কান্যান কাতর হইয়। ।

নিত্ত ক্রথার জাগে নালে মুদিয়া।

নাল ক্রথার জগেগ নালে মুদিয়া।

নাল ক্রান্ত করি পান্ত করা কান্যা।

কর্মান বেটিত ত তি দীর্ল জটা, ভার।

কিনিত পুতর্বানা সমন্ই অক্ষ!

করেতে জপের মালা গলায় কুদ্রাকা।

গেখের কুণ্ডল কর্মে পরা ব্যান্থ জক।

নাল জাগিত তালা গলায় কুদ্রাকা।

গেখের কুণ্ডল কর্মে পরা ব্যান্থ জক।

নাল জ্যোতিঃছলে যেন অগ্রি ধক ধক।

বিদ্ধি আব্তবপ্তথাত নৈয়ুখে।

िक्रिक कदिया नाम भी प्राचन मुख्या विश इन विद्याहम कृषि मधीरव मिथिस। । भने का महत्त्वाम अवनी शिल्हा॥ दिन्ध श्रेष्ट्रक एवं वट छटि देवल १ .पशिशा तल्य. एवं वेत मण्य उपक्रिस ॥ भारेड मारेड भाष कवि भगापाँड । क्व विख्या रेकन स्वराज श्राच्या ध्यमण भिन्न वह इके भिक्ति हर । ভবিদান কন্ত্ৰাদ প্ৰভ জাত হবে ॥ প্ৰবিধি আৰি বৰ কৰিন জ্পাণ্য থে লগা নিরতে ইজা করিং। **শথ**না क्रियेत (म. जम. क्षा. क्षा. १ क्षेत्र १ भगर्भात गास देशएय शिक्त कला लाहन ह बत मिया द्यानं, उद्ग करिया भारत । नव खाभ कहा कहा कहा परिकास मन ।। নিশিতে বঞ্চিতে মনে করিয়া ঘকতি। काजभाग देवन भीर्याकात्र शक्ष्मिति ॥ फाड़ा निर्देशकः, कृति दन शब्द वर्छ। প্রায় দেবন চ্যাগ করিকত শত ধ এই কপে দে যামিনী সূপ্রভাত হৈল। সে ক্লা ভ্যাজিয়া বায় স্বরূপ ধরিলা।। **পেবন ব**জ্জিয়া পরে করি ব গমন। মোহিনীর আশা ডোরে বাহ্নি নিজ মন।। करु एमा कर छ। य देनन सम्बर्ध !

un इ. जाशितः होते शहर विस्तारित प ্ষন খণ্ডেতে পৰে কিছু দিতে 🐠 🦠 ः गएत धर, करे शास्त्र स्थाप स्थित। েনি জানিয়া তবু পর্যাকাকারণ ১ ার সিতে জনপ্রতি সাচার্টিত মন 😗 া বে দেখিল এক যায় গাল কেরে। । शृनुस्ति ভারে ড'কি বাবে ব্রায় ा । यन छाइ छाई वर्ग कान धार । न न मुश्रिक बाज, शास्त्र कि गाम ॥ স্মালি সুষ্ধ শুলি ভ্ৰনের বার্ণা। কেশ্য় জাদিয়া লেই নিকটে অপনি চু ा धारमन नाप क सम्म श्रा श्री। াঞ্চ খণ্ড নানে বাজা এত অথিকারী।। ালাকার মধ্যে শুনি প্রতেক উত্তর। भेगाद **ज्यानरित गह द**िस्ता नाहाद ॥ াৰন তথ্য এবে কিছাপ ব্যাণ 🕽 के इन श्रकाम काँद्र मिनाजी (इनिया। শালতে ভাবিয়া যুক্তি করিলেন শোব। গণক বেশ ধরি গ্রাটেম করিব প্রাবেশ 🛚 🕏 গপলেতে দীর্ঘ খেঁটো অতি শোভাকর: জ্যাতিৰ্নিদ্যা বিশাহদ বচন তৎপর।। বসবতীরাশা হেঁজু হেন করি সাজ। ্রক।শিয়া নবরস যায় রসরাজ।।

कक रागः चामिएए ए स्थित मच्चर्थ । चित्रिष्ठ यम राम श्रामा श्राम ग्राम है। भवायको अप्य रहराया, अपस्था। चनवा ६ पश्चित्र सम्भ भाव सम्भ ॥ অপৰ ওচেতে নিমি নাগায় তিলক : क्षारम मिल्ड विन्तु भूकार भून्क ॥ किक्ट हैं। हिंध, छात्र दिनाहेश तरेनी ह शदि भारी कवि व्यं ि कवती दार्थान ॥ ন্ধির মৃত্তিকা লাল। সৌ্বভ **অ**গ্রা । भव भाग अन्यन एकाइ संश्कृत सूदा ।। का व । नीम के एक तान का वस्त्र छ बुदे ह ভালিতে লভ্য হ্য হিডান সাকুল ম भागम (मर्नेश्वयाः त्रा । ५,८म ठशक्यात् ४ পদে গাদ কভ দল বুলা মাগে। কাব ॥ नितः २४ अदिशान यंज्ञाहाद माना । श्राहरण का इंटर भाव मालिनीव हिंद्र ॥ ८५भिण चुनरन मरम इरस इदियक । धन কৰি বল ভাবে আইল প্ৰৱিত।। (मधिया बाह्य श्रम न्यात माहि छला। निकारे काशिया भनी मृमुकारव वरना ॥ नान। तक एक कवि वरल भवानी। क वृत्रि में डिएए (इथ) खाड अन्वर्गित ।। কি এটা কোখায় খাদ কছ সতা কৰি। অরি এরি ছেরি তব কি রূপ মাধরি।।

तका भाषा दिना है। १ कि दिना स्मा বেৰিয়া তেলোব ।। আ 👵 সন্দর্ধ <িতপতি নিন্দা হং ওপর দেখিলা ১ कालिमारन शरीक भी। पत्तिम इर्व। त - महारा कवारम जा व श्रामना । ্ৰানিয়াস আলু শতে কৰিতে সকলে ছ क रत ब्राधि का निष्ठाङ कवि व्यभाधिनी १ लंब्द्रा कि किति खाल खार सम्मणि त ্র ভার প্রকাশ করি বদি ক।ত তেখা গ . रामारा (प्रियः) यात्रह पुढिल (३ राप १६ क जिहाइ विस्तरमाण्ड किया व्यामा करि। পামারে বলহ তাহা দিব নিদ্ধ করি।। রার হৈল তব সামে ক্লা দরশ্য । এহান তোমারে আল করিব অর্পণ।। बाध राज छ।न भाग घो।हेना क्रांनी गास थए माशी आणि करत हिमालि॥ াৰ সনে মাতৃ জাৰ সম্পাণ ভাল 🕽 ইহা ভাবি যুবরাজ ভারে শাসী বৈল।। अमरता यानिनी गामी फारक स्माकत । अनिया तम श्रुनि धनी भएक निनाः कर ॥ ७ थन विलाइ विधि आगास विनुध । অ'শায় নিরাশ্রহল নাচইল স্থা! ্বনের প্রতি তবে কহেন তথন ১ ि मिश्रिया वरनः भागी तिभिक (कथन।।

তোমা হেরে হয়েছিল বর্ড মনঃক্ষার । म नूर्थ अनु भ ज्ञि मिल य आमात ॥ या ह्वीर इहेशास्य क्या : न व्यानाव १ আৰিত মানি নী মাসী ক্লেম ভোষাৰ।। কিবা নাম ধর ভূমি কছ বাছাধন। কি হেতু দাঁড়ায়ে হেথ। কোথায় গমন। পত্য করি মন কাছে কছ যাদুন্তি। প্রতারণা নাছি কর দেখিয়া দৃংখিনী। পরিচয় দের বাঘ মালিনীর প্রতি। কঙি তবে শুন মান্য আমান্ত লাবতী !৷ গ্রেম্বিতা জ্বতি প্রাক্তর • ; ন ধনি। জ্যোতি বাবেলায়ী আমি গণিবারে পারি। গণক শুনিয়া গুন আছেন্তে তথ্য ৷ व्यभि मिल मन् इस निर्देश भारता **নেখিব কোমন বাছ। গণক আপনি।** सम् ए। ११ क्लोकल कर ए थि छनि॥ कड़ मृक्ति करि दोश मुद्ध मृनु हानि । পুণ্যবজী ভূলি যাসাঁ তব কন্যৱাশি ॥ গ্রেছগণ ভব প্রতি মন্দল দারক। অনঙ্গল মাত্র তব ধামী প্রলোক॥ সন্থানের স্থানে রাজ করিয়াছে বাস। শে বিষয়ে তুনি মাসী হয়েছ নিরাশ ॥ গর দুংথে দুঁংগা ভুমি পর উপকারী। প্র সুথে মন্ত থাক আপনা পাসরি।।

কিব ভাৰ মাশঃ ভাগা লেখি কিছু লাই চ भाव डिश्रकारी पूर्णि (म देवर्त) भनाई ॥ मारु त वशासार क्रिकामान माहित कारक <u>।</u> मार्शिता नाहि प्रिंगि एक इ उठ काए ।। নাথ হাত্র, করিবারে বড় আহে মনঃ ১ন্ট নিটা মজি তব বাজাণ সেবন ॥ 🔍 তক শুনিয়া ধনী পরম উল্লাসে। বংশ বাছ। ধনশতুৰি জেনভিয় অভ্যানে গ र, विलिद्धि कर केला क्रानिम् इयर १ रिविक कारिनाहर २, ५८ का, ग, इ. १६ १५५ १६ ত পাভির পে ডা লোকে কত কথা, ক্যা শ্ৰি জাই ভাই সই গৈলে কেবা সয়। न यात्रा इंडेक अं भयन (कार्यास ) ंग्यं स्विभित्ति राह्य वा ग्रेट्स थाया। গ্ৰাতক শুনিয়া প্ৰথমণীয় বচন 👔 ात वरन खन मानी मः विवास ॥ रह**्तम** ভनि आगिश हि आमा कवि : ध्धारमा विभिन्न किछ दिन नाभा कवि ॥ উপযুক্ত বাস স্থান পাট্। কোথায়। ল'বিভেচ্ছি মনে তাই ধয়ে নিৰুপায়।। শুনিয়া মালিমী কছে ভ্যনের প্রাক্তি। च्य नामी हनाम वाहा आगि मुख्यी अचि ॥ कर भूगा करिकिनाम जमा जमारित । म रहेज विनाम मामी आया अधिनीति ॥

নি বলিব প্রে হাণু আনি অন, থিনী।
বাড়ী নার থেরা আছে থাকি একাকিনী।
দুল্লী ম লিনী মানি বলিতে না পরি।
নমালার হার যদি নোরে দয়া করি ।।
তবে আনি দিব বাস। করিব হতন।
আসাধ ত্রেমার হাহা করিব সাপন ।।
শুনিয়া ভুবন মনে পিরিতি পাইল ।
বাল বিনি ভাল মন বাসা নিলাইল।।
হা করেন বল নার কি বিলয়ে প্রয়োজন।
মাহা হলে বার কি বিলয়ে প্রয়োজন।

معتقبة أنها، المالات

ज्वस्वत्र शह्म मानित्र गाँधी गहन ।
शीख । व्राणिनी शुवरी
खान जाका (ठेका।
खन विद्य (कामाया भारेया मुना
व्र दामा जुनना विषय ॥
ज्वना (य (म अमाध्यः माधित्म
स्रेत मिन्द्र, (म (य कजू आवाध्यः,
जाध्यक्त नया। (का जुम्म अनिक्यः,
(म्ल्यर कत्र खनुः, (महाई। नय सर्ग
अखा, जामिर निम्ह्यः॥

### ( 37 ) FAMÉ ( 277 )

प्रिया मानिनी खाँछ, परिष्ठ मधी जिल्ल शांभि शांभि मधूव उठन । ত্ৰ বাদে যাব আমি, তাহা কি বলিবে ত্ৰি-मार् मम (कार्य घडन ॥ श्रष्टक रारवत वानी। भारत कतिया धनीन বলৈ মধা ফ্রিড কংছে । ेवा भव्य याष्ट्र- ाग आंगर निभ पुः এম ব্যক্তা ঘটিকে সিবার ৷ নামর জান্ত মন্য, যালিনীর বাদী গ্রায় वाना किविशास तनगङ । ं ति कालिक। ठरना अपः खाउँ शाकी सम् সাধিবারে আপনার কাহ: ॥ ए दक्षिया भिक्षर एम, कहिएइ मथुर छ। एम, এই দেখ আমার আগ্রায়। েকি বাছা একা কিনী ভাল নক্ত শক্তি জালি, विनिनाम (कार्यास्य निम्ध्य । **७३ लइ** फिना यह, शांक तथम निक्रहतः নাহি হও বিষাদিত মন 1 ালঙ্গ পালঞ্চ আদিঃ তাকিয়া নহাত্রি গদি, ইহোপরি করিছ শয়ন।। याहैव व्यापि वोज्ञाति। थाना छ वः किनिवादि। নাত্রে হবে কারিছে কোলন ।

ভূমি বাপ: থাক ঘরে, সাসি আমি ভরা কন্ত্রে কিছু দ্রুত ক্রি আহ্রণ ॥ রায় বংল দালিনীরে, অতি মৃদু মৃদু হরে: ্ৰ মাৰ্শ এই মূজা লহ। আমার নিমিত দিব্যঃ জলপান যোগ্য ভাষা-ক্রর করি আনি ভূমি দেই।। শালিনী বলে তখন, বল বাছ। একেনন, यमुम्बि टबिल अभिनि । যদি মুখ লগা ফলে, নিকেতনে উত্তিলে क मो वरला (मिथ्रा मुध्यिमी।। यथ। (६) ११ भव भटकः । উপহরি উপলকে। নেবা কৰি কৰি দৃংখ কয়। রায় বলে ভাল ফের, উপার কিকরি এব, ন। খ্টলে মনোভঞ্হয়।। সেই ছেতু অনুমতি, পেয়ে ধনী শীঘুগতি, উপনীত বাজারে আসিয়া। হত দোকানির ঘরে, নান। তাব্য থরে থরে, বাথিয়াছে শুসজ্জা করিয়া !। দেখিয়া হইল তৃষ্ট, সুপাক সুরস মিষ্ট্য गर्स जरा जाहरस श्रह्त । लूहि मानाभाषा भूति, शत्रुषा जीनि कहूती, নানা বিধ গজা সুনধুর ॥ বস গোলা ছানাবড়া, সন্দেশ গোলাবিপেড়া। कीत नव विश्व तमक्ता।

িল্ডিয়া মতিল্প লে সৈক বুঁদি আৰু, (महादी धनारि। भरगहर ॥ ं हेत् अवधीयहः चच हाद राव रहः পাজা আর্হি অবিক প্রকার। ि। विक्र **क्य क**ि अवगरी इस कहि। উত্থিল খার জাপনার ।। िया भारत हाए। जिन्हा छ। दिशा नृत्युः अन् अन् स्टार श्रम । र्भ आका सम घट्टा स्थान कि अर भीटन राव केहा नतर एकावन ह ্লিনীর প্রতি করা ওয় সংক্রে এস্থয়, खाना मानि एक ही नगर । ্রতের গিয়াত ত্মিন কলিছে। আনিক্ষে আমি ठाउउ थालाल मामास ॥ গণলোতে যেই দ্বাং নিকাণ হয় গো নিবাং काई वृति दशेरव एक। । ः त्नव मृर्थ श्ली । स्निया अस्टक शुनि, স্বিনয়ে বলেন তথ্য 🛚 ंयमा मानिकी छ। विः नाहि शृध नाहि साधी, কি কোথা পাইব বাছা বল 1 নাছি ম্য কিছু ধন, শুন ওরে বাছাপ্ন,

তোगा परन विधि गिनाहेन।।

্তানা ছেবি আদুমনি, প্রফুর হইল প্রানী।
পাসরিন মানর বেদন ।

থদি বল ইছা কৈন্ তাহার কারন শুনত্মি বিজ্ঞ জান বাছাধন ।।
সূহকের আছে নাতি, বাজা হৈলেও অভিনি

করিতে ১৪ অংতিথ্য বন্ধ । লক্ষ্যাপেয়ে দে কথার তেজন কবিল রাখ ভিশাপাতে করিল সংগ্রাহ গ্রাহা

अप्तरकरक कर्त्वस क्यून । अथारन जुद्र राष्ट्र क्यून ग्रिंग भाग ४॥ भूम, इकत्व उत्तर्गन्तक राष्ट्र

----- ( The

প্রমণীর গ্রাম বাসিনী দিগকে স্থাদ দেওন এবং নগর বাসি নীর গণক নিকটে নিজ নিজ অভিপ্রায় গণান। প্রার।

এই ৰূপে ভুবনের পোহাল রজনী। প্রাভঃকালে গাত্রোত্থান করি গুণমণি।। र्यापी कहातियः करत निक्रति पादन । ি নি হত জাতঃক্রিন ইকল স্ব'পন ।। ্রপার রশিক র,জ ক্ষরি স্থান হান হ त्रका कार्त्व किन्न कर्या रेकन स्मार्थन स <sup>ুকি</sup>পতিৰ ধানাবাজে স্বাধান্য প্ৰকাৰে। াবিকথা মহিত ধাৰিতে আহি পাৰে 🛭 प्रसार **इक्ट**न हिंछ न<sub>ि</sub> इय खिरा। ন প্যাপ্ত প্রস্থান, ক্ল্ ংকির !! · तक्क साहि सिक्षः क्र करत प्रथमके १ ম্বেক্ষতে দেখে আর্মি গ্লিষ্ট কপটে ট্ भठ मह भूजागा है है ज खरात । শ্ৰেষ্ঠ, কোন চেনে স্মাধান করে : পাছ্যৰ পা ভাৰ দিয়ে প্ৰতি বাড়ী বাড়া। বার্ত্তা কেব সকলেবে করি ভাড়ত ভিয় कात खन मगानाम खाल्यां, नामकः रफुई आणुर्व एक शंवर अग्नरह ॥ তেমন পুৰুষ কোথা নাছি দেখি ভাবে। ংসিকতায় পুণ কত ওণকৰ হাৰ।। ভাহে ৰূপ ঘোৰ অন্ধকৰে নাশকাৰী ৷ ভানজ নিশিত হয়তাৰ অঞ্চ হেরি। কিবা তার ভুক্ষণ অতি মনোহর ঃ যুলধন হেরি তাহে বাথিত অন্তর ম মন্তক বেষ্টিত শোভে চিক্ল চিক্র 🖟 কি সন্দৰ আমা তাহে হাদ্য স্মপুৰ ট

জ্ঞানি হৈতে পাঞ্চাবে করিয়। বন্ধন । करीक मन्त्रांन नहि एवि क्रांच मन !! শতী তুল। পতিবতা মৈই নারী হয়। তারে দেখি তার মন মজিতে ভিশ্চতা । শুণকর নাম খবে থানের সাধার ১ ৰস্বতীর মনোন্ত রসিক নাগর ॥ ভাৱে দেখি मादीत উথলে কাৰ কুল ; निक्ता करिन (में भगतिक क्षेत्र)। ভুলা নাহি দিতে পারি ভারি তার ওলে। गत्। व । छ । दन् एक भाग । व्याभित एम भाग ম;লিনার প্রমূপে শুনিল: এই উক্তি। র'মাগণ সনে করে পরস্পর যুক্তি ॥ প্রথমতে। বাহিরার কতগুলি বুড়ী। যতি হতে উত্ত প্ৰতি যায় গুড়ি গুড়ি। যেই ৰূপ মনোবার্ত্তা ক্রিয়া আইল ঃ সেই মত বস বাজ প্রত্তাকে কহিল!! ফলাফল আৰু থেই কৰিয়া শ্ৰবণ। कुके इर्ध यस वाटन कविन भवन ॥ ভংশরে আইল যার বন্ধা দশা ছিল। मनागार्थ भनावादा मकत्व विभव ॥ ভবিষ্য বাক্যভারা জানিয়া তথ্য ৷ गगरखारय निकदारम कविन भवन ॥ অভঃপার নবীন যুবভী কুলাঞ্গা। कि कर कल्पन कथा ना इस जुलना ॥

পেনী বিশাইয়া তাত্তে জ, গুণালাব। মন্পানে মত হয়ে ভ্ষের বঁকার ॥ निकात इमक्ति जनकः चल्छ । । দল্ব কজল বিন্দু তদ্পরি ফিত ।। প্ৰবিশ্ব সম এছ ভাছে মিনি মুতা। দশুপাতি যেন মতি কৃষ্ণ সূত্রে শ্রীথা। ेला বস্তু পরিধান। গন্নী কুঞ্র। - क्ष मिका सर। करा मंडा । । ালভাৱে উল্টেল্ছাম চর্মিত। पन्छती परक राक देशन उपनी छ।। ं नामूरण मृष्ट्रात वाल नानिनीटन । , कथारिया अस्मेर अहि का हिस्स स्थित है প্রথমণী বলে এসে। প্রাণের ন তিনী। িক ভাগে: উদয় আজ্ হয়েছ না জানি 🗯 জাসিলাম ডবালয়ে গণক দেখিতে! ন্ন কিছু মনোভী ট হঠবে গণাতে ॥ বিষয় আছেন রায় পালম উপরে। মন্থ আইল ধনী অতি বীরে ধীরে ॥ ুখনেরে নির্নাফিয়া ২যে চমৎকার। দীড়ায়ে রহিল চিত্র পুত্তলিকাকার ॥ গবেধনী একি ৰূপ অপ্ৰূপ হেরি। কোন জন আইল গণক বেশধরি॥ विवरन विभिन्न विधि मङ्गाहेंग्रा मन। তবেছে নিন্দাণ এই পুৰুষ বতন।।

शुक्तां भाव । धेरे दाक चार्य जिल्ला । বসত রাজার সেনাপতি যে মদনাঃ শুনেছি ৰূপের শুক্ত ন্যাদিখি নয়নে ৷ বুলি নাহি হয় লান, এব বিদ্যমানে । এই কপ ভ্রানর কপ নেহালিয়া। गत्न बरम टोर्ट धनी व्यक्ति क्रेया॥ हार परण किया कारण उत्प्रक घृटकी। অন্তরে দাঁ,ড়ায়ে কিবা করিছ্ যুকতি 🖟 অনুনি যে গণক নাম পরি গুণাকর। চিত্রভানতি কিল্মন অলোচন।। অন্ত্রেশ বলিতে পারি যার হেই ইন্টা भणभारत बाहिक किए जातांत जान्छे। **ফ**ভিপ্রায় বুণি রাম গণনার ভাবে : সর্বাণ পীড়িত। স্মাচ পতির অভাবে। गलिन इरप्राप्त एवं भूते शृह हेन्द्र । কাগাদি বাড়বাগে উৎক্ষিপ্ত রস সিন্ধু।। (शेरम उराइ जार शाना शहेन। অকূলে পড়িয়া তব দুকূল ভাসিল।। ভাষতি দুরন্ত বর্যা বাড়িল এখন। বদনদী একাকারে ভাগিল ভুবন ৷৷ গগণে নিবিড় নেম্ব দেখি আকর্ষণঃ হৃদাকালে বিভে্দ ঘন করয়ে গর্জন।। 6িন্তাবায়ু যোগে তাহে করিয়া চালন। ठका इत्वं मूळ्यताबि मण दित्यण ॥

इंडिकांत वज्या छ इस छ। दिव । आज छिल् भिना मुख्ये याप्य निवया ए + हेर्ना**एक मन उ**व छेशना हक्षाता । াংধৈৰ্য্য প্ৰবাহ তাহে হয়েছে প্ৰবেল ৷: কিছু বলি শুন ধনী আমাৰ বচন ৷ 🤉 দিন থাক দিয়া সভ আছোন।। ুণত **হেমন্ত অন্তে হবে দুঃখ** অন্ত 1 াত পাইবে কান্ত জানিছ নিতাও॥ াত্র শুনিয়া ধনী আনন্দে অপার। ্ব বোল বলিলে ছিজ শুনি সুধাধার।। ালার প্রসাদে মম কেন জাগ্য হবে ৷ াণনাথ আনারে কি প্রতদেখা দিবে। ্যাছৌক পারে হবে অদ্যেটর বসে। ানে থাকিব বল সে গ্নের আশো। ংবহ তাপেকরি অব্য প্রাণ গেলে। ি আর হইবে পাতি বসন্তে আইলে॥ क इलाम (कन इस भनक निकटि। <sup>দক্ষ ভ্বিল মম পড়িবু স**ক্ষ**টে॥</sup> াৰ্ক ভাবেতে আসি তমি কোনজনঃ <sup>्ट</sup> क्या भारत भन कतिरल इतन ॥ কেন্দ্ৰে যাইব ঘরে না দেখি উপায় ! অাথি নাহি ফেব্ৰু পদ চলিতে না চায়।। অণার প্রবোধ মন নাহি মানে বর্গ। <sup>53</sup> श्रिम् **अ**<u>िवाटम श्</u>रह्मा देवहांगा।।

হট্রা প্রেমের গুরু যদি দেও বিকাশ তবে অধিনীর প্রাণ ধর্মা হয় রক্!।! कां ि कुल मान मध्या कि हुन। हि हा है। নেৰাদাৰ্শী হলে তব সঞ্চেতে তেড়াই ॥ चाय वरता कह धर्मी धनिः अभन्नुत । শ। পারি বুঝিতে ভাব তোমার এসব।। বিদেশে এসেটি আনি কিছুই সাজানি ৷ ভ্লিয়ে একন পদী চতুর প্রিনী :: त्रात निक्ष ज्यकाव श्रॅले यामस्य । सरमा ५ छ । रेकाल नश्न रकनाद ॥ ন করিয় নধ্পান এতেক দুর্গতি। পান কৈলে প্রাণ বাহিতে নাহত শক্তি। উভয়ে উভয়ে দেখি এই অভিপ্রায়। गति बाज नका तरः, त्लांक नाक नास। अनक शोष्ट्रायमी मृश्यिका इहेता ! নিজালরে জেল পরে বিদায় লইয়া।। करम करम नशव विनिनी आवदक। গণায় স্বম্পোভাষ্ট আসি নিত্য নিত্য ৷৷

রাজ কন্যাকে দেথিবার জন্য ভূবনের উদযোগ। পয়ার।

এই ৰূপে কিছু দিন বাস করি তথা।

গৃতিল ভ্রনের ছ্দাবে ব্যয়: 11 ंडिनीन व्यामानल ना ट्य जिलीन। ্ৰনিশি সেই তাপে দহিতেছে প্ৰাৰ।। ালনে সন্তোষ নাই শয়নে যাতন।। 🔠 मोहिक गत्न मनोहे विगना॥ ক। সে যৌবন। অতি গুণবতী নারী। 💀 াল পূর্ণ দিন চিন্তা করে ভারি।। ্ভাবনা বিনা আর অন্য নাহি জানে ' ्राहेश्य सम्बद्ध मना छोटन सत्ना। ংক্ত বিবেকী হয়ে বিদেশেতে আসা বিদেন ভগৰতী পূর।ইবে আশা ॥ ्रित्न यम मत्ना यांनम् शृतित्यः। ः। অতে সুথ সিদ্ধ কবে উথলিবে ॥ াধীৰ কৃপায় তাৰে যে দিনে পাইব। . यथा तम भगी आधि रुखू ना इंडिन ॥ 😥 রপ বহু চিন্তা করিলেন রায়। াবলি চিন্তিলেন পাবার উপায়।। াদ অট্টালিকা পার্শ্বে মনোহর স্থান। ্রামবিলা**সক নামে উত্তয উদ্যান।।** িডঃ নিত্য একাকিনী রাজার দুহিত। । ানা রঙ্গে জলক্রীড়া করে আসি তথা।। এইনী আছয়ে তার চত্তপার্মহারে। থাকুক অনের গম্য পক্ষী যেতে নারে॥

লনেতে জানিয়া রায় তাহার সকান। দ্বশন করিবারে হয় যত্বান।। শু ভযোগ দেখি যেগে করি কালিকার। अपन देशम देशम अम श्रीदर्शित ।। গ্ৰেভ্ড বজাইয়া তারা পদাযুকে। তলিং বন যুৱর।জ দারির ননাজে॥ প্রাধান বন্ধক কাছে দুইয়া উদ্ধা ! ছল প্রকাশিয়। রাঘ তার প্রতি কয় ।। खन खन दिन शह उन्। न उक्क । বৈতে পারি ভবিষাং, আমি যে গাক। গেছে শনির দৃষ্টি তোমার উপর । द्विलान ७१ कर्छे इर्ट बङ्ब्द ॥ करव कि विश्वन चर्छ वना नाहि था।। রাজার নিকটে বুঝি মস্তক কটায় ॥ अभिशः बारूक नेति भनक्ट मृथ्य । যোড় হাত করি ছারি দাঁড়ায় সম্মাণে॥ কি বলিলে বল প্ৰান্ত শুনি তব বাণী। हिया मृतमृत करत दिव नरह क्षानी॥ কোটিং নমস্বার তোমার চরণে। क्मारन पद्मल इस रनाइ अकरण ॥ নায় বলে আছে বিপি ইছার কারণ। **जान इत्र धहरमरिन कतिराम अर्कत।**। श्रम्भी रनस्य श्रम् अरोग्न मागस । দ্যাক্রি যদি পার কর্ছ আমারে ।।

इ वरन हिन्दा माहि कर घारताना স্ক্রিক যতনে চেফী ভোনার কল্যান গ ীৰও বলি শুন এক আমার বচন ঃ ্জা হেড্ চাহি স্থান অতি সজোপন ট িখিলাম এউব্ধন মধ্যে যোগ্য হয়। ्रांडिय गाहि छान क्रांतिनु निम्हिस ॥ 👊 গুরু মহাযোগী আছেন যেজন। ্তনি আসি করিবেন একার্য্য সাধন।। ं निया बगरक करह ऐन्डान अहरी। ্ড কথা বলিলে প্রভু শুনিয়া শিহ্বি।। ব,রা সবে রক্ষাক্রি এই যে বাগান। শ্ৰদাধ্য নাহি হয় ইথে আগুয়ান ॥ া।ছে রম্য সরোবর ইহার ভিতরে । अञ्चलना निजः **वामि जनजो**स्। करद्राः। আয়রা নাহিক কবি কখন প্রবেশ ! ি আছে কোথায় তাহা না জানি বিশেষ।। ্ৰিলাৰ মম প্ৰতি হইলে নিদয় 1 धविश्राप्त त्यांत त्रका ना त्रिथि निक्ठय ॥ বিলান মধ্যেতে কেছ যাইতে পাবেনা। धर्मिकात कर्व ना श्रव अर्कना ॥ বাৰ বলে ত্যঞ্জ িন্তা এহে মহাবল। অবশ্য তোমার হবে ইহাতে কুশল ।৷ শামান্য নহে যে সেই মহাযোগীবর <u>৷</u> কি সাধ্য ভাঁহাবে দৃষ্টি ক্রিবেক নর ৷৷

जामांत कांत्रण जिनि पत्ता श्रवानिता।
जामांत कांत्रण जिनि पत्ता श्रवानिता।
वाक कना। कपिठि जावित गर्मा हरेत।।
जानाताम जिन कांत्री मकल रहेत।।
हरा श्रम जानित्व रहेत। श्रद्धी श्रम्म हरेत।।
श्रम श्रम जानित्व रहेत। श्रद्धी श्रम्म हरेत।
श्रम श्रम श्रम हरेत। नित्रोगित।
वात्र वाल मिट्ट कांग्री मिकिन। १६८०।
वात्र वाल मिट्ट कांग्री मिकिन। १६८०।
वात्र वाल कांत्रण जिनि कह ना जानिता।
श्रम वाल जाहेतन जानम जाहात।।
क्राह्म वाल जाहेतन जानम जाहात।।
क्राह्म वाल जाहेतन कांत्री रहीतल।।
पान वाल जाहेतन कांत्री रहीतल।।

ভূবনের মোহিনী দর্শনে যাত্র।।

লব্ ত্রিপদী।

অন্ত গত শশীঃ সুপ্রভাত নিশিঃ
পূর্বাচলে ভানু চলে ।

চল্দুপত্নী গণঃ হীন দরশনঃ

হইল নভো মগুলে ।

কুমদী মুদিল, নদিনী ফুটিল,
ধাইনা যুটিল অলি।

नाशद नाशदी, गत्र পहिङ्गि, विष्कृप कहिला कलिया त्र†किल युक्ताद्यः कुर्ः । अग्रः, वात्र नाना शिक्तिश। দাপতি মিলিয়া, আনন্দে মাতিয়াৰ ভ্ৰাণ ক্ৰয়ে বন !! यातिया खीइति, शार्याणीन दर्दि, তৎপরে রাজ অঞ্জ ৷ সানদান করি, নিতা ককাচ্চিন্ नहेंय! बक्त शक्क ॥ ठम्मनोक कति, इंग्रेग्स्टर याति, मिनाश्चिम रामि वामि । করে বহু স্তৃতিঃ অফীংফে প্রণতিঃ व्यष्टर स्टा উद्यानी !! পরে রসরাজ; করে যেনি সাস, কি কৰ ভাষাৰ ৰাণী : हिक्न हिकूत, घूहिय़। श्रह्त, इस्म अहे। दन्नी ॥ কর্ণেতে কুণ্ডল, করে ঝলমল, যেন দ্বিতীয়ার লশী ৷ ভাবিনী অভাবে, ত্যজি নিজ ভাবে, क्रेटलग्नव नग्नानी ॥ পরা বাঘ ছাল, গলে হাড় মান: বিভূতি অঙ্গে লেণন !

চাই মাথা কায়, কেরিলে বিকায়, भाव कुल नातीशव ॥ ক্রে দিয়া ছাই; তাহার বালাই, लहेदा स्य ध्यां शिमी । ক্লিকৰ সেভাব, দেখে যোগী ভাৰ, खोरि गरत विविभिन्ते ॥ विव इस्त द्यमा स्टाम विकास वाभना श्रहा बांच । रात के भी काली, भीनरभ अक्षालि, कार्याः भनायुद्ध द्वा ॥ ভাৰে গ্ৰহ গ্ৰহ, ী সুখোদিত হৃদ, हां द बाक्ति भन्न । अंक वन कति, व्यक्तिश श्रीहर्ति, প্ৰথম কৈব। তথ্য ॥ च्यानि थीर् येरह, वाशान (शांहर द ন্তারি অন্তে উপনীত। ष्ट्रांत्रभाग भव, कति निदीक्षण, প্রণমিল যথে। চিত ॥ করি তাড়া তাড়ি, দার দিল ছাড়ি, ভগ্যে প্রবেশে রায়। কিবা সে উদ্যান, ইন্দু যোগ্য স্থান, সম জান করি তায়।। তাহে পূপাবন, অতি সুশোভন, কি দিব উপায়। তাব।

अर्गाक कावक, किल्एकामि वक (पशिष्ठ हमक्वोद ! বলুল টগর, মলিক। স্দ্র-वक्रमी शका ठण्याक । হুদ্ৰাতী জুতী, গোলাৰ সেঁউতী ভর্ণতা খরুবক 🔢 ছাঞ্চন অতসী, শোভে রাশি রাশি: পারিজাত মনোহর ৷ জবার কিরণ, রুধির বরণ ভানু মণি বহুভর ॥ চন্মলিকাদি, হইয়া আম্দি, गृशिक योधवी लङ। । ৰম্বণে জড়িক, অতি নৰোণীত, প্রকল অপরাজিতা 11 কেতকী দৌপাটি, বিকশিত খাঁটী, প্শেভিত প্রমাজ। भिका किन, आंत्र कृष किन, গদ্ধাষিত গদ্ধবাল ॥ করবি পন্নাগ, শতভিক্র নাগ, कांशिनी कम् लाविधि। ক্ষু দাড়িয়, বিভীতকী নিয়, বাদান গুৱাক আদি 🛭 সুমিষ্ট সকল, নানা জাতি ফলঃ পরিপূর্ণ তরুবর ।

आंग जामलकी, मुशकु कचिकी, वनिवनि दिखन ॥ দুপ্র গ্চুব, আছ্রে প্রচুর । न्तम युक्त वक्त । क्ष रव अभा भूशिनाव अभू = विकल आगतन ।। ्यामी जिक्न, वाज्यि दर्मानः भिठयन (य ममन । সালাদি গেয়াল- সরসাল ভাল-(नामना (मर् दिख्य ॥ ্রা শ্রান্ত সকলি প্রভৃতি কদলি ব্যা অতি চনৎকার। विधित श्रकांत्र, आष्टाय छ। होत्र সন্দোভিঙ চারিধার ॥ ल्ला महावयः अति भलाद्यः वाका घाडे क्षाउदाउ । ্যুত নীলপীত, বড়ই শোভিত, সোণায় জড়িত তাতে ॥ ম্যাসিত জল, তাহাতে উৎপল, जात्म अकृत इहेरश । गत्नत व्यानतम्, ति व्यवितमः **ज्य विम मधु शिख्**॥ (म जल हिस्सारमः जोशंट मेबारमः कतिष्ट यथुवध्नि ।

নিনা দেখিলে প্রাল ইইনা নৃত্য করিছে অন্নি ন চাতে পঞ্জন অন্ননি কাল পালেকতে ক্রিয়া ভারে । লাক ভাল ভঞ্জা এই ইপা রঞ্জ ভক্তে সদা বিহারে । লাক কলোলা, ভাইজার বোলা ভ্রিয়া জ্বিয়া লালে । ভালা চর: ভালে বিহারে ।

#### - A B

#### भाषा दे ।

বিহারে প্র ব নালা প্রিক্রণ ।

ক মন্ত্র হয়ে উল্লাহিত নালা।

তিল্যু প্রাংশ পাষ্ট্র চাতকী ।

কথাকি পাশিয়াল প্রেলত ক্রানে।

কথাকি পাশিয়াল প্রেলত ক্রানে।

কথাকি পাশিয়াল প্রেলত ক্রানে।

ক্রিকে পাশিয়াল প্রেলত ক্রানে।

ক্রিকে পাশিয়াল প্রেলত ক্রানে।

ক্রিকে পাশিয়াল প্রেলত ক্রানে।

ক্রিকে বিলিক করে কোলাহল।

ক্রিকে ক্রাদি গান করে চ্যাংকার ।

কালাহল।

কালাহল।

ক্রিকাদি গান করে চ্যাংকার ।

কালাহল।

ক্রিকাদি গান করে চ্যাংকার ।

अजिहार क्षितिक गांक भाग दें। दिल हिं। अफ्यकी अहेक ठेडेका अस्तिपूर्णिल ॥ হরিভান্ধ করে পুনি স্থাব ভলেচেচে। करवषे, वात्रे हो। बदा स्वः मान्य्या । ।। महेशाल जिसराय धलाकामि सहि ६ किं के नामा मन्या पृष् अक्सोबी।। প্ৰভৌতি চকা টকী বসন্তগোটাৰ গ र्रेंस्थायन कोचना उर्शिक्ट यसन ॥ स्टारक अन्त भनीवन मलया निक्छ । देवाहे जान हैं हैं । स्थाप हैं हैं व्यक्तिया अलिम् कृति स्विक्ति स्वार्थ भौक्षा स्मारं भार क्षा, ज्ञात ॥ भवन्त्रत एक । एवं भारते जीवन व ४ गान्त जाताक रहा राहाछ विश्वत ॥ একের দ্বিভি পার অনুস্থ প্রহারে। ভিলাল প্ৰিভে ধৈয়া নাহি রাধ পানে । ভাৰাতে পেখিয়া দেই উন্যান শে ভিত ৷ काल हैत : ध्यारवरम हरेता शीक्छ। व्यक्ष मण्ड लानिवात मः इव वोत्रव । भीवाः। एजन इत्र युद्धाः कीदन ॥ নে মানা ২এখ জলে জলে আন ছলে। উতিয়াদীড়াথ ব'ল মহাব্যুণ তলে ১১ ভাবিলেন কামরিপু করি আবাধন। মরের শবের জালা করিব নিশন ॥

খাও চিত্তেতে শেই ছাটোতে বসিহা। म नग विन पन इयस क्विया ११ ा उन्हर्म निशु अर्थान व्यक्ति । प्रदेश नगडिलाग् टिनिश्च । বাৰে বংভালি দেৱ হলে হন । - करतम जाग इंद्रेश शहल ॥ इत्तर कवि बाह्य १ शह शास १ া পুৰ্বাকে ভব কান্ত্ৰালে চ िश्य अस्ति दिस भाग भीव १ ান শিখন ক্ষিণে কৰে ক্ষেত্ৰকাৰ চু চাড়াৰ দানে তেখে আন্তৰে পুৱাৰে : 'ংতি মতি যেন থগ্য তব পায়ে।। नक विश्व कृषि हाल अधियानी। ाज्या भारत भूम हे जिल्लाल (काला 18 ्छि ভূষণ दाः मु छ। ज गहिबान ६ ं बंद श्रेवीशीय कुलिया एडान ।: १८९५ वरवादम् दस् स्वाज शाला। ্টভিন ডিভিডিম ডাকতে তালাঃ পান মহিনা তব মহীতে কে জালে। ্হিত করিলে দেব লেবে নিজ পান।। ं राजी डेके कि जान, विविधी। াৰ করিলে বজা বলীবদ্ধ ধরি।। कांक बर्कन कवि विष किला भाग। ্রাণিক তালিত্ব শ্রাণান প্রমণ্ড ।

তোমার মাহাত্ম। প্রভু বিস্তার প্রাণে। ত্রিপুর। ববিয়া কৈলে নিভয় গাঁবলৈ।। ननारि जन्म गम धरिया । ना हन । ক্টাক করিয়া ভঙ্গ করিল। মদন ॥ ইভানর প্রভু ভব ইচ্ছাই সকল। কলভেক হায় দান কর গোক্ষল ৷৷ অথিল ভ্রার দুনি পশুগতি পতি। যদি মতি কর নাশ কর বসুমতী। श्रदः अम् भाव मृष्टि करतः भेक्षव। **ज्वे थिल। नव भए भगधवयव ॥** चर्न कम् एन गर्ल, उनि मुर्ख मुख छूमि अका पूमि छुछै जूमि शर्व शर्व। তৃষি লোভ তৃমি প্রভূ অপমান মান। তৃষি শোক মোং তুমি দ্নি জানাজ্ঞান।। তৃমি সন্ধ্যা তুনি বালি ত্মিপ্রভূদিন। छवे मया कोटह इस बच्चिन कीन।। शालाद्य क्षन्त्राह्म जनाद्यवनाथ। বারেক করহে দৃষ্টি হেবস্বের তাত ন ज्यसम क्रमात मरमामृध्य इत इत । म्या कवि मीटन दिन निशन्नव दर।। এই বাঞ্জ করে প্রভু কাতর কিন্ধরে। মনের বাসনা যেন পূরে এইপুরে ।। এই ৰূপে বহু গৃতি কৰে ৱধ্যয়। স্ণক্ষেপে কহিনু তাহা বিস্তার না হয়।।

# जुवन स्माहिनी के तान मर्मान ।

शीखा। हाशिशि रें अवः जान जाड़ा दिना। मृथानन क्रेंग यह डेंन्स शीच्यिक्रियान । मारानन निर्ध गमन व्यावादि विश्वास ॥ क्रिमिनी शूम शिक्त निर्माणांड डेम्स म्हल, (स्थान भगना मृथ्य) मिरे क्षा मृहें जाता। स्थाहुते म्या राम, शाहेन जुमि यन वह, मृद्धि रमूद्ध वह धन, श्रीराह्य (स्थान महना।

দীঘ ত্রিপদা।

তেনেরে সে মোহিনী সুবেশা হয়ে ধনী,
তাঁজ্য করি সঞ্জিনী গণেরে ।

তেল গমন হলি, নিজ গুটো লিপ্ত করি,
গাঁরে ধীরে উদ্যান ভিতরে।।

বৈর হলৈ আদি, যেন শশী রাশি রাশি।

বির ক্রমী স্বিয়া কিবলে ।

রবি শশী যলিন কিরণে । গণেদ গর্বনাশয়, সেপনী খীন নাশায়, কুরঞ্জিনী লজ্জিত নয়নে ॥

মুখা, ভুল নির্থমান ডাকে জলকা ধর্ণিক (यन होएम हारम्ब श्रकाल । দন্তপাতি পুণাহাল, পক্ৰিয় স্থাকার ७७ जीव जुम गुनू दान ।। कर्नि कर्मा माहे। तिनेपाल माहि भारे াহে অলফার শে.ভ বর ! দেখিবা নস্তকে কেশ- আপনি আপনে দ্বেফ -গরে শিক সলিখ ভদর ॥ ভাগে নিৰাইত দেখী- লোলে যেন জাল কৰ্ गान। गरि विक्रिकिक छ है। शिटीकः कृति जारिः धार्यय करिका गर्नः 打断河南河州(中四)江河河南河 কা প্রাপ্ত মুক্তার নাম রার গ্রামানার তদ্পরি দেশলে বলু নর। পশুপনি হয় দঃখ্যি সেই কচিউট দেবি আহে নোটে নাতি নাগোৰর। ভিতত্তে **অম্ব** চাপত উঞ্*বেশ* রয়। চাঁপ ভয় জিনি ভাতি বুংলাগল। হার লগ্ন করি ভার- তাল শ্না অভিপ্রান थल सात्र किरमच एका म ॥ शृनं शक्त नरह निश्चित वृज्यान कमा मिन्टा छन्य आधि रन। বিষম সপার ভোরি- ফার্নস চক্র টোর रक्त **ठाक विति कि गु**जिल ॥

थाय नटक् इन्स्निक, समार्था समर्थक, অ'বিল কোনে ছিল ওপ্তবেৰে। ্বাসাভিন দেখে তনু, টিক্স,বিল্লাভূক পনু, क्षम भए विश्वित्सक अस ॥ 'ক্কৰি কিকৰি হায়, দলি মনি প্ৰাণ মানঃ टाहियाब मा निध छेलाइ। ायत्व माखिलाल, जन्तून श्रीरेन स्मरन रिमलाकाशी जिल छाए ॥ य लात वीहरू मिन, शाहे मध्यी अयपि: वाक (मार्थ भिष्ठ कवि अधः ; নরছালী নিবাবিরা, খবে প্রতি ফল দিয়া, कृति कान अर्गावन जन्म ॥ े विनिद् त्य भएरम्, कड्या माहि काद स्टम् विश्वात मकारूप जले। নাম মান এই ভাবে, কামেন্ডে উমার ভাবে, त्याहिनोत जाल पत्रभटन ॥ ज्यन ভাবেন बाह, একণ কছব্য मझ দেখাইতে নাজ দুহিতারে। मग्नि नक्तामी त्रिंश, करेना इ निधु मूची, আবাদেতে ফিনে যায় ডমে।। এতেক বিচাৰ কৰি, হোগিৰূপ পরিহ্বি, शीय बाल-ध्यकानिया देवरम । शील भीरव वाक्यांजाः मत्रनी कवि उञ्चलाः गाह वद मधात्म आहित्य ॥

क्तान पर्भन कति। पांचाक वन शिरुवि, तरम अकि उनिय हमत है। व निक्र अंभि साब व्यव क्वाई। इस्तिवा व हैं। महि कह अधिकार श · 通费者 《形图》和17图:WHATTAR 覆饰,14代图 मिनिश्च है। असि करि, बार्ट ह जरहा है भागार, जनस है दिस 研究。所以如何也不 对为自己的 माया हो का भागा, पुषियास राजार MINERALLY THE STEET मारिक्षम ६ विक्रियाः, श्विका शहरामा भारतः दक्षमान ह<sub>ा</sub> दुधा **मिल ए:ब** ३; यौक्सांस अनु मार्गः भागांना मन्त्रः छारा खानियारक रवीन महाजन । ন্ত্ৰা কেংল বলি, ভালারে মত একনি त्रमः ज्ञान पिन पत्रभागः ॥ ছুবন মোহন বুপ, দিনি অতি সর কুণ सिथि भगीत लागुन व्यस्त । वाल यति दश्च द्रांत्रः थन्। थन्। विश्व द्रा कि कल गुरुष्ट निवस्त ॥ ्रेबिया। दूबि विव**रमः अनक मिमिट्दे** वान ৰলোনীত কৰি **আপনা**ৰ ! ए हे मुक्तिल महोग, अहेनिक धनश्रापः करण मारण विरक्ष जाशिक ॥

श्रीय किया विस्ताननः । जाप तथ वयाननः म्भा ज्य याथित देश्वर । विष्कृतरभावाभि यानः क्षाक् कृषि मन्नानः फीक्न मानभ निवा श्रुह ॥ 'ন্বৰ ২ইল অঙ্ক, বাড়িল মনে আত্ৰ্য, व्याव शाहि इंग्र मध्यक । .बीतन बाउना गर, ज्यांग तल कछ भरः - न्बप्ट वन्तः श्रान्तः ॥ े हा काम अगरनात, कि इस मन्त्रम हात, मध्य क्या विभवन्त स्थि। এজনৰ কৰি কয়, উহাৰ ১৮৭ ৯০, यमश्रम् एथं मखेला (निविशः ॥ नाकून रहेशं शांत्यः खाद्य धनी सन मत्तः विधि दश्म पिन पिर्व काव । া অন্দেতে ক্ষম দিব: অধন ধনি চুমিব; रानामृत्थ मूरत थार जात ॥ पर क्रम नाना **गए**क) स्थर करव डेस्टरवृत्क, गरम गरन ना करत क्षका । ध्य वाल जान रेहन, गर्काभरन निवाहेन, विधि युक्ति शृज्ञात्म आसाम ॥ किएक मरमंत्र कोलि। अस्टत छारवन कोली, गर्म भए छाट्य दमहास ।

নিষ্কটে আনিয়া ধনীঃ বলেকে বট আগনি अंडेर्गारम च्यार रिदाल । कृषिनाय कथा छ। दः सनुषः नःहि मधुद्दः छ। नेदल प्यादेश कि हत्यः। ब्रोड स्वारम् इतिश्वातः सहस्राजातस्य काम कब् नावि ब्दशः धोनालम मुद्धी वर्षा बीक पूर्व भाग न आर्गित्व गारित ्ये त्यार्थियात्रम यान् । कामनि कि गाँग परि- "क इन क्षणाम चीडे। उम्हित धातराम भटन ह त्मपद्ध रेणेंग्र किसनः शक्षकं कि रिक्सध्य नव किए। देवसानद रख । वक कि बाब, रहानः जिल्ल कि लगी अब्रहः गांधा किया गांधु शक् शांध ॥ যেহন গেছন তৃষ্টি স্ব কাণনাৰ ক্ষ্মি, क्षाणीति जन्ह निविध्य । এ শ্লেবড় অপুরুপ, দেখিয়া তোমার কণ, रेर्म वय श्रम्भ रूप्य ॥ नाम गान कुल्यमः नेकन कति निधनः उद्भार कविनाम श्रीव 1 देइड न। (१) निवनंत्रः अशहर हिन्ने स्रोधाः विभाग पानीता कर शाब ॥ ৰায় ঘলেং করে: পিপাদিত স্বোধ্রে 🔧 🔻 छाटक कि निकास निका धात्र।

भ्यत मृद्ध यात जाएग, तम जना जामात जाएग, शिव्यक्त तर मच्चूरण में इति । विवस कि हेर्स गर्कः नेक्स अध्यक्ष स्टब्स् অনৰ হানিধা ভীকু শন ! धनी श्रांति वीय क्या, स्त्रन सम अविष्य, ज्यस्य छोरन करांच्य ॥ ात नाम राम कारण, वाक्त इहेंचा खारण, जागारणाबाबाय वाहेलाच । भ्कार यनि तर विद्यान अन्य मन्या राज् विधित श्राह समस्य ॥ ्य भूषी तमें त्याहिंगी, स्थामिया बरमब वाणी, इतिकार कार इत्राह्य । · लानिम् काम्य कह, मा शहिन् यात्र कह, दिटेन छोटा कड़वा खकारना।। क्षाविष् विवयः, जिल्लानिष् मस्तर्भ निम छव (समा का मान । पराव मान्बर छात्र। खडत कर यामात्र, ध विभएन भाहे भहिलांग ॥ दीय रेटन सम थनी, जामात स्वरंग बाबी शिविद्य किया श्रायम । वालि कुन नीमाठाव, गण एनाहि विठाव, नाहि बाह्य यदि यदान अस्।। ांडवरिक् (यहे लिहि, मन्मास्त्र निरम विश्व) म बन बहुन। इस्नानिका।

भगारम मराम बिरल, चीर उरक कोन कर्म म , नाहि जिल्ला (पन विष्वाहित्र) ।। প্ৰথা জানি ধনা গোগাঁ, কৰি বলে কুৱসাফী खर्व कृति हुई भन भरि । मानत्म ख्यान बित, भविवस्य मञ्जल्ही, ्त्रे नीति अ**भिम घुर**छी ॥ প্ৰদে প্ৰিত কাব) বসভাগে বস কা भागे लिए। भूमि देशक मनी। জেপ্ৰাৰ প্ৰাক্তিকে নেছে; স্বাড়ান্য হট্যে গোল इन्तु मुघा, एका भाषा कारी ॥ , शांबरम बिल्म हैर्थ । श्रकः व बहार देवर ना रहेत मान भूष्य मान । ্রাশায় যে দংখ্যেল - দশনে দিয়াল হৈন **रिलामा ७ अङ्ग ४० ला**ण ॥ , करह यनी कर गुर्ह, स्थानित महिना বল নাথ এখানীর কাছে : কি ছল একাশে আসা: কোপায় হয়েছে ব স কে এমন মনে ।। ্কহেৰ ভুৰৰ হাসি; আছয়ে ওণেৰ নাগী शर्मणी मानाकांत जाकि। যুত্ত কৰি দিল বাসা: কেবল ভৰ প্ৰত্যাপ্ত ् व्याचायरक कवित्य वम्बिः॥ अ**ठ रिन (म मग**न्न) छेलाम विनात देश सब यनः शतिवर्ध किति।

বালিরপ ধরি রায়- বাগান হেতে বাহিবার।
দাঁডাইল যথায় প্রহণী ।।
লগভন ওতে দাবিল তব পাকে শুভকারী;
লগভন বহুলন নবপ্রহ দেবে :
লগভবে সুমন্তলাল রাজা তাহে অনুবস;
তোমাপ্রতি,জ নিলাগ এবে।।
এত গলি রসময়; চঞ্চল চিতেতে হব;
উপনতি মালিনী আলয় ।
শহিনী লাবণ্য বাণে বন বন হৈয়ে প্রানেন
কিছু দিন কবিলেন ফ্রম্ন।

#### ~ >>+d< -

## বসন্তের আগমন। গীত। রাগিণী বসন্ত বাহাব

তাল কওয়ালী।

নত্ন বসন্তের ডক্কা বাজিল। চতুরক দলে অনক মাতিল।। মলয়া বহেমনদ, গদ্ধা পুরিলগন্ধ, পুরাসে মকরন্দ, অলিব্ন্স ধাইল। শুনিয়া ক্যোকিলের ধুনি, সক্ষান্তে ব্যক্ত গানিনা,কোলিব্নে কানিনী, বির্কিনী প্রীক্তিল।।

भीर्घ जिल्लानियन । াহন ঋতু দৈল অন্ত, এবিকট সুখে বন্দ হৈল যড় ঋতুর প্রথান। মুঞ্জিন তক্তম, পুস্প প্রফ্টিল ভার। শোভাষিত হলপ্স্পোদ্যান।। ষ্টল মরিকা জুভী। বেল অম্বর্ত। মালতী। वामछी मध्यापि अरुमी। বক্দ বঙ্লা বক, কলিকার কুকুৰক छेष्ण रज्ञभुका नामी ॥ আংশেত্রি প্রবর্চন্ম্নিরা ১৯৮ রক্রিপ্র, ভালা জীত। । कृषित रच बातकः। लालावानि कुर्केन कांगिमी छेशव जह नजा ॥ मल्लाक कन्नुन कुम, इनगक्षा अवदिन शक्य वोज्ञ अप्रतिष्ठे दश्र । ৰৰ পত্ৰে কুঠ শোভা, তাহে পুলা মনোলে! विखादिया न। इस दर्भ ॥ বসতের পুপা যতঃ সব হৈল প্রফ্টিড সুগল্পৈ পূরিল ত্রিভ্রন । আগনার দিন পেষে, প্রফুল অন্তর হয়ে বসত রাজার সৈন্য গণ 11 রাজ্যের শাসন জন্য, দল্পের নাহিক গং উপগত रहेन मञ्जा ।

সাবিবারে খীর কর<sub>ে</sub> কংর পরি ধনুঃশর<sub>ঃ</sub> খাল মার মার কবে॥ ্দ মন্দ ল্ণাগ্তি: এল্যা দিবল রুটিঃ বহে মাতি মনের হার্যে। া বাল বৃদ্ধ যুব আংশ কু ৎপিত আকোর্যাব সকলের সৃদ্ধপ প্রকাশে ।। প্রবৈশিয়া পালা বন, জনর করে এমণ, ্ভণীত্তণ ত্তণ রব করে ৷ 'ক্ষারিয়া পুজ্পোপনি: বৈদে করে মধু চুরি: ভাসে गम। आनन्म मांशदा।। ানর আনন্দ ভরে: কোকিল পঞ্চ হরে কুষ্কুলু ফুকারে বসিয়া। য়ে হর্ষিত মতিঃ ছীয়বলে রভিপতিঃ অতি রস রঙ্গেতে শতিয়া। কিরিয়া শরাসন, সন্ধান পূরিল বাণ-ষ্বৰ্গ মৰ্ত্য পাতাল ভেদিল। <u> বেবতা অবসুর যক্ষ্য, গন্ধর্যে অংসর রক্ষ্য</u> বাচপ্যম সকলে থেছিল ॥ শিশাচাদি বিদ্যাধর, পন্নগ কিম্বর নর, সিদ্ধ ভূত গুহ্কে প্ৰভৃতি। িবি কৃত জীব লক্ষ্য কীটাদি পতল পক্ষ্ একে একে না হয় বুততি।। वी भूक्ष भवन्भाव, मन्तव भक्षभाव, ष्व ष्व इश्व क्लिवतः

একত্র হয়ে দক্ষতি। প্রেমরস রঙ্গে মাতি।
তান্যক্ষে সুখে দেয় কর।।
বাহিনীর অভিলাখে,বসি মালিনীর বাদে।
দিবানিশি ভাবে রসময়।
তাহে বসন্ত তরঞ্জ, আসিয়া পর্শিল অল্লা
দেখিতে দেখিতে মগু হয়।।
ফল পি ভাগিতে চায়া, মলয়া মন্ত তায়,
শভ গুণ বাড়ায় হিলোল।
শোহান জাবনান্ত: করিবারে রভিকান্ত,
শাহানত করয়ে দুর্বল।।
শাহনে দেয় গাঁতার, সাঁতারে বিহতে পার,
পারে সেই বিরহ্ পাথার।
ভক্তনী তরণি পেলে, চাপিয়া বসিয়া হালে,

ভণে অনাগ্রাসে হয় পার।। → ১>>>

নাহিনী বসতে তাপিতা হইয়া

নদৰের পুতি ভর্পনা।

গীত। রাগিণী সোহিনী

ভাল আড়া ঠেকা।

বিধাতা যদ্যপি নিম্নে রমণী
হত। রমণীর যে যুত্রা ভবে
সে জানিত।

कांव्यास्त्र (यहे विश्व. मृश्य प्रत्य प्रत्य निव्यति, क्रिण विश्व क्रि. ज्यानि अवस् उत्य क्रि. ज्यानि अवस् उत्य क्रि. ज्यानि अवस् उत्य क्रि. ज्याम नार्वी या निव्यति व्यास्त्र स्थापक अवस् ज्याने, विभागक अवस्थिति विश्व स्है त्याने स्टिंग राज्य स्थापित विश्व स्है त्याने स्टिंग राज्य स्थापित विश्व क्षिणक विश्व स्थापित विश्व स्थापित स्थापित विश्व स्थापित स्थापित विश्व स्थापित स्थापित स्थापित विश्व स्थापित स्थाप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्य

#### \*\*\*\*

#### পরার ১

नित्त मृत्यनी खाँछ अवना महता।

निर्देश मृत्य मृत्य मनदात्र द्याना।

निर्देश द्यान छेट्ठे अन्याप्त्र महता।

किल्ला करेत्रा कर्म वहरम महत्य।

किल्ला करेत्रा कर्म वहरम मन्दरा।

किल्ला करेत्रा कर्म वहरम मन्दरा।

किल्ला करेत्रा कर्म क्रिमा मन्दरा।

किल्ला कर्मा कर्म क्रिमा मन्दरा।

किल्ला कर्मा कर्म क्रिमा मन्दरा।

किल्ला कर्मा क्रिमा क्रिमा मन्दरा।

क्रिमा कर्मा मान्दरा।

क्रिमा कर्मा कर्मा क्रिमा मान्दरा।

क्रिमा कर्मा मान्दरा।

শভ শত থিক রে তৌমার শরামনে 🗅 স্চল সহল থিক তৰ প্ৰবাৰে 👭 कांका इस मुदिहात कामाव स्म कर्मा ভোষার যে লজিনী ডি অবিচার ধর্ম প্র 6 क्ट्रे प्राप्तत राजा **रख अड छ।** विश भक्राच विभिन्न छत् तथ कर गर्दा ॥ ब्योशनि ध्यमन होता श्रम शाहिसन १ ना भारत कविराज विक गरेशा विश्वन ॥ ভোগার সভাষ্ঠ মন্ত্রী ভিনি বটপার ঃ भारत करह शर (यम कीहा हाड़ा, भागी। रका किन किनियम् त मन दुन्यस्य । कर्नाकर्नः विविधिनी लास एख करन्। ধৃশ্যতি নিক্টে ধেলে প্রকাশ পার ও।। প্রকার পেয়ে এনে গাবে কালি চুন !৷ म्रात्व क्षात्र उर करें मूहे छन । বাহিৰে যেমন মপ অনুমে তেমন ৷৷ विविधिनीवं से दिश्य मिसा एडामने १ তাহাতে করয়ে বৃদ্ধি ধলরাপবন।। अयः। भरना राजी नाम ख भहिस। विश्व भीरम वृति गरेगला भाषिया॥ मांख विना केर बारन यनि यास श्राप ह नावी एक छाड़ि छटवं हैहेव भूमान॥ राठाइ जागान गाम अहे जिलाग । िव हम (क्षेत्र व्यव इरेस निव भागा।

আং লিপ্ৰছ কৰি জিল স্কু,জন্ न प्रका कारिक (क) " ने लेख निर्माण है। रया अन्य शिक्षा कृष् ं विचार ्रित करिन्ट द्वाब काष्य मुन्त भागा ·শ্য হট্য, হে **ঘলিত** হতাশন ১ 、村村、前、村田田下夏山 有社 ्रत हर स्ट्रिंट भाग शहरांक आहे. हो -११ में कहरा ७ में बहुत निस्ति हैं - प्रेम तहा दरन को ने ज्या ! ार्क वामा कृषि मुखे । विकास ा । वायानि आह कतिया क्या क ं। ये । ८७ पति कवित भवाम ।। ा अवस्था मभ गुडिय गिर्शेष्ट । यान द्रामा निम् निहित्ता निष्ठत ाव अक्या एकान के वाल कामि दार ह .. । आगः व त्यन शूटर यनकाम ॥ ्रीय छात्रा, बदल स्रोहें ध्यहें खगीते । ार्**७ मुस्सि स्थापि ७४ टाइ** कर स

(याहिनीव भणिन क्षेश (यशिया , सभी गापत किछ्डामा। भवाव इन्द्रा राज्यक वास्रु मम अंसम्ब ध्यारका

একেড ভরজ ভাবি ভৌবন সাগারে।। তাহে युक्तं कून ठिव कारमन्त्रित्र स्टीरन। अवना मुर्वामा वाला वाहिएक कि शोहर । जुर् खुर् काव जनी क शादी विशेष्त ! बक्रोकात लक्षाः स्व् ठालिया यउएस।। **क्**षांत्व भड़िया क्षांत्म देशेन र**न** शीन । हिम किम करलवत्र जावि विकि सिम ।। रक्षकाहेम गुर्व निश्व मितन दरम । शूर्व हरन्म स्थय स्थम देवन च्यां जापन व স্থীগণ মেন কপ করি নির্মাকণ ৷ পরস্পর হৈল গবে চিন্তাবিত মন।। मक्त अक्क भिल्न दर्ग किरोरग। बाक भूजी देश्या मधी याम वसन ।। व्यवसीय बेरियाट अस क्षेत्रता मिल सिट्स क्रेट्डाइ भी व कर अनव ध भूक्ष वक तक तर वीटकाव को भना। श्रामा भविष्या भविष्या भविष्या विज्ञान कुमान निवीकन कवि। क्रांगिएक रेहांव छक्ष छन गर्छि।। मधीतन युक्ति देवना धरे व्यन्नातन। मृष्टारंव किकारम त्यारिनी मेजियारन।। सम बाक्यामा त्याबा कवि जित्यम् । ट्यांगाब नगीरम अक महमब कथन ।। मठाकित बन्धनी आगाएत काटह।

िल्लानः व्याकृषि कर अपन कालाइ :
नाम निराम खकाइरङ् मुथ व्यविक्त ।
नीवन कालाइ किरम हानः मकतक ।
कि जाल क्षमिश्वा त्राक देवन व्याक्ष्मिश्वः
जन्मान क्षमिश्वा त्राक देवन व्याक्ष्मिश्वः
जन्मान क्षमिश्वा त्राक देवन व्याक्ष्मिश्वः
जन्मान क्षमिश्वा त्राक्ष देवन व्याक्षित्वः
जन्मान क्षमिश्वा त्राक्षित्वः व्याक्षिति ।।
राजन्म कर्षा जीवा किष्कृष्टे मार्क्षामि ।।
राजन्म कर्षा जीवा कर्णा भृत्याक्षमा ।
निर्विभाग कर्षा क्षमिश्वा क्षमिश्वः ।
निर्विभाग क्षमिश्वः क्षमिश्वः ।।

- CHEW

मधीरमह मुखि स्माहिनीह छेखा। गोड । हाणिनी चाचाक जान स्वामान

विषय अभाव भाग राष्ट्रा भवीति भागात, विष्णु विज्ञोत्त स्टा अकृत भाषात्र भाव जान मत्र काटा, महा यक्ष स्टा अट्टा, बक्षा (क्ष्णु देश स्टा, ना (क्षणि उभाषा) विभाकत्र भक्ष यं उ, स्ट्रकार्य स्थिति क्रि, सद्देश क्रिका हरू, निह्नाहर्य।

# ( 900 )

### मीचं विश्वमी।

्रष्टम रूप मधीनन, व्यानीव मृत्य उठन, প্রকাশ করিয়া তবে বলি। ভোৰনা **আশাৰপ্ৰতি, কহিলে গো** যে ভাৰতী काश पथी लागा। बकति॥ भरतिहरूय (दोनामांत्र (मनवा मा बनायाय, 'শর্ষে সর্ব হয় এতি: ভে'গণ ৰাথিজানাম- ভাই ক্ষিয়া প্ৰচাক বদি তোনাসবাকার প্রতি॥ যোৱা হয়ে কুপথ্য, বুলি তাহে বন পিছে खारगंद**भ**िख रमा ७व खब • श्हेदार्ड मन्त्रुर्व बिकार ॥ ফালির কুমুগনি, স্থানিয়া প্রাণ স্থানি, मरा पाक स्ट्रेखिए पाइ । দূরত নলগ্ন রায় কুসুর বৌপক্ষে ভায়, ंचन धन हिट्छिट्छ स्मृह् ॥ मणुकामद शक्षम, आविन कर्ग करते, বিধিন ক্লেমে লো ভাষার। कि विका जनमन् नाहि हा अस्पन ा वाधिवाह मा (मिथ जिनास ॥ निर्देशिक्स निर्दर्शक, सांक निक्रा दस-प्रक জীবন, শরদে ক্ষেন্তাপ।

कारमिन्य क्यो श्रीयः ध्य ध्य ४०८म कात्रः ক্ষণে ফাৰে দেখি গো প্ৰল'প গ্ৰ নাম মার করে মান, হানে লগী ভীমা স্বরু, শ্ব্যা ককক সে হালায়। कार्वि कुषा जावा उत्तर केटरमा श्रम हरू, প্রেন্নেশ উলন কাহায়।। ায়েছে যে উপসর্গ, করিতে এ নোগারেলে, नागामः रेवस्मात माधा माहे। शक्ति भगन्यति यक्ति विकास किति । धार कराधिक जो भाई। এবোণের ঔষধ আছে: দুকলি তাহার কান্তঃ ्रम त्य मरहोयस गरमाइस १ ালিকু প্রকাশিরা, ধর মধু নিসাইরা, तेमानिम् वं था हैर महत । (म क्या निमि क्रांत्र) हूपून स्व कारणकाः তাঁৰ কৰে আছে মৃষ্টিযোগ। विद्वा तक्षास्थात्रात्रः, विश्व स्टब कटनसः मा इत्य डेल्न " अमृत्यान ॥ प्रक अनुभान 'स्टिशं, जानिकन म्जू अत्र निहर्व। वि इहेरव अहे (एक) ाहे गार्कायथ चित्र, बाज अभी नाहि बजा, ्रेट्ष किङ्ग गाहिक भागक।। क देवह (तथास्त्रक्षिण अमीषिका गया मूक्कि। विमोक चार्य जोक भारत ।

क्षक्रयो ट्यांगहा भटर, (रामन स्थिते करिये क्षकान्तिश भाउत । भाउपन । खरण **लाका इ**कार है कर के अन्तर है का उन्हें का प्राप्त कार्तराज भवन एवं छ। १११ रखन भग रहिक श्रीतः। अत्य शिके किरास्त्र । मीत्कित चाँग्रिंश काल ॥ श्राष्ट्रिक गिर्द्धा जागा अ वर्ग निर्द्धाः स्मरमा प्रकेत ने विस्तित् । क्षांच्य भाग मान नेवाल गाम स्वा लाहेबल उहार मोहन । नित्त इतः अन्तृतः, नाम् । श निर्व हः कीवाम सीका कवि पत्र । কিয়া দেহ গো মসনি এখনি চাল ব্টানি প্রাণ ভাগে ক্রিয়া সেপান ॥ स्विम् धाउक गानी, नर्थागाया एक एती। मकत्त्र (अर्थ) (म युर्व)। काहाब मांग का िमी, त्यन क्रप्टमन क्रानिसी ভাষে।সই বৃদ্ধিষতি অভি।। हाना कामा हाअ कन, अल अकिरमा वहन कहिरस य राजार मणिन। , বেৰে শুনে বন্ধ ভাষ্ক, আভিজ্ঞে কঁপিয়ে ৰঙ্গ , अःकराति श्रान देवारिनी ॥ , अन् देशा बादयांना, र्साता वठ उँचन ्भिदिष्टर मूच (य मानना ।

থ্যতার প্রেমদায়, কিঞ্চিং বলি তোমার; এবং করগো সুলোচন।।

### গীত। রাগিণী বাগেশ্বরী তাল আড়া ঠেকা।

कन अड ४६। भितिए वानगा ७ विष्वमनी ॥ किरिड्ड मण्डन, भिड़ारकन भूग भग, नाहि छात्न विवद्गा, छाव रिवम देखनी॥ भूष नद्ग भागानः धन, जारम जुद्या विडद्रग, भारत करत जुलाखन, महळ भद्राभी। भूष हरत भुजिकूल, खकुरल जामिर्य कृत, विरह्न वार्ष भूगाकुरा, •हरव विरनाहिनी॥

### ত্রিছন্দ পয়ার।

জধানে, কৃষ্ণ প্রেমে, রাধা বিনোদিনী। ংয়রত, দুঃখ যত, শুন বিনোদিনি।। ট

ঘরে কাল, আছে ভাল, পাপ ননদিনী। পেয়ে ছল- প্রতিফল, দেয়গো তথ্যি 🛭 কুবচনে, দুনয়নে, অঞ্ধারা করে। সদ। ভীতি, সে দুনী তি, আয়ানের ভরে ॥ ভবপাৰে, যাইবারে, যে নাম তরণী। প্রেমে মঙ্গে, হল বুজে তিনি কলক্ষিনী।। প্রেমরসে: পিবারাশ্যে লক্ষা ভয় ত্যুগ্রে। ঘোর দিশি। থাকে বসি। ঘোরারণ্য নাঝে।। ধ্য সে কাঁদে, কালাচীদে, নাপায়ে নিশিতে। দুঃথ জলে, অঙ্গ ডেলে, লাগিলা ভাসিতে : व्याद खनः नुक्ष भूनः, कदि निर्दयन। तुक्रभूतीः भौतिकतिः यद्य मात्रायम् ॥ यम्भुद्धः भोताकद्धः याम्हरूदः ग्राम्। लानाविकाः जीवाधिक । ७ अ वृक्तवरम् ॥ কেনবাণী; কমলিনী, শুনি অন্তঃপুরে। অক্তাণ: বজাগত, সম জ্ঞান শিরে ৷৷ কেন্দে কেন্দে: শ্রীগোবিন্দে; ধরিবার তরে। ক্রত থাটে, রাজবাটে, লজ্জা নাহি করে।। উপবিষ্ট, ছিলা কৃষ্ণ, এথোপরি যথা। ধরতিলে, কেঁদেবলে, কৃষ্ণ চল্লে কোথা।। কিবা দোষে, অভিরোষে, তাজি নিজজনে : প্রাণ হরি, প্রাণ হরি, লয়ে সঙ্গোপনে।। ফিরে চাও, বলে যাও, কবেছে জাসিবে। ध्वाधात्र, त्थ्याधात्र, करव मान मिरव॥

वनगोली, आन्त कालि, नटन रिम्रा आंभा ६ वर्ष गर्छ। श्रामाश्रयः ना श्रहेन जामा ॥ য<sup>ু শাঁধারি</sup>। কংশে মার্টি, বসিসিং হাসনে। পুরিকারে রাজ্যকরে, জানন্দিত নলে ।। ীলকায় দ্বৰেকায়; ভাবেপৰ আদি। ালাহয়ে; কৰে বিয়েন যোজন ৰূপদী।। ्र*िन*ो, क्रिस्टाशिन, विना खनाश्राद्धाः ্রাস্থান আচেত্তাল প্রে শ্বাকারে !৷ ाक राम, जाकलाल, जामि निमिनिन । ·· दर्भ कृष्ध्वर्भ इटम कृष्ध श्रीम ॥ ৰ্ভ প্ৰাণ্ড কান্য আৰু আৰু কানো নাত্ৰ। ্ল ভাঁর, নৈংল আর- স্পদ্দহীন গাত্র 🛚 গাঁতে রত্য হয়ে এত। দুঃখপান ভিনি। 'ল মতঃ প্রেমভত্তঃ, নাজানিয়া ধনী 🛚। লৈদেশ্বর: শিরস্তর, ভাবিত অপার। कि पहिरम, ७४४ हिमा, शाहेद निर्द्धांत ॥ নিদাৰণ, সে অৰুণ, সৃত ব্যাধ পাছে ! আছে ভয়, কিংসজয়, পাব তঃরকাছে॥ यन् भारः क्रा कायः वटन नीन कन। অন্তক্লে, গঙ্গাস্তান হৈ যেন পতন ॥ ৰসনায়, যেন গায়, রাধাক্ষ নাম। क्ष्मान्द्रः, मग्राकद्रः, क्रव अन्धान्।

#### 1 50 )

# काषित्रेव पुष्टि मार्क्की (केंद्रहः)

#### \*3 4 :

हार दिल्ली कराजन कभी भगवाज राज्य ह manifolded to be some state of the st रन्यं योक्षा एउन्नेट्र भूक्ष दुव्यक्ति भाग् १ द्य न्थ्यं करिएड है से मुख्याई अवस्थित ৰাটে এন **বিষয়ে যে** কৰিছিল আৰু চলত कर तथा किस्कृषणान विकित्साका जातर ह दोक्तर राज जाकार्वसः स्वाकि । एकः क्वार्ट्स्ट बह्य याच हेरम उपनेत्र हो। ঝাৰাণি এই এমুখ্য কৰিছে লক্ষ্য क्टारिया रहतम् अमे अभाग तर एक ह क्ष्म क्षेत्र क्षश्री है। या क्षामंद्र करन ३ मा करिंद : मुकासाद्ध प्रताप प्राप्त स त्रभाव मिन्नाटक क्या आमार अवस्था । क इंग्रें कराना कर लाजाया। कामर्थ । खम्ब (क्वींकरण (धाउनी) व्यवस्थ । सम्भाष्ट्रका अधियम निवसी । জুলিয়া তোৰৰ। কাড় তাল্ৰ **কৰ**েঁত আদিতে দিবলা দখি বুংল দেবল পটে।। अख्दिन भोगडल जिलाक श्रीमणी। भीनाग्रत एकि एथ विभावन दर्गी।। धर्भारमञ्जूष्ट इस्ट वनगानी।

विना चिर्ध बार्दे कृ**ः ध**र्भनः जुनिर ॥ কথ্যসংখ্য বুশের জনের আধাত এইছা। न्द्र रेश्टल्ल्य का अधि व्यक्ति भरेता । খাৰিণীলে পাই ন্নাছে গতেক থাতনা ! जान परमाणिक करि करतन जब मना ॥ ে অবাতে কুজে যেতে লাভি বেঁদ দুর্মী : े তথাৰ গলবালে কংগম হৈ তি ।। कुन हा भरसायक्रियान भी खर । धी नकेन्छक् भाग भागा की का छ। क নবিতা বেলিয়া **কাফে** বাগ্ৰ**হ**য়ে ন**ন্ধ**ি 似 豆醇 医利利剂酶 电时 中国制度 ভোষাৰ এপথ নহে তত্ত্ে পাতাম্বর। ६५१% जरम कर क्रेंग अह्व।! শ্ৰুপ্ত কৰে শুকি সেই দ্বিদ্যাল ঘূলি। 🕮 লগা কহছে। অন্চিত কণী।। राम भग कुल भारत शाम काम जी है। রাগ্যম **ধন প্রাণ ম**্লগতি বৃতি।। त्न श्रथं आधाद मधी व विक. ते श्राया। াে পথ ছাড়িয়া হোতে হল খেল৷ শংখা ৷ ्वत्यानी स्थान ग्रही गर्छ पिला क्या ৰলে একি শুনিলাম হাক্য মধ্যেত্ৰ।। চরণে ঠেলিয়া কেলি পুরুষ্কারে মাথে। थन थान मोन स्पन्न कला वाटकाटण।। अल्डा के हैं के साब मृत्य मधावाद ।

विभारत एक निया रहन करिय छेकात ॥ অনন্ত ঘাঁহার নাম ব্যক্ত ত্রিস্পারে। काव बन कावसीना वृज्ञितादर भारत ॥ ष्णाना ज्विश हाल पानिश कानरन्। সুখের প্রস্থা গ্রহ করন্তে রেলান চ প্ৰভাতে আসিয়া জাৰ প্ৰিয়তা জানাও ! এথেয়ের উপযুক্ত রশ্ব ভবি নও ৷৷ ं **बंश्वारणंत्र म**ञ्चारं कड रेटन रहन । त्मरम्कं सुनि उर जानिन् बद ला। এইনপ নানানতে ভংকনা করিয়া। कुरक्षव में वित्र एति मिली कामादेश ॥ ক্রেন্থের লোপিখন স্থাত **ঈশ্বরে।** ্ৰিপিম্ছ কনি স্ব অপুম্ন কৰে । ভথচে সেক্লিশশী মৃদুম্বু স্বের। ব্ৰিটেৰ প্ৰতি প্ৰতি যোগু কৰে কৰে।। शिमिका महाएव नाहि इस मरायान। **अपनिता पूर्ण प्रचान छोड छत्रवान ॥** बनवधीक्ठ बात्न रहनन कानाहै। कुक्का कर्दाहि कालि करी कर दाई। নিজ জনে ব্ৰাক্ষ এন্ ভিকা টাই। তেলা বিলা হিজগতে স্বাব কেহু নাই !! कृति अपि माइता हरत । अनगरे । দীড়াই কাহাৰ ক.ছে কাৰে পুৰুষ কুই ম व्हेंगड भागावन कर्ता. क्यांवर ।

প্ৰিয়েশন শগ্ৰন মন্ত্ৰ জাতিয়ে। সংগ্ৰন্থ ম अवना स्वीत्रम नाव ग्राह्म । मुक्त । १ े रेन्स भक्ति हा लाव शहर बस्तिशह ्रात् अभिन शास भगतेत्र सात्रः। क्रिकेश प्रकार सार्व सर्व कर्षा । राज्यम् बहार कारात अंतरम् सार. ार शिवास क्राफिस सिम्बार का मार्ट ं भने सा की एक बहुत हिन्छ नावीहरू स ा विकास मूटी अभाग भाषा । ीरमान केरिक नीर म्यान में कारत प् ेप्स अने कि स्रोहर खाड़ सम्मीर र भारत स्टब्स मात्र कामन पुत्र है। ापाल ला निर्मा कि करब दक दक्तभाव ह ं किता गाम कर हतक (भीवन ॥ াশনা ব্ৰাক্ত উদ্ভি পৰে চিন্তাৰতি হ ं । अधिकरात्त्र कल्याक्क व्यास्किते हर देशान करन करि यान जनरान ? ংগৰাৰা ৰাগ্ধীয় ত্লিছা স্তান চ ारवा भारत्य नामी गल कनकति । লা। দে দুজ্জ । মান তাজিলা কিমোনী।। विश्वास्त्र भाव अभी कटत हि धर्म। क्षान कवित्र। राजि खमाला। अथना। श्रम पद्ध भित्र। रति गात्मक काशिका।

बार मही सह जातव सम्भी माञ्चितः राष्ट्र केलिकानि बारा भाव छन्। सामा १ 刑法等等的名称为证证的证明的证明的证明 有實施物 医乳腺性 经管理 医外型 करमार्थं संख्यां है। यह विद्या तथा विश्वस्थ है भेरत भारत कार्य स्टिश केश वर्ष । 在一个人的 實際有關的 对别不能 中 城市 公司性 海绵 化二十二十二 医二种毒物 医二种 त्र विकार चुन्नामा सिन् गुन्ना पुत्र व्यवस्य । स्वत्रम् सुन्नार्थे । तथा स्वत्रात्रः क्षारणक्षः (一年) 新天山大山山山村村村村村 化可比较级 你們自然不能許 法处理管籍 新 1/260g \$100 \$110 \$100 \$100 \$100 \$100 \$1 化沙 不明 化可以不断外点管理 、春日 का अप महामा रह निग्म मुस्सी। क्षणाहरू भावकार व्यव विश्वकारिया व्यानोत्तर मानार भागा प्रामुख्य कविषय । . व गाँवा उभाग कर लिएन भारेखा। - 明海道

द्वानीत्र निकारे प्रशीत्मग्र गमन।
नीर्व दिशनी हैं
साहिमीत्र हम तानीः व्यनिष्ठा विभय सानिः
सवीतन किन्छेचा क्या।

শুন শুন রাজ্ফনর। ত্নিগো কুলের শান্যা। চাঞ্চল্য কি তব যোগ্য হয় ।। त्म विन धाराधियोः बागीय मसीरण गियोः बुशु करत करह मधीन। उन करणा गरावानि, आबारमब अरे दानी, छव काष्ट्र कवि निरवसम्।। ংয়া আছ নিশ্চিত, কুলভর নাহি চিস্ত, धर्म अध किरन थाक वस । শ্বিরা ভাবি গো ভাই, বিবাহের কথা নাই, कूरन कन्छ। यूरठी हरून ॥
- गाउरक कांगांकांगि, यथ। ठथा वह वागी, वाक वांगीय अकि वाग्राह । क्टन जाया नकरन, छोकिया विवरन वरन, माल मंथ कोना रय जाता। গৰ্গারদের এত বাণী, প্রবণ করিয়া নাণী, माम गरम करतन विष्ठांत । জতি ক্রোধাধিতা হয়ে, আজ্ যথোচিত করে, महातारक पिव स्य विकात।। এতেক যুক্তি করি, রহিলেন পাটেখনী ৰীয় কাৰ্য্য কৰিয়া বৰ্জন। <sup>इंहा</sup> राषि मशीशंग, शिक्षा स्माहिनी मुरन, निर्वित् भव विवत्।।।

অন্তল্পুরে অতঃপর, আইনেন দণ্ডন্ত, রাজ কর্মা কবি সমাপন। বসিলেন নিজ্মকে ধাণী আসি ক্রেণ্ডিরে রাজ্প্রতি হলেন তথন।। শুল ভারে বজারাজ, পেথিয়া ভোষার ক'ছ. এনাংশার হাইত্যেগ করি ৷ লোকের গঞ্জনা আর: সহিত্যে সংযুক্ত ভার-वर्षास आपर यनि गति।। राज्यत्मं मन थाक, श्रभ्यं गाहि जन त्वांकनाज गांहि कर su ! धरफ नियम खाना, युर्की रहेन बोनाः दन किरम शर्ष बका इस ॥ পেৰিয়া বৌহিত্ত মুগ্ পাইরা প্রম সুখ विव: इ मिटर इ वृक्ति भरत । देशहे की युक्टि, मर्क मूर्यी इस का আছ পণ করি হয়য়রে॥ রাজ্ঞীলুথে হেন পুনি, তলত হয়ে ন্পম জতিশ্য হলেন অধ্ষ্ঠ। নিশি হৈল স্প্রভাত, শীঘু আসি নরনাগ, ति १ इति इत उपिविके ॥ পাত্র মিত্র অভঃপদ, আসি সবে পরস্পারঃ मञ् नित्त भौतव श्रीयिण । <ित्रल म्मड्डा करि, त्रञ्जन चाहि करिः ৰ্মত্রে ভূপতি আজা দিল।।

'व क्रम | **प**रम्याः । अ छ्वा क्रिया ह्रयाः मन्। मार्क क्षर हे हैं। मान ि जिल्ला भनः जन्म (मनापुर कर्ने) নপ্ৰলে কর হোগাবোগ । िया प्राक्ष्म निर्देश क्षित एक शिम स्थित करिय নভাদদ আদি প্রিগণ ৷ ार्के कावरान कावः विशिष्टियां मकानादः भिरद दिक कहार त्यान । প্ৰকাৰ পাৰ পোৱেন স্বাভাৱি কোম গোচন শ্রে কার কার্স গ্রেছে : उत्तर चालन बायाः, लाक्त्रेश निज् रेमबन एकिएन का उन्तिसिंह । नम । भ विमासिः । छ दि । सार्विसाद्यिः कानी कार्का जाशायत अजन्। াশ্রীর দিল্লী আংক্রিড় সেক্তরল্ভ বাংলেশ্বর भश्राके उदक्ष दिख्य ।: ্দ্ৰের্থ নান হত, একে একে কর করে, मकन (माना मृश्त्र। ाहिनी नारलंड और न जिल्ला की बीनियान याय हरत. इतिय जास्त्र ॥ াথে কেহু অধ্যোপত্তি কেহু আৰু ক্ৰি करी भार गिसिया बामाती। हान कति मश्रामकः, खनिया इहेन सन, वमुश्रादा व मि नद नादी ॥

ক্রমে সব মহীপাল, কাঞ্চনগণ্ড ভূপাল, षानस्तर देशन छेशनीच। কাঞ্চনখণ্ডের সামী, শীঘু হয়ে অগ্রগারী श्रीत्थ श्राम (यह हाज़नीज । भक्रामात समानरहः, अचि गरन् हम्के घरः वामानिल यदा शास शास : নানা ভাষা উপহার, সাজাইয়া ভাষে ভাষ भारे। हेन नव महिनात ॥ ন্প্রাণে ভুক্ট হতে, আহারাদি স্যাপিথে इंग्रेशिय कराइ विकास त्यांकिनी शादाव कारण अठिमा अम्बारगः পারস্পার পূর্ণ কাবিরাম ।। श्यान जम्मत वानी, जानिया भनिष्ठिति बनिद्यम इसा जामनिष्ठ। শ্বনহ দকল দাদী: নিম্ফ্রিয়া প্রতিবাসি-मारीगर्य चानक इति ॥ একজনা ভাড়াভাড়ি, যাহ প্রোহিত বাড়ী ব্ৰাহ্মণীকে আগে ডাকি আন। नारछनीत बाँगीनियाः सम्रहेश वार्ड। रिक्षः मानिगीत मत्य कवि यांग॥ রাজ্ঞী আজ্ঞা শিবে ধরি, ধাইল সব কিন্ধরী: निक्र निक्र कार्यः माधिवाद । প্রোহিত ঠাকুরাণী, আর যে প্রতিবাসিনী সবে এল রাজার আগারে।!

গুণানেতে সে নালিনী, নাম যার প্রান্তী, ওনি মেকিনীর পরিণ। ्रमामूख बमवडी । तरक साह पामीखीत आशि बढ़ त्यां श्रा उपय स নিধিকেল **সং**ক্লত সুজিল নেলিক কল এক দিবে সাগার কন্যান <u>৷</u> ्विक शासन मृत्यः । अर्थिया भाषितः १००० देशिवत्य भण भागराव । হনত নিকটে কথা আই খানি রাজ্যান तिश वृद्धि रदेश विग्रक हन । क्योदांक अध्यम्भी । इर्गा मनी महिली बोलपाब कविदा गान ॥ व्योग बोककुमार्बी, शाशास्त्र मण्डही, भव मिशा कड़ोब (शहन । ारहे मशी रफ़ क्षित्राः, कोरे कारव गरशास्त्रिः, भारिहेल विश्वाभ कावग ॥ ग्विनोत्र बाखन्लुरतः। (यह धन वान करत) ভারে ইছা ক্রিবে অপ্ল 1 निशि नाम भ कैलमी, जनतात मिन नामि। রাজপুতা করেন পঠন !!

> মোহিনীর নিবেদন পত্র ভুবনের পাঠ।

ন্দ্ৰী, চন্ত্ৰৰ বিনা মাই অপিনীৰ হাতি। ম ন এই নিবেশন বাছৰ ভাৰতী ॥ তি- নির ছকপ গুলে যাত,ছিল মধে। त्यः, एन इट्रेश मथ ममीव किराल ॥ कि डोध इजारक जोरम यन्सरमान्द्रमान । দী ভিয়ান ভাৰ মলে ইউৰে ছে ছেলে ৪ मा- मी दल घटन ८३थ एनवर जानि । र्भा, सर्भ,त (म.स बन छ। अवस्ति। त- विवाधि ए र ४० ६; वारिराट् छ। वि । या, व्यानाः । स्थानानि (म अन्य मानि।) है। इ. ज सर्धा मार्थ मा कर गर्मधः। ति भंग रक्या क्यमहरू स्थल्या ॥ त्वा त्य शहरणि कि कर निधान ! দ্য হিচেকে সমাপ্রাণ তব অসম্পনে ম এ, ব্ৰীন বেট্ডৰ মন স্থাকে পূজাকাল ! का, लाकाल मामारन यया ॥ गर्ने हाल ॥ 🗴 न, नार्षे चाहिन पर कहें मि निशंप १ यः ग नान जनमान इड्रेन मिनन ॥ मः मोहारिन उथलिन ख्यमे भारति । বি, বিধ সংশ্বে আনে দিলাম সাঁতার। বা, রেক নীব্ল তাহে দুঃখের নিস্তার। হ, ইল দারুণ শত্রু লৌকিক ব্যভার ॥ वः तन इरेन भौदि (तवन शाश्राम ! द, न मा ভূঞিन यनः ध्यम जासानरन ॥

द्वः किठ व्हेषा काम जन्नज्व मत्नः।
त्यः न भगिषाठ भना कतिराज्ञः अवातः।।
भा भारतः पाइषा द्वित्वन अवजा मदना।।
भि कि क्षि श्रीम कार्या करवरात्र वप्यानः।।
त्यः क्षि होस्य कार्या करवरात्र वप्यानः।।
त्यः क्षि होस्य कार्या करवरात्र वप्यानः।
हः चि जर्वा स्टब्स स्थान हिन्स स्टब्स।
हः चि जर्वा स्थान क्षि छ्यात स्थितः।
हेन शाठ कवि भारत क्षानिरत निकानः।
स्मान्।करात विकास श्रीस्त व्रवानः।।

#### - Million Com

## स्याहिनीय स्वापताः

### नगाभन को भर्ग।

ধ্বানে ভূপতি,নিজ জন প্রতি,নিলেন আরাত, সাজাহিতে সভা।
পাত্র নিরোণ, লায়ে ভূতাগণ, পাতিল আসন, অতি মনোলোভা।।
লইয়া তৎপর, অভির আধার, রাখে থবে থবং তদুপরি ভাগে।
তাহাতে উছলা, হারামণি পলা,সম শশী কলা, চ্কিতে চমক লাগে।। প্রতংশার আনি-চোমর আড় নি-ক্রি কর বেবার্তা-বিচিত্র নিম্মানি ।

অপুর্বা দর্শন কড়িত কাঞ্চনং রন্ত্র জ্ঞাপন। ভাগত ২০০৮ ম

ত্রা এরি পাশন করিতে বাত্স, শতং দ স্ভ নিস্কু করিল :

বি কথ শৈলে। শূলা বিশ্ব ধুকা, দৌহৰ অভুসঃ দিলা সাজাইখা ॥

(कषिण कार्तिकाः मृद्राक्तिकाः कारियाः कार्यस्थितः) वाकित् समृद्धः

ন্পগ্ন জানি, অনুপরি ধনি, কেছ্ কেছ হাসি। কর্মে নৌজুক ॥

মন্ত্রীপতিলাগের বলি একানীনের বল সন্থাবিলের পরস্পার স্থিত।

বে এইল শভানকি ব্ৰ সে শোভাপোওকে স্ভ সমতুল্য দেখি য

বাজিছে বাস্মত্নটি বারাঙ্গণা,কজিছে নানত গায়কেতে গান 1

स्डकान मिथि,याजा इत्स मूचि देशदा प्रश्चि हूं है। करत वर्ष्ट हास ॥

হাজার কুমারী, মনোনীত করি, নিজপতি বরি, হবেন উল্লাসী :

এই কোলাছলঃ শুনিয়া সকল, আনন্দে বিহ্বল, নগৰ নিবাসি ॥ भाग व्यक्तिकाः इदेशा हुनानः जन्मन महत्। भारतः श्रादिकाः ।

করিলা তথন। গলাগিবাধন। নাত্রা পূজন। যঠাদি করিয়া ।।

এখানে ভুবন কৰিয়া পঠন: হেন নিবেদন, পত্ৰ গে,হিনীয় !

मानियोव घाता विलिख ख्डात, दिन केन्स अस्त, बरमामस्या छित्।।

করিয়াজ্ঞান্তরে, কেন্দ বিচারে, প্রংলয়স্থরের করিয়াছে প্র

ধনি ভানবেশ- ক্ষরিয়া প্রবেশ-, ব্রিট নিশেষ-, মে রাশার সম চ

ইয়া ভাবি বায়, নাপিত সজ্জায়,নালিনা আল্যা, হইতে তথন ।

পরি বস্ত্র জীম্র আতি কৃষ্ণ বর্ণ, কালারির চিত্র, লইয়া গমন ॥

্মানি পীরেং, মহারাজ ছারে, ছারির গোচরে, ভলনা করিয়া।

প্রবেশিল রায়, 'মনি কালিকান্ন, বিশিল ব্যার, সভাপ্রান্তে গিয়া॥

প্রাইয়া সময়, লভানব্যে হয়, নোহিলী উদয়, শব অন্মনগে। विश्व मटनाराबी, करण त्महें नाबी, बाहाशण (र्हाड) हमक जाइ नारण।।

কিদিব উপযা- বছা ভিৰেণ্ড্ৰন্ত নহে ভাৰ ন্যা নানবেতে গৰি 1

নৰ্মন স্থাত : বেল ধ্বণাতে, স্থল আচি বিলে পতিতা দানিলী !

কিবাক্লোদরীঃহেবিয়া কেশবি,ক্তাপনা পাদতি প্রাবেশ ক্ষিত্র

অতি শোভ এদিব),নৱাগের গর্জ্য,করিবাজে ৩০ সে গ্রন্থান্ত গ্র

কারে করি বাল (গ্রহমপুষ্পমাল),ভাহাতে বি 🕥 কায়ে অলিকুল ।

চৌদিকে বেড়িয়া, যাইছে গাইরাব্রার্ডার্ডার্ডিজি রান্ধানা ব্যক্তিনা।

----

মোহিনীর কপ দেখিরা রাজাদের ন্নে২ অভিপুরে। ভনক হন্দ।

सकाखरा, खर करते, यस किन काणीक।
कालम्या, कालमाया, काली> कालिक ॥
खिनिध्या, अवस्या, थल मूल मालिक ।
स्म् सार्य, कृषायादा, और योभ योलिक ।
स्माय, कृषायादा, और योभ योलिक ।
सम्भाव, ज्ञानक, प्रिंश काम ज्ञानि ।
यस मूर्ल, सम जाला, प्रिंश और युव्ही ॥

्तक् क्यु, प्यामश्र, तीन दक्ष दक्षात । ব পাক্রি: দিয়া নাহী, রাথ রাথ গোরব II কোন লাজ', মহাতেজা, কংহু অতি কাতুরে ৷ ভাকে হবি, পদত্রবা, দিয়া আশা সাগতে ॥ কর পাল, এই বার, ২৪ প্রাভ্ কাণ্ডার্যা ৷ कार्कृत, इत्स कृत, एक् स्माद खनां ही स व्याप्त व्यवस्था स्थापित । मृगुडाहरू, क् खि**राहरू, लाहरू रह छरहरू ॥** কর্মার: প্রবিধার অভিলাধ কুছানে ব त्मर छत्ते। अभूमधीः रहमागः विधान ॥ কেছ ভাবে- শ্রিভাবে, উপায় কি করিব: একপর্না, হলে পাসা, বহু কল, পাইটাঃ अभूगाती, नास) कदिः **य**िहराद्य ऋष्टराः १ मव ज्ला, अहे जला, या जिल्लास गामरमा। বাদবালা, পূপামালা, লয়ে অভি মতনে। ध्कि करतः मकेरलस्त्रः माहि स्माथ चुन्दस्य । হাস্ত হায়, একিদায়, বিধি লোৱে ঘটালে 🚦 হতে হিত্য বিপরীত: ইথে কেন যোটালে 🛭 সামি নই, তাঁর ধই, জান ধর্ম সকলি। এসকলে, পাবে বলে, না ফটিল একলি।। ভাবি ইহা, হ্য স্পূহা, মোহিনীর सমনে १ করিছল, বুঝে ৰল: প্রকাশিব সে জনে ॥ সে যুবতী, গুণবতী, নিজ বুদ্ধি প্রবলে । शूर्व विकि, श्रम कवि, वर्ण भगी भक्ता ।

COTA !

কুষ্যানালিন) গ্রেষ্যাবাসণ উদ্যানে গরা জুষাৎ প্রকাশন। সমননোহক্ষকেণ্ জ্রা শুমাত্রতথপর এবসারণ্য

ष्यमः। र्थः।

শালিনার বাসে বাস করে যেই জন।

এবাস্তবা মধ্যে আসি দিয়া দুর্শন।
কটাক স্কানে মম হরিরাছে মন।

নিভান্ত আমার সাম ঠাই।র চরন।

ইহা শুনি নুপ্রণ ম্ইল বিশায়।
কেই না করিকে পামে ভাহার নির্ভন।

সভাপ্রান্ত হল বেশে বসি জনকর।

নুদু হাল্য নুখে করে প্রক্রের উত্রা।

উত্রা

শাততাবেংকবাণেন, সাঘাতঃ ক্রিয়তে ধ্য়া। আনৌভীয়া হুদোদ্বারণ নগনীয়া ননোহ্দিঃ।। অপেণ নোহ্তিণ ক্ষা, সাশ চৌরণ বদসে ব্যা।।

लाम् तथः। '

সরোবর কূলে অফ শরাঘাত করি। অগ্রে তাঙ্গি হুদ্ধার মনো লৈলা হরি।। নিজ রূপ কুহকেতে করিয়া নোহিত। আজু ধনী তাহে চোর বলা সুস্কৃতিত।।

#### প্রার :

এতেক শুনিয়া পুনি বিজয় কুটল ৷ মূলাক মুকল মূপ প্রমান গণিল চ লাস্যা কহে সবে একি বিপাটিত। গণের উত্তব কিলে দিলেক নাপিড গ न ए। वि- (मिथ्य) धुनी लाशिल जातिए । गरिमीस करह दांच नगन जिला है। তেন গোপনে দৌহে হইল িলন। रक्षाक्षेत्र जिला जोत राष्ट्र विषयां मा चल्लींग कल्ली श्रवि हैं करि: वान कतियाहिना स्थान मुक्ति।। ্লিতে বুঝানে ভাই দিল জগতে ঃ र्शान कदिशा धनी इतिथ अहत ॥ প্ৰাপ্তিৰ পদন্ত্য কৰিয়া শ্ৰণ 🖠 াৰ মনে সভাজনে কৰিয়। বেদন।। ्वानदा वत्रमाना कतिय अनात । लीच न्यान होति देवना भारतायान ॥ 'होरकाबाइन भव इड्न मगरव। বাল্কন্যা বরমালাই দিলা নালিতেরে॥ ে প্রনথগু ভূপেরে বহু লজাদিয়া। াৰ্গণ **নিজ বাজে**। গেলেন চলিয়া। অধাে**মুথ হরে টক্সে ভূপাল লক্ষ**ায়। 'বণী কাটয়ে যদি তার মধ্যে যায়।। ार बाजा वरन निशा मिक् जरन वाय।

পরিত্যাথ করি থিয়া মনের সন্তাপ। বাজ্য আদি এসংখ্যার করিয়া বর্জন। লক্ষা নিবারণ কবি প্রাবেশিয়া বন ॥ प्रकार कृत्य प्रक रहेन अक्त । আর ন:পারিব আনি দেখাতে বদন।। धान करायि जारह कानश्याजन। न्यनारम नर्य। स्निर् क्तर (इसन ॥ রালার মুখেতে জাত হয়ে কেন ভাজি। পাত্র মিত্রগণ ভবে স্থিন কলি স্ভিয় लातास नम्ब विन खरिक विनयः। বাজাতে অন্ত্র মণ্ডে দিলেন পাচারে॥ कमात अ''एकएक दानी वाशिक प्राथात লভাব করিনে গ্রেথ বাক নাজি সরে।। পাত্র নিত্রগণ খুক্তি করি অতপেরে। मह्१ सः चानस्य नस्य भारिनीस ॥ थनः अर्डे लिका এक भगत शास्त्र । বৰ কন্যা লয়ে রাপে তাহার ভিতরে ॥ लहित्राद्य अंकि नियुक्त करिया । बकत कारण मिना घार वैमाहेसा। त्यार्विमी छूवन अचि **जिखारत उथन ।** ব্যেকা ভূনি পরিচয় দেছ যে এখন।। এত শুনি কহে রায় পরিহা**ন** ছলে। কি হেতু আমাবে ভূষি বর্মাল্য দিলে।। कि इटन अथन खिया शक्रिकास किटन ।

**উভ**রে বৃধিবে রাজা নিশি গোহাইলে।। **७१ जारन जानि इ**न धई ८ व क्रिन ! जीवन न्याय कपि विभारक महारहा।। খ্যা, তয় চিত্তে ভূমি চিতা কর বুখা। ত্ত অনুগত আনি নেই ছে বনিত। 11 ध्यातिकान्क राम अभिराट आगिय। १ খেলনে তেমিনের প্রিয়ে যনঃ প্রাণ জিলায় वह रानी स्विन धर्मा राज वापकाछ। धारक अहिराम ध्यम रकाष्ट्र निर्हाउ ॥ यम यन इंस् इंस् इंसि युक्त स्वीमातः ব্ৰিতে ভোষার মন ভবিত্য আর ॥ श्रकान भारता थनी भीतम असदा ! রজনী বঞ্চার সূথে প্রাসাদ ভিতরে !! মোহিনী বলেন নাথ ভাবে কি কাৰণ ! এগঞ্জন। সহিবারে আছে প্রযোজন।। ৰৰূপ প্ৰকাশ কৰি জানান্ত বাংশৰে। পরনসাধরে তিনি ভূষিবে ভোষারে 🗥 ভ্ৰন ব**েলন প্ৰিয়ে শুন বি**ৰুৱণ। পশ্চতি জানাকমন্ত্ৰ আছে প্ৰয়োজন। প্রকাশ না কর্ইছা মন বাক্র রেখো। পরেতে হইবে যাহ। আপনি তা দেখো।। এখানে সে নিঠি। গত দুঃখে রাজ। করি । প্রাতে উঠি বিধি মত নিত্য কর্মাচরি॥ বাহির দেওানে আসি বৈসে সিশ্হাসনে व्यक्तियान चाउउपरा महोन्द्रशाल्य ८६, ५ इटल्ड भी ५, देश शाकांत सम्बद्ध ३ সিছা, চাৰ মহাবাজ আভি মানাদুলথ।। ব্য: ওছে পাত্র তে যের। এক।। মন প্রাপ্ত হৈছে হ'ত লিসের কারণা ला इ राज अहि निर्वतन मधीलाल । গতঃ যদি কর তবে জানিহে দ্যাল।। मूल परन रहा शामिरलं नियान मा करिए। भ(ग्राहाक काहा (क) म नकरहार विवस भाज गान करें जिला हारि गर्नाज । उर्वन्त्री धरावा हिल्ला करावाह करीय है श्वरात इते। एक अकरन क्रान्ट ! याग्रास्त्र योदकः क व आश्रमान (मश्र) सन वनः करिवाहर नचे ६५ । একৈত দৃহিত্য তাম স্ত্রী ববের ভয় 🟗 र्खेष्टिका के शिल इस ब्यानम बद्धना है প্রলোকে ভোগা সেই বিবিধ ভাড়না !! ভাতএব প্রহে প্রাক্ত কন্যারে ক্ষমিয়া। কণ্টক ঘুচাও সেই না**পিতেএ**ধিয়া ॥ পাতের বচনে নাসা দূতগণ প্রতি। শাপিতে আনিতে শীঘু করেন সমতি।। खाळांगाळ कोनारस्त कोन भग एछ। आहेल मक्दर यथा कवि क्र मुख् ॥ भाकिभीदा गिन छ छ प्रभारता जिल्हा ।

রাজার কিন্ধর ধরি ভবনের কবে। লাহিন করিয়া দেঁছে অন্তীনিকা হৈছে ৷ ্চীদিকে বেডিয়া সব চলিলেক দতে।। मगरभा जांक मा चवान (मधिया) रासक त्का स्वा चोपि आहेन शहेश ॥ -वन : त्वाक्रमत्व अ जि भरगी ने इ मिथिश, नवीत का इहेल व्यक्ति। ্ৰহ্ বলে কেন ৰূপ কৰু দেখি নাই ৷ नाबीधन बरम महि लहें। नामारे।। उनेक्ष भवकार वर्ष खड़ानन् १ ज्ञाय উপमोक क्रेग बांभ व भरत ॥ याहिनीया व्यक्टम्लात किल भाउतिश्वः अक्षांत्रभ देश्व वाका जनस्य दिशिया । ্ভামব্যে আর ওরে কোন প্রয়েজন ৷ ो। प्रकृति कर्त्र महारा यसके हिस्से ।। বাদ বলে দেখিলাম একি চন্নং কার। াবা**জ সভার বুঝি এমত** বিচার ॥ িফবে পড়িয়া ভাবে তথন যে নায় । ানতে আপন্ত ই করেন উপায়া বলোমধ্যে এক কোক করিয়া বিচার ৷ শভাবিদ্যোমে বলেকরিয়া প্রচার ॥ ত। যার নিকটে রাজ। এই নিবেদন। । ক প্রশ্ন বলি তবে করহ ভাবণ।।

#### শোক।

আহ্ ১ চ প্রথমে। মূর্য্য দ্বিতীয়ন্ত সভ সদঃ। ন্রেশগ স্ত্তীয়ন্ত নেখে। মূর্খ্যে বিচাযক্ত । অসংখ্য

खश्रास काशित मृथ ने लिवित शत।
त्वां मन भूथं छाइस ना व दव छेखन ।।
नर्भ दकः ना छादिन मूर्थ जाकक्रमोत ।
भारत भारत भूथं जाका न १८८ विद्यार ।
खिनमा दाखांद भारत दा दिन छेजीन ।
वाल कर दम देखांस क्रिया शकान ।
खुकन दालन छात खानक नाकन ।
खकान क्रिया दिन खानत स्थान ।

### ভোর বিশ্বের ইতিহাস।

পথার
দক্ষিণ পেশেতে ছিল এক নৃপবর।
সিন্ধানাম পরে অভি ধর্মেতে তৎপর।
ভার প্ত রূপথান ভার্ত মনোহর।
বড় সৃপজ্যিত তার নান গুলাকর।।
তার জারা ঘুরতী সে বড়ই সুসানা।
রন্তা তিলোভনা সম রপে সেই রানা।।
তার সহ সদা সুথে বঞ্চে গুলাকর।
ভাহার বৃত্তান্ত রাজা শুন অভগের।।

নেই গ'লে এক দ্বিজ নাম সভ্যহান 1 ক্ষর্পের নানে এক তাছার লস্তান। অতিৰয় মুখ প্রাচার লে বাকাণঃ डेंडरवर मुख्य बाम क**्त मक्तम**न्। গভঃবান উপায়েতে কাল খাপন কৰে ! ्लाकाउन रेशन <mark>कात किष्टू मिन शर</mark>त ।। নামনেৰ মূৰ্য বিজ উপায় ৰঞ্জিত। াপ্ৰার হইয়া ভার হট্য ভীনিও 😥 ্কান মণ্ড বাহি হয় দুকা পোষণ । . গ্রাহার ডি করি দাল করেন কেশল। এক দিও গেই ছিজ চুরির কারণে। खन, श्रांश याद्य खाँक व्यानिक्रक बदन ११ প্রহরেক নিশি হৈল খেরি অন্ধ্রক হৈ। ৰ'ভায় ৰাস্তার ফেবে শব চৌকিদার।ঃ নিশালা ভাষে বিস সম্পী ভাষিতা। ्यम कर्डम जुन्छ बन मधा निष्ठा ॥ বেন কালে আচম্বিতে দৈব বাণী হৈন। অ্ধূদেব (সই বাক) শুনিতে পাইল ॥ লিন্ধারালার পুঞ আজ্ গুণাকর বীর ঃ ্তীয় প্রহর নিশি সগয়ে স্ধীর।। ব্যব্যর সভ্যে সংখ্য শুহুরা শ্রার ১ विवाप इंहरव देनीएक कथात्र कथात्र १६ সইয়েরে আছে এক থড়গ ধরণান। জীহত্যা করিবে তাতে রাজার সন্তান ।

শোকের কবিলে সেহ সেই অস্ত্রাদাতে। ত্যজিবেক নিজ প্রাণ তাহার পশ্চাতে।। फरद यनि *किंद्* शास्त्र य**ञ्च** नृकंशिए । ভবেত বাঁচিতে পারে তারা উভয়েতে।। हेग खीन जग्नरमय यरनटा जारिता। রাজ পুরে তবে আজ্বড় অমল।। দ্বিজ কুলোভৰ হেজু দয়া হৈল ভার। कद्रश गोंकी या गरन के जिला तिहार ।। অানিহ যে প্রজা ইনে দিলু রাজার। वाम। टेक्टक वय यपि अहे छेनकात।! প্রাণ পণ করি কার্য্য দাপিনার ছাল ঃ ঞত ভাবি চোর বিশু যিরিল চঞ্চলে।। বহু কর্মে প্রবেশিয়া সেই বু টীয়েতে ৷ পৈই অদি লয় দিজ অপেনাত সাতে।। পালঞ্জ নীয়েতে অতি নির্জ্জনতা হল। হৈদই খানে লুক'ইল দেখিতে কৌশন।। भुम्ला कि भारत कहि इहेश आतम्म । কৈ থণ্ডাতে পারে যাহা দৈবের নির্বন্ধ 🕄 क्षांत्र क्षांत्र भौरिक क्य यहार्मेन्ह । পতি প্রতি বলে রাম। বাক্। শুতি মন্দ।। गातीव मूर्धार्य अहे बाजाब नक्ता। ন্ত্ৰী হত্যা কৰিবাৰে ক্ৰোধে হৈল মন।। নিদ্রিত। হইল শেষ তাহার রমণী। कृ हो ह खर्व काल इदेश यामिनी ॥

ধীরে হীরে উঠি দেই গুণ,কর রায়। যে থানে আছিল গড়্গ সেই খানে যায় 🛚 । अ**छ ना ८१ थिया गए**न इंडेन विपश्च ভাবিতে ভাবিতে মাত্রি সুপ্রভাত এবং ৰ্ফ,ফৰে পড়িল চোৰ না দেখে উপাস। ইভিন্ধ্যে ৰাজপুণ দেখিবারে পায় 🛭 ভগনি ধরিত। ভার বান্ধি করে করে। দাখিল কৰিল সেই রাজ্যত হল্যায় ৷ দ্ষ্টি কৰি সিন্ধবাজ। দুভে আজাদেশঃ মশানে জছয় এব কটিছগদ ন। দেশত বিভাৱ দেখি এবাজ। সভার। আক্রো দেন নিদেশিষির শির চ্টিবাং গ্ শুনিয়া তথন শে কাঞ্চনখণ্ডাত্র নিবীক্ষণ করি সেই ভূবনের প্রতি। চে।রের বৃত্তান্ত শুনি দয়। উপজিল। পৰে কি হইল তাৰ পুনঃ জিজাদিল । লুবন বলেন পুনঃ শুনহ রাজন। চ্যের বি**প্র সভা মধ্যে করয়ে রে**খিন গ योष् रुख फाकि मांची करन धर्माल रू । বিনা দোষে বুক্সহত্যী কৃষে নরপতি ৪ এতেক শুনিয়া রাজ; বিশ্বর ভইল। তাহার বৃত্তান্ত ছিজে জিজ্ঞানা করিল ॥ বাজ অত্যে নিবেদন কবেন বুংক্ষণ। কুতাঞ্জলি করিয়া নিশির বিবর্ণ্ট

श्री तहा उथन जूभ विज्ञभरन भरतः।
खिं कि कि तिल मिस क्षेत्र का गारतः।।
बिन वि कि कि कि कि कि महामित कि वि ।।
विन वि कि कि कि महामित भन।
कि कि कि कि कि महामित भन।
कि कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि मिख मुक्ति ।।
कि कि कि कि कि कि मुक्ति ।।
कि कि कि कि कि मुक्ति ।।
कि कि कि कि कि कि कि मिल ।।
कि कि कि कि कि कि कि कि ।
कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि ।।
कि कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि ।
कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि कि ।।
कि कि कि कि कि ।।

#### 

#### ভূবনের বন্ধি গৃহ **ছইতে** কালিকার তব**়**

প্রার!
কার গারে বন্ধ হয়ে ভাবেন ভবন।
কোর গারে বন্ধ হয়ে করিলাগ মন।।
তথ্য বেশে বুঝিবারে রমণীর মন।
এখন হইল রাজা স্থান শ্যন।।

কি কৰি উপায় রায় ভাবে সনে মন্ ৷ মূরপ প্রকাশ করি শে আর কেমন ॥ অপেন ঘটো হা জানাইটে ১ ইল ঘন ১ এলায়াদে এডাইব বলিয়া শমন 🕦 का कि के व वा अभित्म गर्भा देश सम । যোণাদেৰে বৈধ্যে বাৰ কৰি আচন্দ গ হইয়া এহান্ত চিন্ত খতান্ত কাতার ৷ कालिकाव एवं कहा होतिन अभारत ह র্ন্ন কালী ক্পাময়ী কুনীত কাল কলে। লিয়া বিহাদ কুমতি কুত পাতকেরে।ঃ কাত্যার্নী কালহ্যা কাম্যি কালিন্দী। কাতরে করণা কর কাশালি কারিণা।। भवनान यद्धाल कीरन कविवादन करा । খরতর খল আরি ফন্ড নাহি হয়।। নিবিজা গণেশ মাতা গতি প্রথানীণী ৷ গতি দেহি জ্ঞানহীনে এবার গিন্ধাণী ও ঘন কপা ঘন সম। এঞাব ঘাতকে। भारत (পाध द्यांत्रमाध घडे। दल घति का চণ্ডিকা চামুণ্ডে চণ্ডমুণ্ড বিনাশিনী ৷ हरम हत्रव तीथ हन्हें इ जिनी १ ছাগাইতে জ্ঞাবেশ হলে ছেলে জানে। ছল পেয়ে ছাগ সম ছেদী বধে প্রাণে।। জন্ত দ্বা জগদীয়া জগত কারিণী। अभवाजी अया औरव कीवन मासिनी ॥

विष्ये शनि भग वाहे जानि भरत ! म अक्षांत प्रिचि की थि बात बाद बादता। हेन हेन हेटन खान हेकड़ हि हेकारत 1 টানটানি করে টান্সি টালে কাটিবারে॥ থেকেছি ম। ঠক হাতে ঠকাতে কাৰিনী। टेनमा व्रवार व्यक्ति स्वर वेक्ट्रानी ॥ ভরে অঙ্গ কাঁপে ডাকাইতি সম ডাকে। ভূৰিয়া মা ছোৱদায় জাকি গো তোমাকে !! ঢেয়েতে ঢাকিল যান ঢাক ঢোল বাজিল। ঢাকিতে আপন ৰূপ গৌৰৰ ঢাকিব।। তাপিতে ভারিতে তব চরণ তরণী। তরণ তরজে তত্তে শুনেচি হারিণী। থর থর কাঁপে অজ এসানে থাকিয়।। खित कव खबाकदा भाग साम पिना।। रनुक पत्न समनी मृश्य मृत्र दका ! रीति स्त्रा कत्र पूर्वा पूर्व खांग रुदा ॥ धराधन गुडा धूमा थुकार कामिनी। ধ্যানাতীতা থাতাদির আয়ুধ খারিণী॥ निस्ताद भा निस्तादिशी नो नेक्रे कांशा। निर्श्वन नरहरत निद्या निज शर्म होस।।। পাৰ্শ্বতী প্ৰমেশ্বরী প্রমা প্রসৃতী। পার কর প্রাণে বধেপাপাত্ম ভূপতি।। খাঁকরে ফেলিল আমায় সব হৈল ফাঁকী। কিকির না দেখি গোমা কিরাফিরা ডাকি !! ुका भी काम। वामा दिविशि वाक्षित्र, । কলে বিশ্বমাতা বিশেশ্ব বাৰতে । ें छदवी छन्। नी 'छीना फलब का विनी र अवन् एक वल छन छन का वाहिनी । ्चिय सङ्गीरङ्गाता सही भाउ। मश्राभी जानित्व कि उव महिसला । ্যাগ্রিদ্ধা পিক। মন মন্ত্র করিন। ्यानवाया यमः त्यान वामान वास्तिः राभ तक्षीज नामा समित आहारी ाथ अ.का भाष कर्रने दिस गरित .नाता किला कारियाक नगाउँ कर लो। যাট্ৰাই কেশ সভা, লগলা মেট্ৰেলী ট क्षाच्या श्रम वृष्यक किहा दिली। रिमालको विक्षांक वक् रिमानिमा ॥ रम्मज्ञा एकता स्थित अस्थित काली । नियोश्व महा शक्ति खडु विकर्णिकी । एउम किशनी वर्षाद्रिश् वर्षे करा। यक्ष विक्श ছोड़। नाकि करद मन।। ধারাৎদার। শাবা তব সেবক গারাব। শ্বিক্রী সুখদা মতী ভাষৰো সন্তানে। হরপ্রিয়া হৈমবতী হেমন্ত বালিক! ত হৈ হেরগেশন হেরস্থ মাত্ক।!! कि ही पिट कर कर कृष्ट्र और मन।

#### अवस्थी अवाद भीएनव (माध अस्य।।

## द्राबाउन्डिकानिकाइ एन्।

उस विभागी ! अथास करन नात (य कातान अपनिता क्षेत्र स्ति । रैकनान क्वेंटर, कांभगर्थ(\*9ए\*; हर्य हरानी यात्रि ॥ ছতীয় প্রহর্, নিশি খোরতর-सिम्। बाग्न नत्रशिक्षः **शिश्रद मधानी, बाम करण बानी,** গভার গাঁজিয়া খাড়া करव मुनाठातः सा कत विठावः ेवि बीडिय बाजन। জোমার দুহিতাঃ কৈল যাবে ভর্ঞা भाषामा नत्त मङ्गन li লমু ব্যবহারে, **পুরিয়া** ভাষারে: श्रविष्टरस युवी मन। নতুবা তোৰার, নাহিক নিভার, भाशक टेस्ला भगन ॥ এতেক বলিয়া, আখাদ কৰিয়া, ভ্ৰন ভড়েন প্ৰ'ড ৷

रें त्यांचा विश्वास, उर्थन गुरुष् कः लिका कविथा श्रेष्ठ ॥ বালা পাৰ ভয় বিদ্ৰাভাঞ্ছয় म् शास पिका जगारन १ লাতি পোহাইস, আসিয়া বনিলং वहिन्दिक (म्बर्शान ॥ জানহ গুলায়, নল জামতি হৈ, भ उत्थिति ब्रोक्त बद्धा । ्सिंह। हर्तिक, सूरत्म कृतिस् व्यात नवी कुरुशन ॥ 🚈 সি আভি বাজে, রাজা ধরি হাতে, नमहिना मि॰। हामरन १ গ্লেষ কৰিয়া, প্রিচয় দিয়া, मालांच जागांत मान ।। ", त्रश**्ख्यमः, यानम खश**नः विज्ञनं कवि बाजगाद ३ কেন মহাশয়, চাহ পরিচয়, विमाम कब्रिट शास्त्र ॥ বপিয়া আযারেও নিজ দুহিতারে विधवा क्य तालन । ত্যোর এঘশঃ, অধিক দিবস, ঘ্ৰিতে জগত জন ৷ কড়ে নব্বর, জাগাম গোচৰ, निक ७% माहि करव।

व्यवागीय ग्राप्त, कति को मरस्क পরাণ তে,জিৰ ভবে ॥ मान छात्व द्वाराः यहोत अराधः याला को बरा अकांसा শুশ্র তে জমু, বলা পরিচার, क्षा राज एकि विकेश खाउँ वाजवः यथ दिस्हतः, जरकारा कहि वाहे। स्थापि क्षेत्रता कर नारि ३६० रव महन्त्रस भारत ॥ আ্মার যে ভাত; মগ্রের ম্থ্ रित्य नाय छ ति छ य। শুন ওণ্ডা্ন জানি সরি নান্ ओड्चयनम् राष् स्ति गरिकार, अस्ति ताला करा विनध करि उथन ! ब्राष्ट्रशाक्ष्य देश्याः धारवना मनियाः ें भारेनर कि काउन ॥ ভাষে ওলাকর, কামান উত্তর, खन खन(इ क्राक्ति। বিধিন নিৰ্বন্ধ, জানিতে নিদ্ৰা सम खाउन श्रीत । जहांबाद्ध, बाह, कृष्टि नमन्द्र, खकानिका न लायाथ ?

্থিয়া সে দাস, ভীত গছাবাজ:

মুখে নাছি গানে বাক ।

প্রিষদগাণ, দাগ্যায় ভথন
গ্রাদগাণ, দাগ্যায় ভথন
গ্রাদগাণ, দাগ্যায় ভথন
গ্রাদ কাত্রে, স্থান্য হারে:

ভিতি করিল বিভাগ ।

ক্ষিত কারতা, কলিয়া ভূপানি,

কর্ম ক্রা অন্তরে !

ক্ষিত আহারে কিনি জন্মারে,

নাজল আচার কারণ।

ক্রি সামিনি, কলে সে তিলি,

নাজি ক্য এক ভিলে ।

ক্রি প্রাপার, এই ব বহার,

স্থানে স্লান মিনা।

The state of the s

भूतरमंत्र आयुःशृद्धं शृद्धः । भूति । भूति । प्राम्भ्यानम् आपादः । भूति माध्य द्विति चारत प्रामिनातः ॥ भूति माध्य द्विति चारतः प्राम्थः । भूति माध्य द्विति चारति । भूति । भूति मात्र चार्ति । । भूति । यात्र भूति विकारिश क्रथेन । भूति । स्थानिक स्थान मृत्त भूति क्रमे ।।

ৰাজ্যে জয়ডোল লক্ষ লক্ষ বাশী। ভাহার সঞ্জ দেয় আশীলক কাশী॥ प्रसानकाड़। किलाबा मगड़ापि स्वि। क्रीज थवजान बार्ख दासरा मेहित।। শত শতনানাই বাজে আর বাজে ডক্ষা ঘ্রিয়া ফিরিয়া নাচে বাজে জগৰ পা। হত শত ষোড় থাই নাহয় গণনা होतु हु व कबि वास्म कलमीब क्रीना ! ভাতিৰ ভাতাথৈ বজংয় মৃদঞ্চ আনেন্দ মাতিয়া খন বাজায় ভোড়ক ।৷ मातक मुक्त बोर्क आव वोरक वीन। খন্তনীর তাল তাহে দেয় নগখ্যাহীন।। এই এপ বাদ্যকর বাজায় মাতির।। তানপুৰ। বেছালাদি ভবলা লহ্যা।। সুমধুর ছরে গান করত্থে গায়কে। भरनद्रे आस्त्राप्त म्छा कद्राद्र नाष्ट्रिक ॥ তাহর সঞ্জদ পাধস্বাজে দের তাল। ै ভারে নহবত বাজে শুনিতে রসাল।। (इनक्रम वाना ভाएँ प्रता भून रेहल। প্রবাসি গণ সুথ দাগরে) ভাসিল।। বর্কন্য একাসনে আসিয়া বসিল। विज्ञान जानि त्रिंटर जानिय कविन !! প্ৰকে পূৰ্ণিত রাজ। ইইয়া তথ্য। ্ যতিনে যেতিক দেয় অমূল্য রতন।।

रत रही भगाडिक नाम नानी भन । मर्ख छ छ (रन राष्ट्र) अधूत रहन।! এতেক যৌক্তক দিয়া গোগেল ভূপতি ৷ কৌন্তক যৌতক দের যতেকমূবতী।। (तक वला नाजिन जोगाई इलेसाना 🗕 মপেরছটায় বর করিয়াছে আল।। শুনিয়া ভূবৰ মান পিরিত গংলাঃ নগরের নারীগণ দেখিতে আইলা৷ बाङ्गबाटमः आमितमिथं चुवरमः कथः ध्यगारवरम **छेथांवान** क जन्म कुना। অধন। হইয়া মত যুবক ন্মণী। अवस्थात बस्त पर्थ स्थान मरमानी ॥ থাহা মরি মরি একি রূপ চন্ত্রার ! किकहिन काबि किब धनानिधाउन ॥ নি**জ মনোনী**ত কবিবসিয়া বিরলে। गर्छेरह् अवना वृक्षि महावात हान।। किया नाक किया मूथ (मश्राला (नयन । নাথার চিকুরদেখে মনভুলে গেল'। কি কহিব রাপ্রীর ভাগোর সীনা নাই ৷ মনোমত পৃথিয়াছে এহেন জামাই॥ कि विष्य (पश्चि खर्ग) वर्फ निमी। কন্যার মতন বন মিলায়েছে বিধি।। भवन्भव माबीभग मिश्रा मियदा। गरसमारन मिक निक शिक निका करवा।

মবীন ঘুৰতী অতি এক ফুল লগা। थावान कविद्या यहा कालम एन्।।। শামার কপালে বিধি এই লিখে ছিল **धनव धोवन भग विकटल वहिल।**। কার শৃথান্ত্র ছেদ করিছিল অ, নি। ल (क्टे इहल यन धक्कक सार्या।। প্রসং বসন্তে সৃথি নিছেবনে প্রাণী। নিকটে থাকিতে পতি আমি বিনহিণী । क्षकत्तु स्ट्रहेल भाषा, त्य रश्च अस्तर । यादा दाजि हक्कुवन अदस्य शहर ॥ তাহাতে প্রবোধ বাক্ত সেই নানা কর। वनत कि रेम अकमुक्ति ानित वाँख तथा। হতেছে তরজ ভাবি যৌবন সাগরে। काम बद्धां कामखरी हैन हेन करन । ध्यम बास्क नाती कार जाता त्थम। ন। হয়ে প্রতি তাদের বাড়িল বিচ্ছেদ।। ध्हे बन ब्रामान हरस क्षुक यन । পরস্পর নিজ বাসে করিল। গমন ॥ আনক্ষেমাতিয়া হাণী কাম্যতা লইয়া ৷ হৰ্ষ চূৰ। লেছ পেয় নানা র 🛊 দিয়া 🛭 জামাতা কন্যায় সুখে করার ভোজনা बाक्तारिक भविशृषं स्टेल कृत्व ॥ নারীগণের অভিপ্রায় রসের প্রবন্ধ। भिष्मधन मान करक् श्रीका किया कमा।

#### ال المهاد ال

#### (माहिनीम मड्जा।

য় স্পাক চন্দ্ স্পতি পাইল শশাস্ক মুখী। राभिती बांकिनी कहेंने मुलि। मनाल विलिया मानिया के छ। वर्ष्या त्याबिनी क्यांस याजा। कानिक दबन किनिया किन। " गुक्रम देशस ल्लाच्छा दर्गा স্পন্ধ তইল ৰাণিয়া ভাষা म्बेल कविया विभास एक ॥ दर्भ भिन्ना धर्मीन द्विभीन त्या छा । সাপিনী তাপিনী নয়ুর লোভায় भीमत्त्र भिन्द्र जिन्हक इसी । যাকিল গাঁতিতে গচিত মণিয় মাঝারে শোভিত ভাহার ওল। তাহাতে দ্লিছে মতির দুল !! छात्र जल्मे दिन अनन विन्तुः हत्नु। अतु धन त्नां जिल हेनु।। नामाय विवक मिल व नायों। বিভোগ হইল মানস তারি ॥ শুভরে থাকুক সামান্য জন। स्थिति हेन एवं मूनित मन ॥

সেইনাসা তিল কুসুম বং। ভাহাতে পরায় রতন নং 11 মুকতা মণির কিরণ জ্লো। দোলয়ে নলক ভাষার তলে॥ কলেন ভূষণ আছিল যত। भद्राल क्रिया मत्नद्र म्ला युम्का थङ्ङि दः भंत कृत। यक्षारङ पोनम लोबांब मुला। বদন ঘেরিয়া শোভিল তারা ৷ চাঁদের পাশেতি যেখন তার। ।। কঠায় পৰায় চিকণ তিক। হীরাদি করয়ে যেচিক চিক।৷ मुबन मुङ्खात मध्य नद । छ यिछ केत्रिन छाहात्र भन् ॥ যতনে ধরিয়া কোনল করে। বাছৰ ভূষণ পৰায় পৰে ৷৷ তাড়াদি বাজুর ঝাপা যে দেলে। কঞ্চণ পরায় চুড়ের কোলে।। নিতম্ব উপরে করিল প্রোভা। নরের যানস চকোর কৌভা।। সুবর্ণ সোণার চন্দ্রমা হার। ইহার অধিক কব কি আৰু ॥ উক্ত যেমন কদলি তর । তাহে দিল মল ভূমান গুরু ধ

পদেঁব আল্তার শোভা না জানি ৷ সংক্ষেপে কহিনু সৰ্জ্ঞান বাণী !!

-w0@0---

### , সজাযুক্ত কৃপ বর্ণনা।

मीर्च जिल्ली। স্থাপন সাজ্হিয়ত নিজমন মজাইয়া, णहि दरह अधि हनहता। াংপের দেখি কান্তি, রমণীর হয় ভান্তি, প্রুম कि इस् वृक्ष छला ॥ ানি মনে ভাবি তাই, খু জিয়া নাহিক পাই, अनातीत कर्ण नमजूरम । ্উপনা দেয় সবেং সে শোভিবে কি গৌরবে, যার তুল্য সেই যায় ভুলে ॥ ক কৰ তাহার ভাৰে, ভাবে না বুকায় ভাৰে ভাব ভুলে ভাবে যদি ভাব। েখি অঙ্গবৰ্ণ থানি, যণি হয়ে অভিমানী, হইয়াছে দ্লোর অভাব।। ্থের তুলনা নাই, চাঁদ পম এক ঠাই, ले निवा बरहरू गरनारथाएं। শঞ্জন চকোর ভ্রান্তে, আখিছলে নাস। প্রান্তে, जुनि चाहि शंत्रा तथा लोडि ॥

**टांश नितीकण कति, गृश शर्क श**तिह*ि* চঞ্চল হইয়। রহে বনে। শুনিয়া ধনীর ধূনিঃ কোকিল ভুলিয়া হ अह्राक ভाব मन मन। **ণেখি তার কুঁচ উচ্চ, সুমের হইল** ত শৃঙ্গ ভালি পড়িল সাগরে। - ্ অগ্রভাগ দেখি গুঞ্জ, ভূলে নিজ তেজঃ পূ জন্ম নিল অর্ণ) ভিতরে 11 হেরি তার ফ্রীণ কটি, নমস্কার কোটি কেটি क्रि मि॰ इ शालाइल वरम। সুগভীর দেখি নাভি, কমল কমল ভানি ज्ल योग क्रिना कीवत्न ॥ নিতম্ব করিলে দৃষ্টি, নারছে বিধির সুঞ্চি मुक्त रुग्न मः नादित छन। কাঁপি উঠে ভূমণ্ডল, তাহা দেখি সুনিৰ্ভাত नीनाम्बर रेहना जाकापन ॥ **ময়ূর হেরিয়া তায়, মেঘ ভাবি অভিপ্রা**ফ নৃত্য করে পুচ্ছ প্রদারিয়া। स्मोनासिनी कवि छाने किन देन्द्र शदन यो नत्र क्र व्याकारम देनिया।। শে উক্ল করিয়া সৃষ্টি, সর্বল করিয়া দৃ<sup>ত্তি</sup> विधि निक मत्न बिठाविन। ক্দুলির ভক্ত ইথে, আছিল ভুলনা দিতে ाटर हिम कतिया ताथिन ॥

াহার গতি দেখিলে, গজেন্দু মরাল ভূলে,
নিজ পদ পানে নাহিচারা।
সৈতে রসিক জন, ভুলে দের হীয় মন,
বুদ্ধে ধীর স্ববৃদ্ধি হারায়।।
সঙ্গের সৌরব ছোটে, পুজে আমি ভুজ যোটে,
পোজ না পায় কোন ফুলে।
ভার কি কহিব নাট, ভোঁ ভোঁ বাবে কাটে কটি,
শুণ গুণ থা বব ভুলে।।

-

#### বাসর সহজা।

প্যার !

ানান কৌশলে হল দিবা অবদান ।
বিহতে বাসর সজা হয় ঘর্ণান ।।
মালাকার পূজা আনি যোগার জনিত।
মালাকার পূজা আনি যোগার জনিত।
মালাকার প্রাক্ত যে ফুলেতে রচিল।
মালাময় গদিকরি তদুপরি দিল।।
মালাম গদিকরি তদুপরি দিল।।
মালার আকিয়া করি রাথে থারে থর।
মালার মালারি তার ফুলের ঝালার।।
মালার আড়ানি তাহে কুরুন চটিত।
বাজন করিলে গলোকরে আমোদিত।।
ভাতার গোলাব দান তার বিদ্যানালে।।

শুসন্ধিত মল রাথে স্বর্ণ বাটাভরি। প্রস্তরে খালয় খাল কৈলা সহচরী ॥ ভূবনে আনিতে শীঘু এক সখী গেল। আসিরা রসিক রাজ পালকে বসিল।। ৰাম ভাগে বসিলেন রাজার নলন। । বসন্ত রাজাব সভা হইল ভুলনা।। আপনি ভুবন তাতে হলেন মদন। বামপাশ্বে রতি তারে যোহিণী রতন।। ভুক্ষর মুলধনু তাহে পঞ্চাণ। ভূবনের প্রানেত্রে কটাক্ষ সন্ধান।। দহ পার্ষে দথীগণ চামর চুলায়। মলয়। মাৰুত সম তল্তান হয় তার।। মনদ মনদ বায়ে বাড়ে রসের তরজ। তাহাতে ওজবে সদা সুখে মনোভূঞা। কোকিল জানিহ তাহে মোহিনীর ভাষ। চন্দুরশ্মি দেখি পদ হইল প্রকাশ ॥ বিশ্বীত বাক্য এই শুনে চনৎকার <u>।</u> ইহার বৃত্তান্ত কহি করিয়া প্রচার ।। সংৰের যামিনী হেতু পূর্ণিম পাইল। जानिया जूनन हन्द्र छेन्य इहैन ॥ তাহা সন্দর্শন করি পিরিতি বাড়িল । व्याहिनीत रूप भूष क्षयू इ हरेल।। সময় পাইয়া সার হৈয়ে আনন্দিত। ৰম্পতি নিকটে আসি স্বরায় উদিত।।

विस्ताविद्या कृत्ययः माथिटः गकत । সক্ষান পূরিল ভাহে সংঘাহন শর।। জন্জন হইল অঙ্গ হীল ছেব বাণে ৷ লজ্ঞার কারণে দৌহে ব্যাকুলিত প্রাণে !! অন্তরে গুমুরে নামি প্রকাশিতে পারে ৷ পুরুষ চঞ্চল জাতি থৈয়া হতে লাগে 🛚 : মৃদু২ ভাবে পরিশোহিনীর কর। রমণ যাত্তল ভখন করে গুণাকর 🛚 म्हि खिर्य आनिसन युड़ाश जीवन : পঞ্চ শ্রানলে অফ হতেছে দাইল। এগুলায় তব সঙ্গ সুশীতল বারি। প্লিড কর অঙ্গ দিয়া উত্তাপ নিবারী ॥ হেন বাক্য শুনি ভবে রম পূর্ণ। নারী। বচল নাথ ভূমি এত কেল অবিচারী॥ व्यानिकत्नद किया वर्ष व्यापि नाहि जा नि ॥ থ্যথ্য কাঁপে বপু শুনি তব বাণী ॥ নতন হলাম বৃতি পিরিতি বিষয়ে ৷ আমারে বলহে ইহা কেমন ক্রিয়ে। রসিক হইয়া পুর কইতা পিরিত। তোমার স্থীপৈ দেখি সব বিপরীত।। অঙ্কুরে লোভিতে ইছা কর পকু ফল। क्लिट मूमधुनीन अरफ् कोमन ॥ अञ श्विन करहे वाग्र धनी में बधान। মোরে বিপ্রীভ বল একোন বিধান !!

ভোষার নিকটে আচে মেই বিপরীত ১ দেখিয়। একার হয় হার ক্লিভা। শুলেছি প্রের গ্রীতি সূর্যার সভইটিং সেই যে কেবল বিজ্ঞান্ত্র ভারতী য় নিবাভাগে প**হ**়হা প্রস্থাত । সং स्म दर्भ अञ्चल स्म महोत्र अवस्था त्व (कोचा (नःचरह शिक्ष (क अभाषा **ख**ाराह) मिनिनी उटमहा (खान गप्त इक्षारण् ॥ লক্ষণভৱে থাকে ভালু গদান উপরে। क्यकिती बार्छ। स्तात हमा माहातरह ॥ হেরিলাগভব কাতে একি নিপরতি। শশীর উপরে অংড শ্র প্রসূতিত। যদি বল সে কেম্ম তার বিবরণ। প্রকাশ করিয়া বলি করহ অবণ ৷৷ রাজ্যশালী স্থ তব মথ শাশার ! শেভিভ পৰ দুই আঁখি তাহার উপর !! আর তব বিপ্রবৃতি কহিতে বিশাল ! পর্বতে জনায় লতা আছে চিরকলে॥ ভারি বিপরীত ইহা হয় অনুভূব। লতায় জন্মায় গিরি এক এনী হব।। इंश्रव वृञ्चा उर्वा एक पिया भने। আমিত করিলাম প্রিয়ে আজ্বরণন !৷ ষ্ণলতা সমা তুমি আমি জ্ঞান করি। ক্চ ছয় গিরি ঐতর বক্ষেপরি।।

ভাতঃ গরে বলি ভবে স্কান্ত বঙ্গিন। ভববিপ্রীক্ষড় অপুকা ক চিনি ! प्रकारती क्रमान उस आहक क्रांश्ट्य ! की एनुबर्धन हुन करहाइ कर जा स ব্ৰ যে দাইণ কান্তা ধলি প্ৰকাশিল গ এপেনি দেখত খনী ম**নে** বিচায়িনা। ्िङ জলअ मन जाल छित्र धनी : भारत गांक्स धर्म एस एस आर्थान छ। अहर छनिया भी हिष्णा । परेना बस्द्र मध्या ग्रा हेम्द अपिन ।। जात वृक्षितमं बाग्न कः मिनीव छला। বৰন চুছন কালে সাপ্তিয়া গলা ৷৷ অধ্যৱে অধ্য চাপী শ্রিকা তথন ৷ का ।। (वास्थ थारम भएक अरझद रमन ॥ निर्दित्व। উट्ठ क्याँट्स खनानि गर्माल। ন,বিনেৰ বৃতি বৃত্ত মাতিয়। মদনে।। ঠুতন রমণ রস পাইয়; যুবতী। বলৈ বিধি সূজিয়াছে ধন্য ইতিপতি। लक्षा निवारियाश्वीवः पत्रियः एथन ! यहानरन याशी शंख कदरत हु सन ॥ উভয়ে উভয় প্রৈন সাগরে ভাসিল। সুথ স্মীরণে ভাহে তরজ বাড়িল।। न रिल्लाल পढ़ि भीट हातू खूत् थान। (

এই ক্রপে বৃথ বিশি হৈল অবসান।। निकालां छ छ छ छ जूमनी भूमिन । जगद्र शरपद सङ्गिजन ६ इन ॥ ठक्कर कींस मत्त्रामुख्य दल निवादन । শ্বপতির দক্ষেরকে করয়ে বঞ্চন।। পঞ্চৰে যুকারে শিক ৰসি বৃংকাপার। আর পঞ্জিণ জাগে কোলাহল কবি ।৷ एक भाइन अचा देशन भूकी छटन। সংগ্ৰা**ল স্থান হেডু** গ্ৰেটীয় **জলে ও** দেবলেয়ে মহাবাদ্য বাজিতে লাগিলঃ গায়েকে মজল গান আরম্ভ করিল ৷৷ মহানহোৎসবে লোঁছে স্প্ৰতি হৈল অতি ৷ नुधर्भात পति भून, इंडेन युउकी ॥ ন্নারদ রজ রাগ বাড়িছে নাগিল। मित्र मित्र तमदाक गर्भन कव्न ॥ टम थ्य विगम कुल निक्त পরিমাণ। ভূবিয়া রাসক ধান নাপান সন্ধান।। যতেক গভীর গম; তত বৃদ্ধি তার। অতলস্পর্ণ দেখি ভাসিবারে চায়।। অধিক সংযুক্ত কাম ভারাছন্ন কায়ে। छे ठिए नोहिक प्रयु काशिनी महारय।।। ष्यञाव ञ्रञ्जाव तथा विजय विखय। ষভাবে সুর্বতি পতি রহে নিরম্ভর।। उक्नी वर्गनी (भारतं वाकाव नक्म।

# किष्ट्र मिन नांना भूट्थ करतन दक्षन ॥

~ Alon

### ज्यानव श्रामाल शम्य छेम्रयांश !

শন্ত্রার (

se 'en far (যোগে দেশির) ছপন ! ভ্ৰনের নাত। পিতা ক্টল পর্য ॥ रङ् लिया देशभागत भागम अहे साम । ংশ্ৰহতে পিতা মাতা ৰাপান সন্ধাৰ !! ্বানাতে ল। দেখি বুজি নাতাঠাকুরাণী। ्राकानत्त्र एक टेम्ट्स एउक्सियाटक खानी ॥ ায়া অংকিশি আছে ধরায় পতিতা। ''জ) ভ্রমী হৈয়।ছেন বুঝি শোকে পিতা ॥ এস্থানে বিলম্ব আর করা অনুচিত! ংদেশে করিং যাত্র। হই:। ছরিত।! हेरा भटन सटन बाब कविया मुख्यि १ াস করে উপাহত খীরে ধীরে ধীর।। াবগত হতন্প মন নিবেদন। াজ্যে করিবগতি হইয়াছে মন।। করণ ভাষে বাজা বলে বিনাইয়া। কান অভিনোধে যাঁবে আমান্তে ভ্যঞ্জিরা 😢 य तोष्ट्रा হও রাজা তাজ অনা মন। াপন স্থেতে প্রজা করহ পালম।

ইং। শুনি কহে রায় বালার নিকটে। হে আন্তঃ করিলা ভূপ তেন সেহ কটে ॥ অপিক দিব্দ গত তব নিকেতনে। मीधुशं ज अनुगजि कहरर धकरा।। রাজা বলে একান্ত যাইবে নিজালয়। ष्याशिन करह वाशा भरत को शलसा। এত বলি মড়। ভ।ফি গেল দণ্ডধর। এসৰ বাৰতা কহে বাণীর গোচর।। बार्ग राज कि यजिएन एक नक्षत्राज्य । কেন্দে বিদায় দিব গোলিনীরভন !! प्यामिना शाठीर क्षां कना अन्दर्जी। জাৰাত। করন্ হাতা খাপন বসতি।! না হয় হইবে মন জগতে অখ্যাতি ৷ তাহাতে আমার কিছু না হইবে ক্ষতি॥ রাজা বলে শুন রাজ্ঞি কহি তোমাপ্রতি। মিছা মায়া পৰিভ্যাগ কর ভাগ। বর্তী ॥ পৃথী মধ্যে এই নীতি আছে পূর্বাপর। ত্রী লোকের পতি হয় পরম ঈশ্বর।। यांगी शर भारता देवरन स्पीक शर शाहा নীতি শান্ত অনুসারে সকলে বুঝার।। যে পর্যান্ত অন্ত। কাদয়ে কুমারী। পিতা মাতা থাকে তার প্রতি অধিকারী।। বিবাহ হইলে আর কাছার না রয়। তে খানে পতির বাস সে খানে আগ্রয় ॥

अंड स्थिन निन। तोशी कन्। क्रिंडिक रहि! চপুন করেন অ্স্য শাশাস পৰি !! ८वट्टरक थानुका वानी वरद अव्यवसार মান্ত্ৰেড়ে যাৰি কোৰা ওলা নংল জায়া !! জার কি দেখিতে পাস ত্য চাম্প্র ১ ভানিতে দারুণ কথা বিদ্যায়ে বুক ।। मार्वः कुन्तन मिथि पनावि विभिन्ने रोजरा रेखगुष्णल गुष्टांत्र वनग ॥ বত বিধ উগহার বাইয়া তথ্য ৷ বন)বে বদনে দেয় ব বিয়া শতন !! (ध्रें काल, निक) निनि कविना यात्रन । প্রভিংকালে যাতা হেতু কার খায়েছিন। (यो कुरकह फर) यह चानि धरह थर ! लाह लाहा माल हेल रहेंडा गवंद ॥ इश्व रखी अमारिक मान पानांगन। खाश्चनत कराहेन कतिया माजन ॥ बट्ड निर्दाग्ड क्या मध्या वहेंगा। नितिका दोहकगण चाह्न माजिया।। তংপরে ভূবন আসি দাগরে বিদায়। श्वानिन बाजा बावी छे जारव शात ॥ ध्याभीव्याप करने ब्राजा मतिय महरा। ত্ৰিল ভবন বাম বিদায় পাইয়া।। যোহিনীরে লয়ে চতুদেশলের ভিতরে। लमाहिया त्यूरक् व्याध्य अवर अस्य ॥

গাঁদা লত সুপাসম সেত বস ভারে ! উত্যে উভয় গনঃ প্রার্থে স্ফুডে !! गर्भागत करी शुर्छ कांत्र आह्दाइन। হরাজে। গ্লন বৈশ্ ভখন ভূবন।। কাঞ্চনগশু ভগতি কন,ার মাহণ্য। কিছু দুর দৃষ্টি করি কানেকার্ডার য় रम्भार व्योधन वाहम भगन करिया। শুর্বানত ছীয় লার্য, করিতে লাগিল 🛚 কত দেশ কত গ্রান করিয়া প্রকাশ ট চলিল ভ্ৰম নিজ সলি কৰি নাত। मक्ष माम ग्र देशन भागव महता। नाष्ट्रिन शहरूद महत्र १८० भारतान ॥ শুভে ডালে ইয়া আছে। গিলেন ভগন। व्याचीत व्यावस्य व्याध्य कहर भगम ॥ आह्मिन नुःथिछ १ १३ ग्रहः थिछ। यस्न । आवाह अन्। म एक्ट (में विषय हितान ॥ चांकांगांव अन् भृत वता वरित । बाङ्गात मुद्राद्य प्यानि छेप्य क्हेन॥ ছারার নিকটে দিল নিজপরিচয়। আনন্দে ইইৱা নত হাজ অগ্র সর।। দ্যত্তে মংগ্ৰে করি চলিল পশাতে। সন্মধে দাঁড়ায় গিয়া দোঁহে থাড় হাতে।। রারদৃষ্টি হ্বামার নোয়াইয়া শির। ভবন আগত বাৰ্ত্ৰ। জানাইল বীর 11

थोताकर गुर्थ गानी छनि नादर्धत । उथिति के जिल अपन मध ब्रवांकर ।। ভূফাল্য মূল **যেন পাইল জীবন** । मुक्त (पञ्चाम भूमः भाष्ट्र की नगा। ल केल इड्सा बाजी आह एम विजन। बारोद मधीरल धाना अक्तव घरवा त পুথ অগিমন বাত জান্যে রাজন 1 (घ ३ १ व्हेन) द (छ्डो पः वस दशका 🔃 थाति गाउँ है हिराल देगा श्राह्म को । अहम द्यांपर्य हम स्मा बक्का गत्न ज्ञान भूत यागिष्ट्र समस्य চর থানি অথে কাত্ত। করালে অন্ধা। তেখার আমার বাণী শুভা দুউ বালে : विराह कतिया भूधा कानािष्ठ २३८७ ॥ ইহাকহি পাত্র নিনে ছাকিয়া ছুপতি ! মঙ্গল আচার হেজু দিলেন আরতি। খাজাগাত্র বিধি মত কবে খায়োজন: সারি সারি রক্তাভক করিল বোপণ ।: ভূণ কুয়ে বারি পূর্ণ রাখে নারি মারি। **इन्मरनंत्र क्रिपे नियो एक्टल भृति गादि ॥** क्षाति शास्त्र विकाश कदब दबनधुनि । মঞ্জ বাজন। খাজে নানা রস গুনি।। প্র আনিবারে রাজা হৈলা অগ্র নর। नगर नियंत्रि न्य धाइका गहर ॥

মহামে ভ্ৰন রায় হন্তী পুঠ হৈতে। নি দু কৃতে পদবুজে আইন মবিতে ॥ পিতার অগ্রেভে আসি নোয় ইয়া শির ৷ हत्रन रन्मन देकन शहरम मुन्ति ॥ मग्राय कविल राजः। भत्र ने ने निर्मातः । বহু আশীৰ্ষ্কাদ কৈল হত্য দিয়া শিৱে॥ क्रांच क्रांच महायन क्रिया मकरन। श्रादर करिन जोनि जन्मर गन्नाम ॥ शहरा आहेल हानी जान हामानन হতেনে শ্তার পদ করেন কলন।। विधि भटि कदा ना व सक्ता एदन ३ ত্বশুনি শশ্বনি করে এয়োগণ।। भूखे वर्द्र सर्थि अभी कोनस्म स्माहित । क्लाल केवि উভয়ের यसन हु शिन ॥ यत कन्। वत्र कित्रा निनाशितः। ভোজন করায় দেঁছেে নানা উপহারে 🛚 । মহামহোৎসব হৈল রাজ নিকেতনে। বহুদান করে রাজা হরবিত মনে।। मक्न वाजन। नाना वाजिए गांशिन। নগরের নারীগণ দেখিতে আইল।। যৌতুকের জব্য সব ষত্নে থরে ধরে। রাখাইল স্থানে স্থানে ভাণ্ডার ভিতরে॥ बाका व्यक्ति श्रकावर्ग नाम नामीगन। अकालत बार्नामध्य इहेल इत्र ॥

र्यान व्याष्ट्रारन काल भूति छ इहेता। निज निज साम गान गान कविला।

一

## उमाहिनीव मि**ए**उ जुरान्य भिन्न ।

रीयं विश्वनी एक । নিড: নিতা মহাসুখে, এতিবৰ সংখ্যাভূকে, ्यर्गातं बहुषः छत्न। मछ ११व कामनात, मान रमर्ज, इ. काम भारत स्थम रेपरचंत्र वर्षेत ! মখন বেগোর প্রতি, মাস দিলা ভগবতী, क्राकार बदमी जिन्द्रा श्रीनेष्ठा, स्मर्थ काहिसी, जाब द्याया जेवानिसी, कान्ति भिरद कहा भारत करता চিন্ত মহল ভূগে গ্রেণতি দিয়া, या किल दरल खगा कि इत आगाव। শাপ দিলা পতিপ্রতি, জি বপে বাঁচিতে দতী, क्त्र श्रामा हेश्र विष्या ।। काथाय याहेर आमि: क्यान शाहेर शामी, किना कार्य। आद अकी वरन। এবু. ধ করি • মোচন, তৎপদ করি পারণ,

প্ৰাণ ত্যান্তি পৰিয়া জীবনে।।

Ħ.

এতেক শুনিয়া বানী, আমাসিয়, ভবর্ণা बहान खन डिवामिनी रेठ : नाहि कर व किस्ताय, नव नि कर्णा (नाय) পতি গ'বে বিজু দিন বৈ।। লৌৱত কাৰতে পিয়েত্ৰ তপ্তিনী বেশ হৈয় किङ्गान कत्र (क्ला) উপায় কৰিছ আনি তথায় পাইবে হানী। हरण नाहि यह अना महा। अहे बन देवन बानी, क्षान करण है ५ दिनी। म[सूमिनी करें। जयन। लोइक कानटम विस्ता शब दुधीद निर्मायाः रहिर्हान शिंखन कांद्रम ॥ এখানে শুনহ পারে কাতক দিবস পারে, माल प्राप्त का विद्याल दाश्वा ছবিণ শীক্ষি জমেটে ঘাইৰ আছে অৱবেদ পিত্ আঞ্জে নাগরে বিদায়। रुनि मृतशोद वाशी- आखा पित्रा न्भ का मी-मृत वर्ग न। कब शगन। পিতু অবুমতি পায়, হয় আনাইয়া বার समाज कविन भारत है।। প্ৰতিক গণ সঙ্গে; লক্ষা প্ৰম বজে: চলিলেন अप्रेरी सिंउरत । कानन विविध्य विष्यः, जकरण करस् अवन्त ্যুতে যুতে এগধার ভরে।।

শ্বিক অন্তর্ভাষ, ধ্বত এক পোথ কার। মনোল্ডে পাইল পিরিভা

সংগ্রা পদ্ধান গতি, চুটা, শ্রন্থ নহাস্তির নুগ্রায় অতি বিশ্বীর ৪

কুৰ্ম প্ৰোণ কন্নপুনি পাৰ সংগ্ৰহ

কাভিত্রত করে ভাষ্ট। দীয়েরে বৃক্তনায়। ব্যাহর হর্মন শিকালাধ্য

মজিগণ ট্রিল মাসত কে কেমো বাঁহল তাত্তি আহি পাত্রকাত বা উল্লেখ্য

अगा कतिया दश्यः साराधिया स धूबरा, भन्नदिया स्थल निकासमा।

ভক্তভূত হয়ে আতি রুজে এনে রুস্প<sup>তি</sup>। এল **অন্নে**ষ্ণ করি বর্নে।

्काशाः । ना পেয়ে रहि, न विपादि अनिवाहि। कतिष्ठिम (कवल रम्याः ॥

যুদ্ধিতে ঘূরিতে পরে, দূর হৈতে লক্ষ করে; নেইপত্র কুদীব নির্মাণ।

আশ্রর ভাবিয়া পাষ, ব্যক্ত হরে ব্রস্তেধ্য়। জলপাবো করি অনুমান।।

কুটীরে দেখেন হিসি, আছে এক স্কপ্সী, ফলাহারী হয়ে তপঞ্চিনী।

উতিহনে বলে হাম, প্রাণ মার পিপাসায়। জন দিয়া প্রাণ ধনী।। উঠিয়াম। শাঘ্কটি, খণের গোলাস ছবি;
লুবাসিত বাবি দিল রায়ে।
লুলপান কবি নায়। দুর কৈল পিপানায়,
বিচার করেন মনে; এনারী একাকী বনে,
ভগান্তনী বেশে করে বাস।
বিগার দিল জলা, বুবিতে না পারি ছল্
কিলে পাব ইদার প্রকাশা।
প্রতেক ভাবিয়া, পীয়, মানতে কবিল ছিবল
প্রিচয় লৈবার কারণ।
প্রথা এক করি মৃক্তি, নামীপ্রতি কৈলা উড়িল

---

## (भाक।

িকিমাকাজ্য। মতৌকুর্য্যাৎ যোগীভূত্বাবপুং প্রিয়াৎ। একাকিনী মহারণ্যে বস্তিংকুরু কামিনি।।

चन्यार्थः।

কি বাস্থা মনে করি দাখী বেশগরি। একাকী কাননে বাদ কর হে সুন্দরি।। শুনিয়া তথন প্রশ্ন ভুবনের প্রতি। উত্তর কৰিছে তার ছাদিয়া যুবতী।।

## E. .

মমভাগ্য, ফ্লাণ দৰ্মেণ নচক্ৰা ন বৈত্তপ। নিশ্বিতঃ মহারণো ভে হস্ত ভার দ্বিন্থ ।! অসঃখ্যাঃ

আপেন ভাগে। ই কলে তপ্ৰিনী ভৈয়। ইপিব লাখনা কৰি অৱণেও বিদিয়। ।।
ক্রান্তক উত্তর শুনি রাজাই নন্দন ।
পুনর্বার এই শো্ড বলেন ভগন ।।
শোক।

বনে তথ্**বি**নী যান্ত্ৰী ভদ্ৰান্ত ভোগ,পাত্ৰকং ! কিনাশৰ্ম্য তৎসমীপে কথাপাত্ৰ ব্যবস্থিতং ॥ অস্যাৰ্ম্য !

ভোনার নিকটে দেখি একি চনংকাঃ।
ভপত্তিনী বেশে গাক অবনা নাঝার।।
রাজ ভোগ সম তুলা তব ব্যবহার।
জলপান হেতুপাত্র আছায়ে সোণার।।
শ্রবণ করিয়া ইষং হাসি উন্নাদিনী।
ভুবনের প্রতিবলে উত্তর কাহিনী।।

•উত্ত₹ !

হেপাছে । ইংশ্বামি অন্মিন স্বৰ্গ ঘটেৰ । তবাদুক্টে দদৌ ধাতা পাত্ৰশ্ব হেম নিৰ্মিত: ।। অস্যাৰ্থঃ ।

मानान कावान नाइ अहे पर्न भाव ।

তবাদ্টে গ্রাকাশ নিস্টেন। অত ।। বৃত্তিবাদ হবে ভূমি রাজ কুলোছের। একুবা এবর্গ সাত্র আনি কোথা পার।:
প্রার।

क्षित्री घुटन गरन नक्ष्में श्रष्टेश । द्रविद्या प्रमीद क्षण खनरक्ष (यः। शिक्ष । । • ভণন বুৰিল বনী সাফলা হে ন্য ১ পার যাহউক আলে দট্ পরিচয় ॥ इंश ভावि राम बांश श्रीकरत वाली : কেন্ত্রনি এবনে দাস কর এক।কিনী।। धिमानियो वादा स्थम भूष्य मूख्य। নম প্রিচয়ে তব কোন প্রয়োজন ॥ আও যুক্ত হরে আইলে আনত্ত গোচর। ৰথ। শক্তি তব ত্ৰল কৰিনু অন্তর ।। একণে আমাৰ কাছে কেন দীড়াহ্যা। मश्राधानम्य कत्र महत्र स्हेशा ॥ যুবরাজ খলে ধনী একি বিপর্বাত। अपन इहेटन खित्य किएम जाठिश्रिक।। मद्रम खलारव कथा कहि छित्म जाला। असम क छिन इरल किया जन्तराता। ভাবেতে বৃঝিল ধনী এনি/মন পতি। এত দিনে মিলাইরা দিলা ভগবতী।। ইহা ভাবি পরিহাস ছলে কহে ভাষ। बम्भी करिन जूनि ज्ञानक्र नियान ॥ 🕟

পুরুষ সর্গ শড় হাছ। আ, বি জ্বি। मन्द्रस लाहिया लाज मका किमी !! (म द २ उँक क्षारा न। हि अहा जन। আপনি লাপন স্বানে করছ গুলা য় ্দ্রিয়া ভোষারে ভটো কঁ,পিভেচে প্রাণ ৷ লেকের সৰুষা ভাবে লাভছ সঞ্জান।। ইঞ্জিতে ব্ৰিতে পাৰে হসিক সুজন ৷ অভিশাস বুঝিলেন গানিনীর মন্দ্ ে কেম্ন প্রী তব দেখিছে স্ভাব। ১, ৪ হয়ে চেয়ে বজ লগতি ব্কি ভাবেয় अभिक सम्बक्तिकोछि अध्यात्र । रङागांत मन्स कांग्र मा (मधि वस्टम अ कार्याज्य लगाएका क्रीवा विवास निकारत योगियोध तथर जाविया । उन्हें मुश्ते था - दिश मा करा छेपरा। শ নান্তরে এক দিন কলাপূর্ণ হয়।। व्याद रमण वरम वाम करव कूतकिनी। लांत कोंचि इतिया नासक हम्माननी । তিল ফুলের প্রাণা হরেছ নাসায়। মদনে কেলেছ কেনে বুবি অভিপ্ৰায় :: ্লপদ্ হরিয়াছ ছুবর উপর । ্ফিডে করেছ চুরি সন্মোহন শর।। মাথিয়াছ বিশ্বকান্তি হনি ওঠোণৰি। <sup>क्</sup>नारन दिर्**षष्ट्र कुन्न** कलिएश इति !!

य- खित्र काय हति क्रिया गुम्स्दी । भाभन महताड विशिष्ट निश्व कवि॥ स्थारन विकासी त्याल गव समस्द । শাস্ত্র লুটি তাহ্ দেখে**ত অ**ধরে। চ গিথিনীর গর্জা কিছু আছিল কর্ণেতে। তাহাও করেছ চুরি আপন করেছে ॥ • কলিঞ্জ ভ্ৰমর ভার। বনে বাদ করে। कि लोच करब्राइ धनी त्यायात लाठाव । সুঝিতে নাপানি তব একি আচরণ। कुरुष्म श्रवह जोत्मत व्यक्त किन्न । হেন চোর আ্বি নাফি দেখি কোন কালে। ওল্ল কার্যানের কপ কেননে হরিলে । (क्लेक्बर गर इदिशाह कवेउल । नियन्षेक कवि जूब्ह दश्यह मृशोदन ॥ ठन्मक कलित्र माना अकुटल इरत्र । মুকুতার জ্যোতিঃ হরি নথরে রেখছ।। আৰু তব প্ৰক্ৰম দেখে লাগে ভয় ৷ প্ৰড় তোমার কাছে মানে পরাজয় ॥ সুমেরর এক শৃক্ষ, ভেক্ষেছিল বলে। তাহা না রাখিতে পারি ফেলে নিন্ধু জলে ৷ ज्बिधनी मुहे नृष्य लाः। ∤निष्य वरता ।। রাথিয়াছ বিকোপরি অতি অবহেলে॥ ভাছাতে করেছ চুরি গুঞ্জের শোভন। व्हिति मूनित मन जाशास्त्र हरना।।

निक् विविध विकास कि देव देवत १ । जिएक समस्याप नर्बर्शकान । महिल्ड करर्फ हिंदिया। महालक्ष ावरों भरहर धनी विचय छै। या नुसाद म। भारति श्रिपत कामात कि कामा ত্ৰণ ক্লি কহিবণৰ পাইবড লাজ। भाउरक खाँभरस आहे बरवी जिएलका । क्ति । ल पश्चल कोश्चाकत्वम इत्रम् ॥ व अवस्थातिक मान्न केन्द्र कार्य । গ্ৰন্থ সর্বান্ত প্রতি ভর্ন করেছ ।। भाषक होते के जा है व्यक्त का जार ह मक्तिक है है। जा मण चित्र के निर्देश हैं। does not the matter and a f 在 化二二次 如此 如此 八十八日 भार भारत नाम प्राप्त माना स्थान हर सम्मा 化物理 医自己性性 医骨髓 医二甲酚 有有对 有有种人是 人名德里 人名西班牙 मित्र वास्तिहरू कर्ण कुला के किया पु ्रिवर गृक्त स्थान । १००० वर्षा । विस्ति खदम १ 🙀 🖰 अस्ति। उद्धमित वटन १ । । । । । । व क उपित्म शाल करण अनेरक निर्वास किति देसन (मण्ड के किल्का देवाकी) कई

कर्मान अर्थ शिया एक शिक्ष रिका এছানেতে অংবলাছি কোন প্রয়োজন। এস ভাৰে যাৰ্থ কৰি, নিজ নিকেতন ৷ পহিতে প্ট্যা সভী পুল্লা হইল 1 উভগে উভ্ন পেন স্থাবে ভাসিল । দ প্রতি একুম প্রেষ কৌডক, ংডিশ। धानमृज् कोल नृतिक किलाफ चारेकन । लक्षान भरित दोन छेडर पाकरण 1 আনুকা হটল দেঁচে বামের শংরতে ॥ ধৈৱন্ত মাত্ৰে মাজায় নক্ষম। यान भिर्द्ध भीष कति तन श्रानिक्रम ॥ धाःधामनो हार छोट बद्य विवृश्यी। क्लानाव निकटे नव व्यविष्ठांव मिति श হন ভূনি বসরাজ গুণের ভাজন ৷ रियोगना इएए जारम हाइ जानिकन ॥ मस्या जनम क्षेत्रारक ल्युनक्षित । এখন করিতে হবে বিবাহ আচার ॥ বাধহ উভয় ধর্ম আছে মেই নীত। পরেতে করহ কর্ম যে হয় উচিত ॥ শুনিয়া রসিক রাজ বিচারিল চিন্তে। शक्त विवाह देवन मानी भविवाछ।। नानाम दयन दम श्रमाङ कविल । महेशा तमनी बाग वांगीरक कामिन ॥

শুনিয়া সকলে হৈল অতি মনকারি ৷৷ মোহিলীর কাছে। গয়া বিনয় করিয়া। উমাবিনী লয়ে হাতে দিল সমর্পিরা।। उत्रापिनी कल ए थि याहिनी मुम्बती। उथितिन सर्भाष्य मृथ मधु छिति।। উভয়ে উভয় কপ নিরীকণ করি । চমৎকারে থাকে গর্ম আপনা পাসরি 🖟 উভয় হইল প্রতি সম একাকার ৷ একতে বিভাম কার্য্য একতে আহার 🕸 এছই যুগতী লয়ে রাজার ক্রুত্র ব 'अक् तर (ध्रम् नस्प करतम वस्पन मकेट्रे मिन गरित रितिरत मरा कोल । ভুবনেৰে রাজ্য দিল্লা পৰিত্যাগী কাজ্য খন্ত্রী সংহতি ভির্মে করিয়া ভ্রমণ। लाकास्टर सर्भ वार्म कविना शयन ॥ পিতৃ কাৰ্য্য করি রায় কৈল বহু দান। যাগ হোম ধৰ্মাচাৰ নাহি পৰিয়াণ। রামরাজা **সম প্রজা করেন পালন** 1 সর্বাসুথে প্রজা কাল করয়ে যাপন । নিত্য মহোৎসৰ হয় ৰাজাৰ ভৰলে। নৃত্য গীত বাদ্য **দাশা সক্লাচৰ**ণে ॥ একপে ভুবন রাজা সুখে লাজ্য করে । 👍 क्र नानी शक शूक् अनिना शहन है। त्यां किमीन शर्ड लेखा करे क्रमधान में